शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास
नई दिल्ली

राष्ट्रीय कार्यशाला बड़वानी

४ दिसम्बर, २०२५ विक्रम संवत २०८२, मार्गशीर्ष, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा

शोध ज्ञान कणिका

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परम्परा का चिन्तन

E-ISSN No. 2456-6713
ISSN No. 3048-6459
Impact Factor: 5.924

-: मुख्य वक्ता :-

डॉ. अतुल कोठारी

राष्ट्रीय सचिव,

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली

-: विशेष वक्ता :-

डॉ. रवीन्द्र कान्हेरे

राष्ट्रीय अध्यक्ष

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

समन्वयक

श्री ओम जी शर्मा

क्षेत्र संयोजक

शि.सं.उ.न्यास

नई दिल्ली

संरक्षक

श्री रामसागर मिश्र

प्रांत संयोजक

शि.सं.उ.न्यास

मालवा प्रांत

मुख्य संरक्षक

डॉ. मोहनलाल कोरी

कुलगुरु,

क्रांतिसूर्य टांटिया भील

विश्वविद्यालय, खरगोन

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली

राष्ट्रीय कार्यशाला बड़वानी

४ दिसम्बर, २०२५ विक्रम संवत २०८२, मार्गशीर्ष, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा

शोध ज्ञान कणिका

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परम्परा का चिन्तन

जिला संयोजक

डॉ. भूपेन्द्र भार्गव

शि.सं.उ.न्यास जिला

बडवानी

कार्यशाला संयोजक

डॉ. जयराम बघेल

सहा.प्राध्यापक प्रधानमंत्री

उत्कृष्ट महाविद्यालय

बड़वानी

मुख्य संपादक

डॉ. दिनेश पाटीदार

सहायक प्राध्यापक,

शासकीय आदर्श महाविद्यालय,

बडवानी

संपादक मंडल

सह संपादक

डॉ. अनिल पाटीदार

सहायक प्राध्यापक,

शासकीय आदर्श

महाविद्यालय, बडवानी

तकनीकी सहयोग

प्रो. सीमा नाईक

सहायक प्राध्यापक

शासकीय कन्या महाविद्यालय, बडवानी

डॉ. प्रियंका देवड़ा

सहायक प्राध्यापक

शासकीय कन्या महाविद्यालय, बडवानी

इन्दर सिंह परमार

मंत्री

उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष

मध्यप्रदेश शासन

जावक क्रमांक: ३१३४/मंत्री/उ.शि.त.शि. एवं आ./२०२५

दिनांक: २७-११-२०२५

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष सप्तमी, वि.स. २०८२

/ / संदेश / /

अत्यंत हर्ष का विषय है कि **शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली, मालवा प्रान्त** द्वारा 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परम्परा का चिंतन' विषय पर दिनांक ०४ दिसम्बर, २०२५ को एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन कर, प्राप्त शोध पत्रों का प्रकाशन **शोध ज्ञान कणिका नाम** से पत्रिका के रूप में किया जा रहा है ।

पत्रिका में विद्वानों, शोधार्थियों एवं विषय-विशेषज्ञों द्वारा अपने उद्बोधन एवं आलेखों में 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परम्परा का चिंतन' विषय का समावेश रहेगा, जिससे जन-सामान्य परम्परा से अवगत हो सकेगा ।

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास द्वारा **राष्ट्रीय कार्यशाला** के सफल आयोजन व प्रकाशित की जा रही **शोध ज्ञान कणिका** नामक पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(इन्दर सिंह परमार)

कार्यालय : कक्ष क्रमांक ई-206, वल्लभ भवन-III, मंत्रालय, भोपाल, दूरभाष : 0755-2708685

निवास : बी-4, श्यामला हिल्स, भोपाल, दूरभाष (नि.) : 0755-2446227, 2471875

ई-मेल आईडी : Minister.hed@mp.gov.in

डॉ. (श्रीमती) पंकज मित्तल
(पूर्व कुलपति, बीपीएस महिला विश्वविद्यालय, हरियाणा)
महासचिव

Dr. (Mrs.) Pankaj Mittal
(Former Vice Chancellor, BPS Women University, Haryana)
Secretary General

भारतीय विश्वविद्यालय संघ
ए०आई०यू० हाउस, 16, कॉमरेड इंद्रजीत गुप्ता मार्ग
(कोटला मार्ग), नई दिल्ली–110 002

Association of Indian Universities
AIU House, 16, Comrade Indrajit Gupta Marg (Kotla Marg),
New Delhi-110 002

ए आई यू/एस जी /2025
नवंबर 27, 2025

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास द्वारा आयोजित "राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पठन–पाठन में भारतीय ज्ञान परंपरा का संवर्धन" विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला में प्राप्त शोध पत्रों का संकलन **'शोध ज्ञान कणिका'** के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। यह न केवल एक विद्वत्सम्मत पहल है, बल्कि भारतीय शिक्षा–दर्शन, अनुसंधान परंपरा और ज्ञान-संस्कृति को नए आयाम प्रदान करने वाला महत्वपूर्ण प्रयास भी है।

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध परंपराओं में से एक रही है। वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों, पुराणों, महाकाव्यों, शास्त्रों तथा लोक-ज्ञान में निहित शिक्षा-सामग्री न केवल आध्यात्मिक और दार्शनिक समृद्धि का आधार है, बल्कि समाज, संस्कृति और व्यवहारिक जीवन की वैज्ञानिकता को भी स्पष्ट रूप से स्थापित करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा की मुख्यधारा में प्रतिष्ठित करने का जो मार्ग प्रशस्त किया है, वह हमारे लिए सांस्कृतिक आत्मविश्वास और शैक्षिक पुनर्जागरण का अद्भुत अवसर प्रदान करता है।

इस संदर्भ में "शोध ज्ञान कणिका" जैसे प्रकाशन अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि यह शोधार्थियों और शिक्षकों को भारतीय दृष्टि से ज्ञान-विमर्श करने का सशक्त मंच प्रदान करते हैं। मुझे हर्ष है कि इस संकलन में ऐसे शोध कार्य शामिल किए जा रहे हैं जो भारतीय ज्ञान परंपरा की गहराई, व्यापकता और समकालीन प्रासंगिकता को रेखांकित करते हैं। यह पत्रिका न केवल शिक्षण–अध्ययन के क्षेत्र में नवीनता और मौलिकता को प्रोत्साहित करेगी, बल्कि शिक्षा की जड़ों से पुनः जुड़ने और राष्ट्र की बौद्धिक विरासत को पुनर्जीवित करने का मार्ग भी प्रशस्त करेगी।

मैं इस अवसर पर उन सभी शोधकर्ताओं, लेखकों, शिक्षाविदों, आयोजकों और संपादकों की सराहना करती हूँ, जिन्होंने इस महत्वपूर्ण कार्य को सफलतापूर्वक संपादित करने में अपना मूल्यवान योगदान दिया है। ज्ञान के प्रसार, शोध के प्रोत्साहन और भारतीय शिक्षा प्रणाली के उत्थान में आपका यह प्रयास निश्चित रूप से एक सशक्त कदम सिद्ध होगा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि **'शोध ज्ञान कणिका'** आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मानक संदर्भ सामग्री के रूप में प्रतिष्ठित होगी और भारतीय ज्ञान परंपरा के वैश्विक प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

मैं इस सार्थक और श्रेष्ठ पहल के लिए समस्त आयोजकों और सहयोगियों को हृदय से बधाई देती हूँ तथा पत्रिका उत्तरोत्तर सफलता की मंगलकामना करती हूँ।

सादर शुभकामनाओं सहित,

पंकज मित्तल

(डॉ. पंकज मित्तल)
राष्ट्रीय अध्यक्षा
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास
नई दिल्ली

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास
Shiksha Sanskriti Utthan Nyas
अध्यक्षा : डॉ. (श्रीमती) पंकज मित्तल सचिव : अतुल कोठारी
देश को बदलना है, तो शिक्षा को बदलो

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत आनन्द का विषय है कि मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र के बड़वानी में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास एवं विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में "राष्ट्रीय शिक्षा नीति : पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 एक प्रकार से विकसित भारत की पृष्ठभूमि है। किसी भी देश के विकास में शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति की अनेक विशेषता है परंतु इसमें सबसे महत्वपूर्ण बात है शिक्षा के हर स्तर पर भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेश की अनुशंसा की है। भारतीय ज्ञान परंपरा न केवल भारत के लिए परंतु समग्र विश्व के लिए आवश्यक है। क्योंकि आज विश्व चौराहे पर खड़ा है, आतंकवाद, पर्यावरण का संकट, भौतिकता की दौड़ में नैतिक व मानवीय मूल्यों का ह्रास एवं अशांति तथा तनाव से ग्रस्त वैश्विक मानव समुदाय आदि.। इन सबको समाधान का मार्ग भारतीय ज्ञान परंपरा से मिल सकता है। इसलिए समग्र विश्व भारतीय ज्ञान परंपरा के लिए लालायित है, परंतु प्रश्न यह है कि पिछले लगभग पौने दो सौ वर्षों की हमारी शिक्षा व्यवस्था के कारण जिनका विश्व को भारतीय ज्ञान परंपरा उपलब्ध कराने का दायित्व है वह हमारे देश के अधिकतर विद्वान एवं आचार्य ही इस ज्ञान परंपरा से अनभिज्ञ है। ऐसे समय में इस कार्यशाला का आयोजन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

आशा करता हूं कि बड़वानी में आयोजित इस राष्ट्रीय कार्यशाला के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन हेतु भारतीय ज्ञान परंपरा के विद्वानों को एक मंच उपलब्ध कराने के साथ-साथ शिक्षा क्षेत्र से प्रत्यक्ष जुड़े लोगों में इस विषय की जागरूकता लाकर इसके सुचारू क्रियान्वयन की दिशा में एक महत्वपूर्ण चरण सिद्ध होगा।

इस राष्ट्रीय कार्यशाला अपने उद्देश्यों में पूर्णरूप से सफल एवं सार्थक हो, इस हेतु हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं तथा इसके आयोजन में लगे हुए सभी विद्वानों, कार्यकर्ताओं का हार्दिक अभिनन्दन एवं साधुवाद करता हूं।

भवदीय

(डॉ. अतुल कोठारी)
राष्ट्रीय सचिव

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, सरस्वती बाल मंदिर, जी ब्लॉक, नारायणा विहार, नई दिल्ली -110028 दूरभाषः
Shiksha Sanskriti Utthan Nyas, Saraswati Bal Mandir, G Block, Narayana Vihar, New Delhi-110028 011-25898023
ई-मेल atulssun@gmail.com वेबसाइटः www.bharatiyashiksha.org @ShikshaSanskriti YouTube शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास

डा. रवीन्द्र कान्हेरे

अध्यक्ष

प्रवेश एवं शुल्क विनियामक समिति

(म.प्र. शासन की संवैधानिक संस्था)

फोन : 0755.2660463
मो. : 9406632151
ई-मेल : rkanhere56@gmail.com
: afrcmp@gmail.com
कार्यालय : सचिवालय, प्रवेश एवं शुल्क विनियामक समिति
टैगोर छात्रावास, श्यामला हिल्स,
भोपाल-462002

संदर्भ क्र. –

दिनांक 27.11.25

//शुभकामना संदेश//

यह जानकार प्रसन्नता हुई कि शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परंपरा का चिन्तन विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। कार्यशाला में प्रस्तुत शोध पत्रों को शोध ज्ञान कणिका पत्रिका में प्रकाशन अत्यंत महत्वपूर्ण है। विश्वास है कि कार्यशाला में प्रस्तुत व प्रकाशित शोध पत्रों के द्वारा विद्यालयीन, महाविद्यालयीन शिक्षा पाठ्यक्रम व पुस्तकों में भारतीय ज्ञान परंपरा को सम्मिलित करने हेतु अत्यधिक सहयोग प्राप्त होगा।

कार्यशाला के सफल आयोजन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डॉ. रवीन्द्र कान्हेरे)

क्रांतिसूर्य टंट्या भील विश्वविद्यालय खरगोन (म.प्र.)

KRANTISURYA TANTYA BHIL UNIVERSITY, KHARGONE (M.P.)

(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम, 1956 की धारा 2(f) के अंतर्गत पंजीकृत)

Prof. Mohan Lal Kori
Vice Chancellor

प्रो. मोहन लाल कोरी
कुलगुरू

// शुभकामना संदेश //

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि दिनांक 4 दिसंबर 2025 को बड़वानी में आयोजित एकदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पाठ्यक्रम में भारतीय चिंतन विषय पर विद्वतापूर्वक विमर्श आयोजित किया जा रहा है तथा इस अवसर पर शोध पत्रिका "शोध जान कनिका का प्रकाशन भी हो रहा है। यह पहल हमारे शैक्षिक जगत को भारतीय जान परंपरा की मूल चेतना से जोड़ने तथा ज्ञान-विज्ञान की स्वदेशी दृष्टि को पुनर्स्थापित करने की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीयता, मानवता और विश्व-कल्याण के समन्वय पर आधारित है। इसमें निहित भारतीय चिंतन केवल शिक्षण अधिगम तक सीमित न होकर जीवन मूल्य, सांस्कृतिक आत्मबोध और राष्ट्रनिर्माण के संकल्प के साथ शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। मुझे विश्वास है कि यह कार्यशाला इस विषय पर गहन चिंतन-मंथन का माध्यम बनेगी तथा प्रतिभागी शिक्षाविद, शोधार्थी एवं विद्यार्थी नई दृष्टि, नवीन विचार और ठोस सुझाव प्रस्तुत करेंगे।

शोध जान कनिका पत्रिका के प्रकाशन के लिए मैं आयोजन से जुड़े सभी संकल्पनशील सहयोगियों, विद्वानों तथा सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि यह पत्रिका ज्ञान-विस्तार व शोध संस्कृति को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाए।

अंत में, अविष्य के शैक्षिक परिदृश्य में भारतीय चिंतन की निर्णायक भूमिका सुनिश्चित करने हेतु मैं इस कार्यशाला के सफल आयोजन की मंगलकामना करता हूँ।

कार्यक्रम की पूर्ण सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डॉ. मोहनलाल कौरी)
कुलगुरु, क्रांतिसूर्य टॉटिया भील विश्वविद्यालय
खरगौन

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास
Shiksha Sanskriti Utthan Nyas

देश को बदलना है, तो शिक्षा को बदलो

अध्यक्षा : डॉ. (श्रीमती) पंकज मित्तल   सचिव : अतुल कोठारी

दिनांक 28 नवम्बर 2025

शुभकामना संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय हैं कि दिनांक 4 दिसंबर 2025 को मालवा प्रान्त के बड़वानी में आयोजित एकदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पाठ्यक्रम में भारतीय चिंतन'' विषय पर विशिष्ट अकादमिक विमर्श होने जा रहा हैं तथा इस अवसर पर शोध पत्रिका ''शोध ज्ञान कनिका'' का प्रकाशन भी किया जा रहा है। यह आयोजन निःसंदेह शिक्षा जगत में भारतीय ज्ञान—परंपरा के पुनर्जागरण और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मूल उद्देश्यों को व्यवहार में उतारने की दृष्टि से अत्यंत सराहनीय व समयानुकूल प्रयास है।

भारतीय शिक्षा दर्शन सदैव ज्ञान, विज्ञान, मूल्यसंवर्धन और व्यक्तित्व विकास के समन्वय का पक्षधर रहा हैं। वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इसी जीवनदृष्टि को नवीन रुप से स्थापित करने का विराट संकल्प दिखाई देता हैं। यह अत्यंत आवश्यक है कि शिक्षार्थी केवल जानकारी के नहीं, बल्कि संस्कार, संवेदना और राष्ट्रभावना से संपन्न पूर्ण मानव बनें। इस दृष्टि से भारतीय चिंतन का समावेश शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में नई दिशा का प्रतीक हैं।

मुझे विश्वास है कि यह राष्ट्रीय कार्यशाला विद्वानों, शिक्षकों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों को पारंपरिक भारतीय ज्ञान—मीमांसा एवं आधुनिक शिक्षण व्यवहार के संगम पर सार्थक संवाद के लिए एक सुविस्तृत मंच प्रदान करेगी तथा इसके माध्यम से उभर कर आने वाले शोध, विचार और सुझाव भविष्य के शैक्षिक परिदृश्य को मार्गदर्शन देंगे।

इस महत्वपूर्ण शैक्षिक आयोजन की पूर्ण सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्री ओमप्रकाश शर्मा
राष्ट्रीय संयोजक आत्मनिर्भर भारत
क्षेत्रीय संयोजक
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, सरस्वती बाल मंदिर, जी ब्लॉक, नारायणा विहार, नई दिल्ली -110028   दूरभाषः
Shiksha Sanskriti Utthan Nyas, Saraswati Bal Mandir, G Block, Narayana Vihar, New Delhi-110028   011-25898023
ई-मेल atulssun@gmail.com वेबसाइटः www.bharatiyashiksha.org @ShikshaSanskriti YouTube शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिर्ल्ली
मालवा प्रान्त

रामसागर मिश्र
प्रान्त संयोजक
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास मालवा प्रान्त
मो. 8959376095
ईमेल- r.sagarmishra1856@gmail.com
प्लॉट नंबर 13 गुरुधाम सिटी बड़वानी(म. प्र)पिन 451551

शुभकामना संदेश

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन, सबसे समृद्ध एवं सबसे जीवंत परंपरा है। वेद-उपनिषद्, दर्शन-शास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष, योग, स्थापत्य, संगीत, नृत्य, काव्य-कला तथा लोक-परंपराओं तक यह ज्ञान-विज्ञान का अपार भंडार हमारे ऋषि-मुनियों ने सहस्राब्दियों तक संरक्षित, संवर्धित एवं परिष्कृत किया है। आज जब राष्ट्रीय शिक्षा नीति-२०२० ने स्पष्ट रूप से भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाने का संकल्प लिया है, तब इस दिशा में ठोस चिंतन-मनन तथा कार्ययोजना बनाने की अनिवार्यता और भी बढ़ गई है।

मालवा प्रांत के बड़वानी में ४ दिसंबर २०२५ को आयोजित यह राष्ट्रीय कार्यशाला उसी दिशा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास तथा विद्या भारती के संयुक्त तत्त्वावधान में हो रही इस कार्यशाला में देश के विभिन्न प्रांतों से आए हुए विद्वान्, शिक्षाविद्, शोधार्थी एवं नीति-निर्माता भारतीय ज्ञान परंपरा के पाठ्यक्रमगत समावेश के विविध आयामों पर गहन विमर्श करेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि न्यास के राष्ट्रीय सचिव श्री अतुल कोठारी जी एवं विद्या भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. रविंद्र कन्हारे जी के प्रेरक उद्बोधन इस कार्यशाला को नई दिशा एवं ऊर्जा प्रदान करेंगे।

इस अवसर पर प्रकाशित हो रही शोध पत्रिका *“शोध ज्ञान कनिका”* अत्यंत सराहनीय प्रयास है। यह पत्रिका कार्यशाला में प्रस्तुत शोध-पत्रों का संकलन मात्र नहीं, अपितु भारतीय ज्ञान परंपरा को समसामयिक शिक्षा-पद्धति में समावेशित करने की दिशा में एक ठोस दस्तावेज बनेगी। मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि देश के कोने-कोने से आए शोधकर्ता अपने मौलिक चिंतन से इस पत्रिका को समृद्ध कर रहे हैं।

मालवा प्रांत की समस्त टीम, आयोजक-संस्थान, विद्वत्जन तथा सहयोगी बंधुओं को मैं हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

रामसागर मिश्र
प्रान्त संयोजक
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास

संपादकीय

भारतीय शिक्षा व्यवस्था का मूल आधार सदैव भारतीय ज्ञान परंपरा रही है, जिसने मनुष्य को केवल पुस्तक-आधारित ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन को जीने की कला, विवेक, मानवता, नैतिकता और कर्तव्य-बोध की दृष्टि प्रदान की। आज जब विश्व शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण संक्रमण काल से गुजर रही है, **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** भारत को पुनः अपने वैचारिक, सांस्कृतिक और ज्ञानगत स्वत्व से जोड़ने का ऐतिहासिक अवसर प्रस्तुत करती है।
इसी उद्देश्य को केंद्र में रखते हुए "**राष्ट्रीय शिक्षा नीति पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परंपरा का चिन्तन" विषय पर राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, बड़वानी** द्वारा 4 दिसंबर 2025 को यह विशिष्ट कार्यशाला आयोजित की जा रही है। यह कार्यशाला न केवल अकादमिक संवाद का मंच है, बल्कि नई शिक्षा नीति को वास्तविक जीवन, समाज और व्यवहार में उतारने की दिशा में विचार, दृष्टि और समाधान का संगम है।

इस अवसर पर कार्यक्रम के **मुख्य वक्ता डॉ. अतुल कोठारी**, राष्ट्रीय सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, "राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता" पर अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। उनकी दृष्टि में-

- भारतीय ज्ञान परंपरा विज्ञान, तर्क और अनुभव का संतुलित संगम है।
- NEP भारत की शिक्षा को पुनः "भारत-केंद्रित" बनाती है।
- मातृभाषा में शिक्षा, स्थानीय ज्ञान, प्राचीन वैज्ञानिक उपलब्धियाँ और जीवन-संबंधी शिक्षण इसे वास्तव में भारतीय बनाते हैं।

डॉ.अतुलजी कोठारी का उद्बोधन निश्चय ही शिक्षकों, विद्यार्थियों और शोधार्थियों को यह समझने में सक्षम बनाएगा कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल इतिहास नहीं, बल्कि भविष्य की शिक्षा का आधार है।

द्वितीय सत्र के **विशिष्ट वक्ता डॉ. रविंद्र कान्हरे**, राष्ट्रीय अध्यक्ष, विद्या भारती, नई दिल्ली "राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में चुनौतियाँ और संभावनाएँ" पर अपने विचार व्यक्त करेंगे। वे स्पष्ट करते हैं कि-

- नीति की वास्तविक सफलता उसके "मैदान-स्तरीय क्रियान्वयन" में निहित है।
- शिक्षक प्रशिक्षण, अनुसंधान विकास, समाज-विद्यालय सहभागिता और ग्रामीण–शहरी शिक्षण अंतर को कम करना प्राथमिक आवश्यकता है।
- NEP भारतीय मूल्यों और आधुनिक तकनीक का ऐसा संयोजन प्रस्तुत करती है जो आने वाली पीढ़ियों को आत्मनिर्भर, वैश्विक और सांस्कृतिक रूप से सशक्त बना सके।

दोनों वक्ताओं की वैचारिक दिशा यह संकेत देती है कि भारतीय शिक्षा आज केवल परिवर्तन के नहीं, बल्कि **पुनर्जागरण के दौर** में प्रवेश कर चुकी है। यह कार्यशाला विशिष्ट इसलिए भी है कि इसमें-

- राष्ट्रीय स्तर के शिक्षा-विचारक उपस्थित हैं,
- शोध और क्रियान्वयन दोनों पर सार्थक चर्चा हो रही है,
- शिक्षा और समाज को जोड़ने वाला एक स्पष्ट रोडमैप सामने आ रहा है।

यह **शोध पत्रिका "ज्ञान प्रवाह कणिका"** उन विचारों, चर्चाओं और निष्कर्षों का जीवंत दस्तावेज है, जो शिक्षा को पुनः भारतीय आत्मा से अनुप्राणित करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम सिद्ध होंगे।

कार्यक्रम **में मुख्य अतिथि** के रूप में **माननीय श्री राव उदय प्रताप सिंह,** परिवहन एवं स्कूल शिक्षा मंत्री, मध्य प्रदेश शासन उपस्थित रहेगे । विशेष अतिथि के रूप में **श्री ओमप्रकाश जी शर्मा**, क्षेत्र संयोजक (मध्य क्षेत्र) एवं शिक्षा से आत्मनिर्भर भारत के राष्ट्रीय संयोजक शिक्षा संस्कृति उत्तंन्यास नई दिल्ली, **श्री अरविंद उपाध्याय** अध्यक्ष जनभागीदरी समिति, प्रधानमंत्री उत्कृष्ट महाविद्यालय, बड़वानी की गरिमामय उपस्थित में तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता **डॉ. मोहनलाल कोरी**, कुलगुरु, कांतीसूर्य टंटिया भील विश्वविद्यालय, खरगोन करेगे ।

यह कार्यशाला निश्चित ही विचारों, अनुसंधान, चिंतन और शैक्षिक दिशा-निर्देशों का संगम सिद्ध होगी । इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी विद्वानों, अतिथियों, वक्ताओं, आयोजन-सहयोगियों और शिक्षण संस्थानों का हार्दिक अभिनंदन।

डॉ. दिनेश पाटीदार
संपादक, राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी शोध पत्रिका
बड़वानी

INDEX

S. no.	Author's Name	Title	Page No.
1.	डॉ. कविता भदौरिया	भारतीय ज्ञान परंपरा की अर्थशास्त्र विषय में प्रासंगिता (कौटिल्य के विचारों के विशेष संदर्भ में)	1-5
2.	डॉ. दिनेश कुमार पाटीदार	नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्समावेश	6-11
3.	डॉ. मनोज वानखेड़े	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता	12-17
4.	Reval Singh Kharat and Dr. Vinay Gore	Role of Indian Knowledge Systems and Technology in NEP 2020	18-23
5.	डॉ. राजमलसिंह राव	राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता	24-28
6.	प्रो. सीमा नाईक	राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020: भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक शिक्षा का समन्वय	29-32
7.	डॉ. सुनीता सोलंकी	समकालीन भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की प्रासंगिकता	33-37
8.	डॉ. भूपेंद्र भार्गव	नई शिक्षा नीति 2020 : भारत–केंद्रित ज्ञान–संस्कृति की संरचना	38-42
9.	प्रियंका शर्मा	राष्ट्रीय शिक्षा निति में भारतीय ज्ञान परम्परा का महत्त्व	43-46
10.	डॉ. दिलीप कुमार परसेंडिया	21 वीं सदी में भारतीय ज्ञान परम्परा की आवश्यकता: एक अध्ययन	47-51
11.	डॉ. अनिल पाटीदार	राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पाठ्यक्रमों में कौशल–ज्ञान विकास का चिंतन	52-55
12.	प्रो. दीपक सोलंकी, डॉ. दिनेश सोलंकी	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा का महत्व	56-61
13.	डॉ. नटवरलाल गुप्ता, डॉ. इन्दु डावर	राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020 के क्रियान्वयन में चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ	62-65
14.	डॉ श्याम नाईक	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय परंपरागत शिक्षा का महत्व	66-71
15.	डॉ. प्रियंका देवड़ा	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकताः एक गहन विश्लेषणात्मक अध्ययन	72-76
16.	Dr Vivekanand Jha	Reflection on Indian Knowledge Tradition in the Curriculum of the National Education Policy, 2020	77-81
17.	Dr. Jagdish Mujalde	Relevance of Indian Knowledge System in Implementation of NEP-2020	82-90
18.	डॉ. मंशाराम बघेल	भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध संदर्भ	91-100

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

भारतीय ज्ञान परंपरा की अर्थशास्त्र विषय में प्रासंगिकता

(कौटिल्य के विचारों के विशेष संदर्भ में)

डॉ. कविता भदौरिया

एसोसियेट प्रोफेसर

शासकीय कन्या महावि., बड़वानी

ई– मेल bhadoriya.kavita2012@gmail.com

भारत का इतिहास सदैव ही गौरवशाली रहा है। भारत–देश सदियों से अपने गौरवशाली इतिहास के लिये विश्व में अपना एक अलग स्थान बनाये हुये है और भारत देश की पहचान विश्व में बनी हुई है। भारत देश की यह पहचान धर्म सभ्यता एवं संस्कृति के आधार पर हो, या अपनी भौगोलिक विशेषताओं या विभिन्नता के आधार पर हो, या भारत की अर्थव्यवस्था एवं कूटनीति के आधार पर हो भारत देश विश्व के अन्य देशों से प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान काल तक अपनी एक अलग विशिष्टता लिये पहचाना जाता रहा है।

वर्तमान में हम सभी भारतीय ज्ञान परंपरा की उसी आधारशीला के माध्यम में उस सभ्यता, संस्कृति, ज्ञान, विज्ञान, अर्थव्यवस्था की झलक को हमारे वर्तमान काल के क्रिया कलापों शिक्षा व्यवस्था, शासन व्यवस्था के संदर्भ में, अर्थव्यवस्था के संदर्भ में मूल्यांकित करने जा रहे है, क्योंकि इतिहास हमें सबक देता है, बहुत सी रीति–निति का निर्माण हमारे भूतकाल से होता है, उसी से सबक लेकर अच्छी नीतियों का निर्माण वर्तमान काल में अर्थव्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था शासन व्यवस्था में कर देश की युवा पीढ़ी को सशक्त व कर्मठ बनाने में योगदान प्राप्त किया जा सकता है। तथा देश की भारतीय ज्ञान परंपरा को जीवित रख हम परंपरा से प्राप्त, विचारों, नितियों का संरक्षण व संवर्धन कर अपनी वर्तमान पीढ़ी को मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान कर उनमें मूल्यों का सृजन कर सकते है। जिससे देश में ऐसे विद्यार्थीयों को तैयार किया जा सकेंगा जो देश के विकास में अपना योगदान दे सकने में सक्षम होंगे।

प्रस्तुत शोध–आलेख में मेरे द्वारा प्राचीन उपलब्ध साहित्य कौटिल्य के अर्थशास्त्र के विशेष संदर्भ में भारतीय ज्ञान–परंपरा का समावेश किस रूप में हमारे वर्तमान पाठ्यक्रमों में मेजर/माइनर/वैकल्पिक विषयों में किया जाकर उनकी उपयोगिता को सिद्व करने का है, तथा इस बात के मूल्यांकन का प्रयास शोध आलेख में किया गया है।

शब्द कुंजी/संकेतक– कौटिल्य के आर्थिक विचार कृषि, कर सार्वजनिक व्यय, अंतरर्राष्ट्रीय व्यापार रोजगार, लगान, मजदूरी, ब्याज, लाभ व कल्याणकारी अर्थशास्त्र राष्ट्रीय आय, भारतीय कृषि, लघु एवं कुटीर उद्योग, गरीबी, बेरोजगारी व विषमताए, पर्यटन, रोजगार।

भारत सदियों से अपनी प्राकृतिक व सांस्कृतिक विशेषताओं से युक्त देश रहा है।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

किसी भी राष्ट्र की उन्नति व उसका वर्तमान उत्सर्ग उसकी प्राचानी परंपराओं अर्थनीतियों व राज–व्यवस्था संबंधी क्रियाओं में निहित है। अतः प्राचीन ज्ञान परंपराओं चाहे व अर्थ की हो, धर्म की हो या राजनीतिक इन व्यवस्थाओं हो से ही प्रेरणा पाकर वर्तमान नीतियों की आधारशिला के द्वारा उन्नत राष्ट्र का निर्माण कर सकते है। इसी उद्देश्य से अर्थशास्त्र जो जीवन का आधार व समस्त आर्थिक क्रियाओं का आदि व अंत है तथा जिसका संबंध मनुष्य से है, के नीतियों के परिपालन हेतू भूतकाल की नीतियों को जानना व उनका वर्तमान परिपेक्ष्य में उपयोग करना अति आवश्यक है।

कौटिल्य एक महान विचारक, दार्शनिक व आचार्य के रूप में जाने जाते रहे है। आचार्य कौटिल्य के विचार जहॉ राजनीति के रूप में मौर्य साम्राज्य के यश व कीर्ति गाथा के लिये विख्यात है वही कौटिल्य का अर्थशास्त्र प्राचीन समय की राज्यव्यवस्था, व्यवसाय, रोजगार, धन के वितरण कर न्याय प्रणाली कर कृषि के लिये भी महत्वपूर्ण रहे है। अर्थशास्त्र और कौटिल्य के संबंध में जो विवाद पूर्व में थे, आधुनिक अनुसंधानों ने उन्हें सर्वथा अनोचित सिद्व कर दिया है तथा अंतिम रूप से यह प्रमाणित कर दिया की अर्थशास्त्र के निर्माता आचार्य विष्णुगुप्त कौटिल्य ही है।

श्लोक– '' येन शास्त्रं च शस्त्र च नंदराजगता च भूः।
अमपेणोतद्वान्यायु तेन शास्त्रमिदं कृतम्

अर्थात नंदराज का समूल विनाश कर मौर्य साम्राज्य की स्थापना करने वाले आचार्य कौटिल्य को ही अर्थशास्त्र का निर्माता प्रमाणित किया गया ।

कौटिल्य अर्थशास्त्र की विषय वस्तु

1 भौतिक धन की प्रकृति तथा उसकी प्राप्ति का उद्देश्य– आचार्य कौटिल्य के द्वारा धन जो आर्थिक क्रिया के लिये महत्वपूर्ण है तथा उत्पादन के पॉच साधनों में से एक है के बारे में कौटिल्य ने धन के अन्तर्गत मुद्रा, वस्तु के लिये वित्त, सार्वजनिक तथा व्यक्तिगत सम्पति, विनिमय साध्य तथा हस्तांतरण योग्य वस्तुओं को सम्मिलित किया है। श्रम तथा वनों की उपज को भी धन में सम्मिलित किया गया है। धन को कैसे प्राप्त किया जा सकता है। तथा उसे व्यय करने के बारे में भी लिखा है। अगर इन ज्ञान परंपराओं को वर्तमान पाठ्यक्रम में देखे तो हमार व्यष्टि अर्थशास्त्र में हमने इन सब बातों का समावेश अलग – अलग विद्वानों, एड्म स्मिथ, राबिन्स, मार्शल, जे.बी. से सेम्युलसन आदि के विचारों के साथ व्याख्या के रूप में किया हैं, कि धन कैसे कमाया जाय और उसका उपयोग किस प्रकार किया जाय ताकि अधिकतम संतुष्टि को प्राप्त किया जा सके। उचित व अनुचित तरीके से कमाये गये धन में भी भेद किया गया है। लेकिन कौटिल्य को अलग से विषयवस्तु में समाहित नहीं किया गया है।

अतः कौटिल्य के उपरोक्त आर्थिक विचारों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाकर पाठ्यक्रम को और अधिक प्रांसगिक बनाया जा सकता है।

कृषि व पशुपालन – कृषि व पशुपालन भारतीय आर्थिक व्यवस्था की रीढ़ रही है। क्योंकि देश की 67 प्रतिशत आबादी आज भी कृषि व कृषि आधारित व्यवसाय से अपनी जीवकोपार्जन करती है। वर्ष 2020 में पूरे विश्व में फैली महामारी कोविड 19

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

के दौरान भी यह सिद्व हो गया की किसी भी अर्थव्यवस्था के सतत आर्थिक विकास हेतु कृषि महत्वपूर्ण है जब हमारा सेवा क्षेत्र उस पर आधारित व्यवसाय कोरोना काल में ठप्प हो गये थे। तब कृषि व उसके सहायक व्यवसायों ने ही अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान कि कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में उल्लेख किया है कि कृषि सबसे प्राथमिक व आधारभूत व्यवसाय है। अन्य सब प्रकार के व्यवसाय उसके बाद आते है, तथा कृषि पर आधारित है। वैदिक काल में कृषि व्यवसाय वैश्यों व शूद्रों द्वारा किया जाता था। वर्तमान पाठ्यक्रम में कृषि, बाजार कृषि– विपणन व उघोगों का समावेश किया जाकर हम भारतीय ज्ञान परंपरा का ही अनुसरण कर रहे है। किन्तु कृषि के माध्यम से विकेन्द्रीकृत प्राथमिक व आधारभूत कृषि व्यवसायों का उल्लेख करते हुए हम कौटिल्य के आर्थिक विचारों को रखते हुए व्याख्या करेंगे तो यह भारतीय ज्ञान परंपरा अनुकूल होकर प्रासंगिक होगा।

श्रम की प्रतिष्ठा – कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में श्रम की प्रतिष्ठा को स्थान दिया। श्रम उत्पादक क्रियाओं का सक्रिय व गतिशील साधन से तथा श्रम से ही उत्पादक क्रियायें आगे बढ़ती है। अतः कौटिल्य ने श्रमिकों के लिए एक आचार–संहिता दी तथा जीवन– निर्वाह के लिये न्यूनतम मजदूरी निर्धारण को आधार बनाया था। मजदूरों व मालिकों के बीच झगड़े निपटाने के तरीकों का भी विश्लेषण किया था। आज भी कौटिल्य के विचारों की प्रासंगिता का समावेश नवीन पाठ्यक्रमों में किया गया और किया जाकर हम भारतीय ज्ञान परंपरा के उन नियमों को अपना कर विद्यार्थियों को इसका लाभ दे सकते है। यही राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का भी लक्ष्य और उद्देश्य है।

जनसंख्या – देश भी जनसंख्या का अधिक होना प्राचीन भारतीय विचाराकों के अनुसार निर्धनता का कारण नही हो सकता। वे जनसंख्या को शक्ति का स्त्रोत मानते थे। आज के भारत में जनसंख्या का 65 प्रतिशत भाग युवा है, उनका उचित, कौशल उन्नयन व मार्गदर्शन कर युवाओं की बेरोजगारी को दूर करने व देश के आर्थिक विकास को बढ़ाने में किया जा सकता है। नये पाठ्यक्रमों में कौशल विकास व रोजगार मूलक योजनाओं का समावेश इस भारतीय ज्ञान परंपरा को जीवित रखेगा वही, विद्यार्थियों का सर्वागीण विकास करने में भी सहायक होगा।

व्यापार–व्यवसाय – कीमतों के नियमन हेतु भी कौटिल्य के अर्थशास्त्र में बताया गया है कि कीमतों पर नियंत्रण किया जाकर ही जनता की भलाई की जा सकती है। वर्तमान में भी यह कार्य सरकारों द्वारा किया जाकर कल्याणकारी राज्य की धारणा को मजबूत किया जा सकता है। वही व्यापार हेतु भंडार ग्रहों का निर्माण व राज्य के बाहर से आने वाली वस्तुओं पर कर लगाना यह सब कौटिल्य अर्थशास्त्र में वर्णित है। इन सब महत्वपूर्ण पहलूओं का समावेश पाठ्यक्रमों में किया जाकर जहॉ हम अपने प्राचीन ज्ञान परंपरा का लाभ ले सकेंगे वही यह अर्थव्यवस्था के सुचारू संचालन में यह सब सहयोगी होगी। विद्यार्थी पढ़कर इनका लाभ ले सकेंगे। कौटिल्य को इन विचारो के साथ पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाना उचित होगा।

सामाजिक सुरक्षा कल्याण– प्राचीन भारतीय विचारकों कौटिल्य अर्थशास्त्र में कल्याणकारी राज्य का स्पष्ट विचार प्रस्तुत किया गया था, उन्होंने कृषकों व श्रमिकों के शोषण को रोकने हेतु कानून बनाये थे। वर्ग संघर्ष को रोकने हेतु भी कार्य किये व

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

कानून बनाये उनका कहना था कि राज्य सरकार द्वारा वे उद्योग चलाये जाये जो राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाये। कृषि पशुपालन कला को व्यक्तियों के लिये छोड़ देना चाहिये।

सरकार द्वारा उत्पादन–वितरण, व उपभोग संबंधी क्रियाओं को कुशलतापूर्वक चलाया जाना चाहिए, जिससे मानव कल्याण मं वृद्वि हो कौटिल्य के अर्थशास्त्र में इन सब बातो का उल्लेख है, जो वर्तमान में पाठ्यक्रम में समाहित होकर प्रासंगिक है।

कौटिल्य अर्थशास्त्र में वर्णित सभी उपरोक्त बिन्दु आज भी वर्तमान संदर्भ मे ं प्रासंगिक है। पाठ्यक्रम में इन सब विचारों का समावेश कौटिल्य के संदर्भ में होना चाहिए तथा कौटिल्य के आर्थिक विचारों को भी पढ़ाया जाना उपयुक्त होगा ताकि हम ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता को सिद्व कर सकें। और नवीन युवा पीढ़ी को भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ सके।

मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय शिक्षा–नीति 2020 का आगाज वर्ष 2021 से हो गया है। शिक्षा ही राष्ट्र को मजबूत बनाने का महत्वपूर्ण घटक है। बी.ए. प्रथम वर्ष के नवीन पाठ्यक्रम में प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा की झलक प्रतिबिंबित होती है, क्योंकि जो पाठ्यक्रम बनाया गया है उसमें उपभोग, वितरण, विनिमय, सामाजिक लाभ कृषि पशुपालन, उत्पादन कुटीर व लघु उद्योग रोजगार नीतियॉ स्टार्टअप इत्यादि को ध्यान में रख विद्यार्थियों को हमारी प्राचीन ज्ञान परंपरा से जोड़ने का प्रयास किया गया है। किन्तु कौटिल्य के आर्थिक विचारो को एक चैप्टर के रूप में समाहित कर हम भारतीय ज्ञान परंपरा को ओर अधिक प्रासंगिक और मजबूत कर सकते।

सुझाव

1 पाठ्यक्रम अनुसार विषय के विद्यार्थियों से विभिन्न विषयों पर प्रोजेक्ट बनावकर उनके व्यावहारिक ज्ञान को बढ़ाया जाय।

2 रोजगार मूलक योजनाओं, पर्यटन जो ं वर्तमान मुख्य विषय बिन्दु है, उनका मार्गदर्शन कुशल अतिथियों को बुलाकर करवाया जाय।

3 बाजार– अर्थव्यवस्था, कीमत, मांग व पूर्ति के लिये विद्यार्थियों के साथ बाजार विजिट की जाय ताकि वह मूल्य। मांग को अच्छे से समझ पाये।

4 कृषि में जैविक खेती के लाभों को जानने हेतु भी कृषकों के साथ संवाद स्थापित कर, उसके लाभों से अवगत कराया जाय।

5 पर्यटन जैसे विषय की उपयोगिता को छोटी व आसपास की पर्यटन यात्राओं के द्वारा वहॉ भी इतिहास, भौगौलिक व पर्यटन से प्राप्त होने वाली आय व पर्यटन आधारित व्यवसाय की जानकारी दी जाय ताकि विद्यार्थी व्यावहारिक रूप से लाभांवित हो सके।

संदर्भ सूची –

1. कौटिल्य का अर्थशास्त्र– डॉ. उमा प्रसाद श्रीवास्तव प्रकाशक, प्रकाशन संस्थान 4715121 दयानंद मार्ग दरियागंज नई दिल्ली – 110002
2. कौटिल्य. (2016). अर्थशास्त्र (आर. श्यामशास्त्री, संपा.). नई दिल्ली: चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान।
3. शर्मा, रामशरण. (2014). प्राचीन भारत का आर्थिक इतिहास. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

4. सेन, अमर्त्य. (2010). विकास एक स्वतंत्रता के रूप में (हिंदी अनुवाद). नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ. (2021). भारतीय ज्ञान परंपरा और समकालीन अर्थव्यवस्था. नई दिल्ली: शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास।
6. मिश्र, विद्यानिवास. (2015). भारतीय चिंतन और आर्थिक दर्शन. वाराणसी: भारतीय विद्या प्रकाशन
7. https://forms.gle/

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्समावेश

डॉ. दिनेश कुमार पाटीदार

सहायक प्राध्यापक, भूगोल शासकीय आदर्श महाविद्यालय, बड़वानी (म. प्र.)

शोध सारांश – भारत की शिक्षा परंपरा विश्व की प्राचीनतम एवं सर्वाधिक समृद्ध शैक्षणिक परंपराओं में मानी जाती है। प्राचीन गुरुकुल प्रणाली से लेकर तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी जैसे महान विश्वविद्यालयों ने भारतीय ज्ञानमीमांसा को वैदिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक एवं मानवमूल्य आधारित स्वरूप प्रदान किया। किंतु औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली के प्रभाव ने भारतीय शिक्षा के स्वरूप को बदल कर उसे विदेशी ढाँचे में ढाल दिया, जिसके परिणामस्वरूप भारत की मौलिक शिक्षा–चेतना, सांस्कृतिक ज्ञान, जीवन–दर्शन एवं व्यवहारिक शिक्षण पद्धति धूमिल होती गई।

वर्ष 2020 में लागू राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) ने भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनः शिक्षा तंत्र में स्थापित करने का ऐतिहासिक प्रयास किया है। यह नीति कक्षा से विश्वविद्यालय स्तर तक भारतीय भाषाओं, संस्कृति, कला, गणित, खगोल, दर्शन, आयुर्वेद, पारंपरिक ज्ञान और स्थानीय कौशलों को पुनर्स्थापित करने के स्पष्ट निर्देश देती है। यह शोध–पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा की ऐतिहासिक यात्रा, औपनिवेशिक विचलन, आधुनिक शिक्षा की चुनौतियाँ तथा नई शिक्षा नीति द्वारा पुनर्समावेश के उपायों पर विस्तृत चर्चा है। **शोध पत्र का उद्देश्य** यह बताना है कि भारतीय परंपरा का आधुनिक शिक्षा में पुनर्समावेश न केवल सांस्कृतिक पुनर्जागरण है बल्कि ज्ञान–उत्पादन, अनुसंधान, व्यक्तित्व विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए भी अनिवार्य है।

प्रमुख शब्द – भारतीय ज्ञान परंपरा, शिक्षण पद्धति, नवाचार, समग्र शिक्षा, मूल्य शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, गुरुकुल प्रणाली, आत्मनिर्भरता, आधुनिक शिक्षा।

शोध परिचय

शिक्षा किसी भी राष्ट्र का आधार स्तंभ होती है। शिक्षा ही नागरिक, समाज और राष्ट्र का चरित्र, दृष्टि और भविष्य निर्धारित करती है। भारतीय शिक्षा तंत्र का मूल उद्देश्य मात्र रोजगार नहीं, बल्कि समग्र व्यक्तित्व—बौद्धिक, आध्यात्मिक, नैतिक, वैज्ञानिक और सामाजिक—का विकास था।

भारतीय शिक्षा निम्न प्रमुख आधारों पर आधारित थी– **ज्ञान** (ज्ञान का अर्जन), **विज्ञान** (प्रयोग और सत्यापन), **धर्म** (नीति और सदाचार), **निष्ठा** (कर्तव्य और अनुशासन), **लोक–हित** (समाज एवं मानवता के प्रति उत्तरदायित्व) वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, सूत्र–ग्रंथ, नाट्य, गणित, खगोल, आयुर्वेद, वास्तु, योग, नीति, संस्कृति, साहित्य इत्यादि भारतीय शिक्षण के केन्द्रबिंदु थे।

किंतु औपनिवेशिक शासन ने शिक्षा का उद्देश्य बदल दिया। अंग्रेजों के शिक्षा ढाँचे का मकसद था– भारतीयों को "नौकरशाही के औजार" बनाना, तर्क–विज्ञान और स्वाध्याय आधारित शिक्षा समाप्त करना, भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा की हीन भावना उत्पन्न करना। इसके परिणामस्वरूप शिक्षा अपनी वास्तविक आत्मा खो बैठी। आज भारत को विश्वगुरु

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

बनने के अपने लक्ष्य के लिए अपनी जड़ों से पुनः जुड़ना आवश्यक है। नई शिक्षा नीति इसी दिशा में मार्ग निर्धारित कर प्रशस्त करती है।

शोध की विधि

यह शोध अध्ययन गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें प्राचीन ग्रंथों तथा आधुनिक शैक्षिक नीति–पत्रों (NEP 2020, UGC रिपोर्ट्स) का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध के लिए द्वितीयक स्रोतों जैसे – प्रकाशित पुस्तकों, शोधपत्रों, सरकारी दस्तावेज़ों और शैक्षिक रिपोर्टों का उपयोग किया गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा: इतिहास एवं स्वरूप

1. **वैदिक शिक्षा** – वैदिक शिक्षा प्रणाली भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल आधार थी, जिसमें वेद ज्ञान के प्रमुख स्रोत माने जाते थे। शिक्षा गुरु–शिष्य परंपरा के माध्यम से मुख्यतः मौखिक रूप में प्रदान की जाती थी, जहाँ विद्यार्थी आश्रम या गुरुकुल में रहकर जीवनोपयोगी विद्या प्राप्त करते थे। इसका उद्देश्य मात्र रोजगार प्राप्ति नहीं, बल्कि चरित्र, मूल्य, तर्कशीलता और आत्मिक विकास था। इसी कारण इसका मूल सिद्धांत "सा विद्या या विमुक्तये" माना गया, अर्थात् वह विद्या ही सच्ची है जो मनुष्य को अज्ञान, बंधन और अनीति से मुक्त करती है।
2. **उपनिषदकालीन शिक्षा** – उपनिषदकालीन शिक्षा तर्क, प्रश्न, संवाद और वाद–विवाद पर आधारित थी, जिसमें विद्यार्थियों को ज्ञान को केवल स्वीकार करने के बजाय उसे समझने, परखने और सत्य की खोज करने के लिए प्रेरित किया जाता था। जिससे शिक्षार्थी जीवन के आध्यात्मिक और नैतिक सत्य को पहचानकर पूर्ण मानवीय विकास की ओर अग्रसर होते थे।
3. **प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालय** – जैसे तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी उच्च शिक्षा के उत्कृष्ट केंद्र थे, जो आधुनिक "रिसर्च यूनिवर्सिटी" मॉडल के सबसे प्राचीन और श्रेष्ठ उदाहरण माने जाते हैं। तक्षशिला में 64 से अधिक विषय पढ़ाए जाते थे, जिनमें आयुर्वेद, राजनीतिशास्त्र और सैन्य–विज्ञान प्रमुख थे। नालंदा विश्वप्रसिद्ध केंद्र था, जहाँ लगभग 10,000 विद्यार्थी और 2,000 आचार्य अध्ययन–शिक्षण में संलग्न रहते थे। विक्रमशिला विश्वविद्यालय तर्क, न्याय, तंत्र और दर्शन के लिए जाना जाता था, जबकि वल्लभी राजनीति और प्रशासन शिक्षा का प्रमुख केंद्र था। जो भारतीय शिक्षा की उन्नत और वैज्ञानिक दृष्टि का प्रमाण है।
4. **भारतीय वैज्ञानिक ज्ञान** – भारत प्राचीन काल से ही सुनियोजित वैज्ञानिक ज्ञान का केंद्र रहा है। यहाँ अंक प्रणाली, 'शून्य' और 'दशमलव' का आविष्कार हुआ, जिसने विश्व गणित की दिशा बदल दी। चिकित्सा के क्षेत्र में आयुर्वेद ने रोगों की पहचान, उपचार और जीवन–शैली आधारित स्वास्थ्य विज्ञान का विकास किया। भारतीय विद्वानों ने आकाशगंगा, सूर्य और ग्रहों की गतियों के वैज्ञानिक अध्ययन के साथ मौसम और खगोल पर आधारित पंचांग निर्माण की सटीक पद्धति विकसित की।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

5. **औपनिवेशिक शिक्षा का प्रभाव** – औपनिवेशिक काल में लागू मैकाले की "मिनट्स ऑन एजुकेशन" (1835) का मुख्य उद्देश्य भारतीय शिक्षा को उसकी जड़ों से काटकर अंग्रेजी मॉडल के अनुरूप प्रशासनिक नौकर तैयार करना था। इसके परिणामस्वरूप स्थानीय भाषाओं और पारंपरिक ज्ञान का ह्रास हुआ। ज्ञान उत्पादन का केंद्र भारत से यूरोप की ओर स्थानांतरित हो गया और शिक्षा का दृष्टिकोण सांस्कृतिक आत्महीनता तथा 'मानसिक दासता' की दिशा में बढ़ गया।

नई शिक्षा नीति (NEP 2020): भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्समावेश

1. **नीति का दर्शन** – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मूल दर्शन "Indian Roots and Global Vision" पर आधारित है, जिसके अनुसार शिक्षा प्रणाली में ज्ञान और विचारों का आधार भारतीय सांस्कृतिक, दार्शनिक और बौद्धिक परंपरा से लिया जाएगा, जबकि उसका दृष्टिकोण वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी, आधुनिक और वैज्ञानिक होगा। इस नीति का उद्देश्य ऐसा शिक्षण मॉडल विकसित करना है, जो भारतीयता में निहित मूल्यों को संरक्षित करते हुए विद्यार्थियों को अंतरराष्ट्रीय योग्यता, समझ और दृष्टि प्रदान कर सके।
2. **भारतीय भाषाओं का पुनर्स्थापन –** विद्यालय और उच्च शिक्षा में मातृभाषा/भारतीय भाषा में अध्ययन का प्रोत्साहन, संस्कृत को व्यावहारिक भाषा के रूप में स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में पाठ्य सामग्री निर्माण सरकारी एवं गैर–सरकारी विश्वविद्यालयों में संस्कृत, तमिल, पाली, प्राकृत, बंगला, हिंदी, उर्दू, कन्नड़, तेलुगू आदि में अध्ययन की सुविधा का विस्तार।
3. **पारंपरिक ज्ञान क्षेत्रों का एकीकरण –** गणित का भारतीय इतिहास, खगोल और अंतरिक्ष ज्ञान, आयुर्वेद और भारतीय चिकित्सा विज्ञान, वास्तु, जल–व्यवस्था, कृषि, पंचतत्त्व विज्ञान, नाटक, संगीत, चित्रकला, शिल्पकला, इन सबको वैज्ञानिक पद्धति और आधुनिक प्रयोगशाला कार्यों से जोड़ना नीति का उद्देश्य है।
4. **शिक्षा का चरित्र निर्माण लक्ष्य** – राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षा को केवल सूचना या रोजगार प्राप्ति का साधन न मानकर चरित्र निर्माण का माध्यम बनाने पर बल देती है। इसके अंतर्गत शिक्षा को नैतिक, अध्यात्म–आधारित और मानव मूल्यों से युक्त बनाने का प्रयास किया गया है, ताकि विद्यार्थियों में सत्य, अनुशासन, कर्तव्य, संवेदनशीलता, सह–अस्तित्व और मानवकल्याण जैसी मूलभूत विशेषताओं का विकास हो सके। समाज को अच्छे नागरिक, उत्तरदायी व्यक्तित्व और नैतिक दृष्टि वाले मानव संसाधन प्रदान कर सके।
5. **बहु–विषयक मॉडल** – प्राचीन भारतीय गुरुकुल प्रणाली में शिक्षा बहुआयामी थी, जहाँ साहित्य पढ़ने वाला विद्यार्थी योग, खगोल व नैतिक शिक्षा भी समान रूप से ग्रहण करता था। विज्ञान तर्क और प्रयोग से जुड़ा था, जबकि कला का संबंध सीधे जीवन और व्यवहार से स्थापित था। इस प्रकार शिक्षण केवल विषय–ज्ञान तक सीमित नहीं था बल्कि संपूर्ण व्यक्तित्व विकास का माध्यम माना जाता था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) आधुनिक

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

विश्वविद्यालयों में इसी समेकित और बहुविषयी शिक्षण मॉडल को पुनः स्थापित करती है, ताकि विद्यार्थी ज्ञान को व्यापक, व्यवहारिक और जीवन–उन्मुख रूप में विकसित कर सकें।

6. **शिक्षण पद्धति में सुधार** – शिक्षण पद्धति में सुधार के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्राचीन भारतीय शिक्षा परंपरा की ओर पुनर्वापसी का संदेश देती है, जहाँ प्रश्न–उत्तर, वाद–विवाद, शास्त्रार्थ और संवाद जैसी सक्रिय शिक्षण विधियाँ प्रमुख थीं। NEP इसी दृष्टि से ज्ञान और कौशल (skill + knowledge) का संतुलित समन्वय स्थापित करने पर बल देती है, ताकि विद्यार्थी केवल डिग्री धारक न बनें, बल्कि विचारशील, सक्षम और व्यवहारिक रूप से दक्ष बन सकें।
7. **शोध एवं नवाचार** – राष्ट्रीय शिक्षा नीति शोध एवं नवाचार को भारत–केंद्रित दृष्टिकोण से विकसित करने पर बल देती है। इसका उद्देश्य यह है कि अनुसंधान केवल सैद्धांतिक या बाहरी मॉडल आधारित न होकर स्थानीय समस्याओं, सामाजिक आवश्यकताओं और भारतीय वास्तविकताओं के समाधान से जुड़े हों। इस प्रकार शोध का आधार स्थानीय होगा, परंतु उसके परिणाम वैश्विक स्तर पर उपयोगी, प्रभावी और स्वीकार्य रूप में उभर सकेंगे। NEP ऐसे अनुसंधान वातावरण का विकास करना चाहती है, जहाँ भारतीय समाज, अर्थव्यवस्था, विज्ञान, तकनीक और संस्कृति से जुड़े प्रश्नों पर काम करते हुए वैश्विक योगदान दिया जा सके।
8. **भारतीय ज्ञान के लिए संस्थागत ढाँचा** – राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत भारतीय ज्ञान परंपरा को संरक्षित, विकसित और वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करने के लिए संस्थागत ढांचा मजबूत किया जा रहा है। इसमें Indian Knowledge System (IKS Division) की स्थापना महत्वपूर्ण है, जिसके माध्यम से भारतीय दर्शन, कला, विज्ञान, इतिहास और परंपराओं पर व्यवस्थित शोध एवं अकादमिक विकास किया जा रहा है। इसी प्रकार National Language Translation Mission का उद्देश्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान को व्यापक पहुंच प्रदान करना है। देश–विदेश में India Studies Centres और पारंपरिक ज्ञान को डिजिटल रूप में सुरक्षित करने हेतु Traditional Knowledge Digital Libraries की स्थापना की जा रही है। ये सभी संस्थान मिलकर भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षण, शोध और नवाचार की मुख्यधारा में पुनर्स्थापित कर रहे हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा का आधुनिक शिक्षा में योगदान

1. **आलोचनात्मक चिंतन क्षमता** – भारतीय शिक्षा प्रश्न पूछने और सत्य को परखने की संस्कृति देती थी। संवाद, वाद–विवाद, मीमांसा, न्यायशास्त्र—आज की Critical Thinking पद्धति के प्राचीन भारतीय उदाहरण हैं।
2. **मूल्य आधारित शिक्षा**– भ्रष्टाचार, हिंसा, मानसिक तनाव, प्रतिस्पर्धा—इनका समाधान केवल नौकरी–केंद्रित शिक्षा से संभव नहीं। भारतीय ज्ञान परंपरा मनुष्यता को शिक्षा के केंद्र में रखती है।
3. **विज्ञान का लोक–जीवन से संबंध** – भारतीय विज्ञान का गहरा संबंध सदैव लोक–जीवन से रहा है, जहाँ ज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित न होकर जीवन के व्यवहारिक उपयोग से जुड़ा था। जल संरक्षण की तकनीकें,

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

जैविक खेती, पर्यावरण संतुलन की परंपराएँ, सूर्य–चंद्र की सटीक गणना तथा पंचांग से विकसित समय–विज्ञान इस वैज्ञानिक सोच के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। आज के "स्थाई विकास मॉडल" की ऐतिहासिक और उन्नत भारतीय नींव को स्पष्ट करता है।

4. **आयुर्वेद और आधुनिक स्वास्थ्य मॉडल –** आयुर्वेद भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐसा स्वास्थ्य मॉडल है जो शरीर, मन और चेतना के समन्वय पर आधारित समग्र स्वास्थ्य की अवधारणा प्रस्तुत करता है। इसमें रोग होने के बाद उपचार का ही नहीं, बल्कि रोग की रोकथाम पर अधिक बल दिया जाता है। आयुर्वेद प्राकृतिक वनस्पतियों, जड़ी–बूटियों और तत्वों पर आधारित प्राकृतिक रसायन–विद्या का उपयोग करता है, जिससे शरीर के असंतुलन को बिना दुष्प्रभाव ठीक किया जा सके। आज विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) भी इसी समग्र और रोग–निवारक दृष्टिकोण को आधुनिक स्वास्थ्य मॉडल में स्वीकारने लगा है, जिससे आयुर्वेद का वैश्विक महत्व और वैज्ञानिक प्रासंगिकता सिद्ध होती है।
5. **भाषा–आधारित संज्ञानात्मक विकास –** शिक्षा जब मातृभाषा में दी जाती है, तो बच्चे की समझ, अभिव्यक्ति और ज्ञान ग्रहण करने की क्षमता स्वाभाविक रूप से बढ़ती है। शोधों के अनुसार मातृभाषा में अध्ययन करने पर सीखने की गति 30–40% तक बढ़ जाती है, क्योंकि विद्यार्थी अनुवाद के बोझ से मुक्त होकर सीधे विषय को समझते हैं। इससे चिंतन और विश्लेषण क्षमता का विस्तार होता है, क्योंकि भाषा सोचने का उपकरण है और परिचित भाषा में विचार अधिक स्पष्ट होते हैं।

नई शिक्षा नीति के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्समावेश की चुनौतियाँ

नई शिक्षा नीति के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्समावेश में कई चुनौतियाँ सामने आती हैं। प्रमुख समस्या शिक्षकों के प्रशिक्षण की कमी है, जिससे वे नए पाठ्यक्रम और भारतीय ज्ञान पर आधारित शिक्षण विधियों को प्रभावी रूप से लागू नहीं कर पाते। इसके साथ ही प्रमाणिक शोध और विश्वसनीय संसाधनों की कमी इस दिशा में शैक्षणिक मजबूती को सीमित करती है। नए पाठ्यक्रमों को तकनीकी रूपांतरण देकर डिजिटल रूप में प्रस्तुत करना भी एक बड़ा कार्य है, विशेषकर जब शहरी–ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल असमानता अभी तक बनी हुई है। अंग्रेजी माध्यम की मानसिक श्रेष्ठता की धारणा भारतीय भाषाओं और ज्ञान परंपरा को अक्सर गौण बनाती है। साथ ही शिक्षा व्यवस्था को परंपरा और आधुनिक आवश्यकताओं के संतुलन में भी सावधानी रखनी पड़ती है ताकि शिक्षा प्रासंगिक और भविष्य उन्मुख बनी रहे।

समाधान एवं सुझाव

भारतीय शिक्षा प्रणाली को और प्रभावी बनाने हेतु कई समाधान एवं सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं। इसमें भारतीय ज्ञान आधारित प्रशिक्षण मॉड्यूल शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों को पारंपरिक एवं आधुनिक ज्ञान का व्यावहारिक उपयोग सिखाएंगे। साथ ही गणित, खगोल, आयुर्वेद, दर्शन, कृषि आदि क्षेत्रों में संदर्भ आधारित अनुसंधान केंद्र स्थापित कर वास्तविक समस्याओं पर अनुसंधान को बढ़ावा दिया जा सकता है। डिजिटल पुस्तकालयों के माध्यम से पांडुलिपियों, टीकाओं और संस्कृत, तमिल, पाली, फ़ारसी आदि भाषाओं के प्राचीन ग्रंथों को सुरक्षित कर व्यापक पहुँच उपलब्ध होगी। इसके साथ

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

भारतीय मॉडल के पाठ्य–प्रयोग, जैसे स्थानीय सर्वेक्षण, प्रायोगिक कार्य और सामुदायिक परियोजनाएँ विद्यार्थियों में व्यवहारिक कौशल, सामाजिक जुड़ाव और स्थानीय ज्ञान की समझ को मजबूत करेंगे।

निष्कर्ष

भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था मानव–कल्याण, वैज्ञानिक सत्य और जीवन–दर्शन का समन्वित मॉडल थी। नई शिक्षा नीति, शिक्षा प्रणाली को भारतीय दृष्टि, वैश्विक योग्यता, वैज्ञानिक सोच, मूल्य आधारित शिक्षा, शोधपरक दृष्टिकोण और मातृभाषा आधारित अधिगम की दिशा में आगे बढ़ाती है। यह केवल पाठ्यक्रम परिवर्तन नहीं, बल्कि शिक्षण को मूल जड़ों से जोड़ते हुए विश्वस्तरीय क्षमता विकसित करने का एक नया शैक्षिक युग आरंभ करती है, जिसमें स्थानीय ज्ञान, वैश्विक अवसर और व्यावहारिक कौशल एक साथ विकसित होते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्समावेश केवल सांस्कृतिक पुनर्जागरण नहीं, राष्ट्रीय बौद्धिक स्वतंत्रता और वैश्विक नेतृत्व की दिशा में नींव है। आने वाले समय में भारत पुनः ज्ञान–प्रधान विश्वगुरु बन सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मिश्रा, नरेन्द्र (2017). भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा. वाराणसी: गंगा पुस्तकालय.
2. सिंह, प्रभाकर (2019). भारतीय संस्कृति और शिक्षा के मूल तत्व. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी.
3. त्रिपाठी, विद्यानाथ (2020). गुरुकुल से वैश्विक शिक्षा तक. लखनऊ: भारतीय विद्या संस्थान.
4. शर्मा, मधुकर (2016). आधुनिक शिक्षाशास्त्र और भारतीय दृष्टि. दिल्ली: अवध प्रकाशन.
5. भारतीय शिक्षा मंत्रालय (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: भारत सरकार.
6. उपाध्याय, के.एन. (2022). भारतीय ज्ञान प्रणाली: परंपरा, वर्तमान और भविष्य. दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन.

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता

डॉ. मनोज वानखेड़े

सहायक प्राध्यापक ''समाजशास्त्र'', शासकीय कन्या महाविद्यालय, बड़वानी

शोध सारांश– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) स्वतंत्र भारत की सबसे व्यापक शिक्षा नीति है, जिसने भारतीय शिक्षा प्रणाली में बहुआयामी बदलाव का मार्ग प्रशस्त किया है। इस नीति का एक महत्त्वपूर्ण अंग है – "भारतीय ज्ञान परंपरा" का पुनर्स्थापन, संरक्षण और आधुनिक संदर्भों में उसका उपयोग। सदियों पुरानी भारतीय विद्यादृपरंपरा जैसे–गणित, आयुर्वेद, योग, वास्तु, राजनीति, नीतिशास्त्र, साहित्य, भाषा–विज्ञान आदि ज्ञानक्षेत्रों को नई पीढ़ी तक पहुँचाना NEP 2020 की मूल भावना में शामिल है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था का इतिहास अत्यंत समृद्ध रहा है। तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला जैसी विश्व–प्रसिद्ध शिक्षण संस्थाएँ न केवल ज्ञान के केंद्र थीं, बल्कि विश्वभर से विद्यार्थी यहाँ अध्ययन हेतु आते थे। यहाँ शिक्षा केवल सूचना या विषय ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि चरित्र, व्यवहार, नैतिकता, आध्यात्मिकता और कौशल सभी का संतुलित समन्वय था। उपनिवेशकाल में आयी अंग्रेज़ी शिक्षा व्यवस्था ने भारतीय शिक्षा प्रणाली की आत्मा को हाशिये पर डाल दिया। आजादी के बाद आधुनिक शिक्षा–प्रणाली विकसित हुई, परंतु उसमें भारतीय ज्ञान के तत्व सीमित रहे। परन्तु 21वीं सदी के वैज्ञानिक वातावरण और वैश्वीकरण के बाद भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्य पुनः प्रासंगिक हो गए हैं। आधुनिक शिक्षा आज उसी दिशा में परिवर्तित हो रही है – जहाँ भारत की प्राचीन विद्या आधुनिक विज्ञान और तकनीक से मिलकर नई रूपरेखा प्रस्तुत कर रही है।

इस शोध–पत्र का उद्देश्य नीति में निहित भारतीय ज्ञान–परंपरा के तत्वों का विश्लेषण करना, उनकी वर्तमान समय में उपयोगिता को पहचानना तथा यह देखना है कि नई पीढ़ी की शिक्षा में किस प्रकार यह परंपरा आत्मनिर्भर भारत, वैश्विक नेतृत्व और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के लक्ष्य को साकार कर सकती है।

प्रस्तावना (Introduction)

भारत एक प्राचीन सभ्यता और विश्वगुरु के रूप में जाना जाता रहा है। तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी, श्रीविजय जैसे महाविद्यालयों की गौरवशाली परंपरा ने भारत को विश्व–विज्ञानी, गणितज्ञ, खगोलशास्त्री, चिकित्सक, दार्शनिक और साहित्य–विद् प्रदान किए। परंतु औपनिवेशिक शिक्षा–प्रणाली ने इस परंपरा को हाशिये पर डाल दिया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को भारतीयता के मूल स्वभाव से जोड़ने की पहल करती है। इसका लक्ष्य भारतीय ज्ञान–प्रणाली को संस्कृति, सामाजिक जीवन और राष्ट्रीय विकास के केंद्र में लाना है। इस शोध–पत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा की ऐतिहासिक संरचना, NEP–2020 के प्रावधान और उनकी वर्तमान समय में प्रासंगिकता का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा– ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

वैदिक और उपनिषद काल– भारत की प्राचीन शिक्षा गुरुकुल आधारित थी, जिसमें नैतिकता, संवेदना, अनुशासन और ज्ञान का समन्वय होता था। वेद, उपनिषद, ब्राह्मण–ग्रंथ, आरण्यक मानव–जीवन के समग्र विकास की शिक्षा प्रदान करते थे।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

1. **दर्शन–परंपरा का विकास**– सांख्य, योग, मीमांसा, न्याय, वैशेषिक और वेदांत जैसे छह दर्शनों ने तर्क, विवेक, आत्मा–परमात्मा, प्रकृति–पुरुष, ज्ञान–प्रमाण आदि गहन विषयों पर आधारभूत सिद्धांत स्थापित किए।
2. **विज्ञान एवं गणित**– आर्यभट, भास्कराचार्य, चरक, सुश्रुत, कणाद, वराहमिहिर जैसे विद्वानों ने गणित, ज्योतिष, चिकित्सा, धातु–विज्ञान, वास्तुकला आदि क्षेत्रों में विश्व–स्तरीय योगदान दिया।
3. **भाषाशास्त्र एवं साहित्य**– पाणिनि की अष्टाध्यायी विश्व की सर्वश्रेष्ठ व्याकरण प्रणाली मानी जाती है। कालिदास, बाणभट्ट, भवभूति, तुलसीदास, सूरदास आदि साहित्यकारों ने संस्कृति, भाषा और कला का विकास किया।

इन सबका संयुक्त रूप ही भारतीय ज्ञान परंपरा कहलाता है, जिसे NEP 2020 फिर से मुख्यधारा में लाने का प्रयास करती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप (Nature of Indian Knowledge Tradition)

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल धर्म या आध्यात्म नहीं, बल्कि जीवन और विज्ञान दोनों का समन्वय रही है। इसके प्रमुख आयाम हैं –

1. **गुरुकुल आधारित समग्र शिक्षा**– जहाँ शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास को समान महत्व दिया जाता था।
2. **ज्ञान के विविध क्षेत्र–**

   गणित– शून्य, दशमलव, बीजगणित

   आयुर्वेद– चिकित्सा का समग्र विज्ञान

   योग– मानसिक–शारीरिक स्वास्थ्य

   राजनीति– कौटिल्य का अर्थशास्त्र

   भाषाशास्त्र– पाणिनि का अष्टाध्यायी

   खगोल–विज्ञान– आर्यभट, वराहमिहिर
3. **ज्ञान का आचरण से संबंध–** हर ज्ञान "व्यवहार" और "चरित्र" से जुड़ा था। आज का Outcome & Based Education इसी की आधुनिक अभिव्यक्ति है।

आधुनिक शिक्षा के उद्भव में भारतीय ज्ञान के अंतर्निहित प्रभाव

1. **समग्र शिक्षा** (Holistic Education)– आज की शिक्षा में नैतिक मूल्य, भावनात्मक, बुद्धिमत्ता, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक उत्तरदायित्व को महत्व दिया जा रहा है। यह मॉडल भारतीय गुरुकुल प्रणाली से प्रेरित है।
2. **बहुविषयक शिक्षा** (Multidisciplinary Learning)– नालंदा और तक्षशिला में गणित, चिकित्सा, धर्म, राजनीति, कला, व्याकरण सभी विषय एक साथ पढ़ाए जाते थे।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

NEP- 2020 का Multidisciplinary Model वही गुरुकुल–मॉडल का आधुनिक रूप है।

3. **कौशल आधारित और अनुभवात्मक शिक्षा–** भारतीय शिक्षा में हस्तशिल्प, कृषि, संगीत, युद्ध–कला, चिकित्सको व्यावहारिक रूप में सिखाया जाता था।
   आज की "Periential Learning" और Skill Education उसी का पुनरुद्धार है।
4. **मातृभाषा आधारित शिक्षा–** भारतीय परंपरा में शिक्षा हमेशा मातृभाषा में होती थी। आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी मातृभाषा–आधारित शिक्षा को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। NEP-2020 का यह प्रावधान भारतीय शिक्षा की मूल विरासत है।
5. **योग और आयुर्वेद का वैश्विक महत्व–** संपूर्ण विश्व आज योग और आयुर्वेद को स्वीकार कर रहा है।
   WHO us Global Centre for Tradition Medicine (भारत) स्थापित किया। योग दिवस ने योग को वैश्विक मान्यता दी। आधुनिक मेडिकल शिक्षा में Lifestyle Disease Management के रूप में योग का उपयोग बढ़ रहा है।
6. **सतत विकास और पर्यावरण शिक्षा–** भारतीय परंपरा "प्रकृति को पूज्य" मानती है। आधुनिक शिक्षा में Sustainable Development Goals (SDGs) इसी ज्ञान का आधुनिक स्वरूप हैं – जल–संरक्षण, जैव–विविधता, संतुलित उपभोग पर्यावरण–अनुकूल कृषि।
7. **चरित्र निर्माण और नैतिक शिक्षा का पुनर्स्थापन–** भारतीय शिक्षा में "विद्या ददाति विनयम" का सिद्धांत था। आज Character Education को आधुनिक पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनाया जा रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का दार्शनिक आधार

नीति का आधार चार स्तंभों पर है –

1. **एकात्म मानववाद**– भारत की शिक्षा मानव–केंद्रित होनी चाहिए, जो आत्मनिर्भर, नैतिक, संवेदनशील और सृजनशील नागरिक तैयार करे।
2. **ज्ञान–विज्ञान एवं संस्कृति का समन्वय**– आधुनिक विज्ञान और पारंपरिक भारतीय ज्ञान दोनों मिलकर नई शिक्षादृदृष्टि बनाते हैं।
3. **समावेशी और सहभागी शिक्षा**– हर वर्ग, भाषा और संस्कृति को सम्मान देते हुए शिक्षा को लोकतांत्रिक बनाना।
4. **21वीं सदी के कौशल**– आलोचनात्मक चिंतन, समस्या समाधान, नवाचार, उद्यमिता, डिजिटल कौशल और अनुसंधान क्षमता का विकास।

NEP–2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख प्रावधान

1. **भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) के लिए विशिष्ट प्रकोष्ठ–** NEP ने Indian Knowledge Systems (IKS) का गठन किया है, जो–

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

- वैदिक गणित, आयुर्वेद, योग भारतीय दर्शन भारतीय भाषाएँ
- लोकदृज्ञान
- पारंपरिक कृषि एवं जल–प्रबंधन
- आदि को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करता है।

2. **शिक्षा में मातृभाषा– आधारित शिक्षण–** भारतीय ज्ञान परंपरा को समझने के लिए मातृभाषा का महत्त्व स्पष्ट किया गया है। कक्षा 5 तक (और यथासंभव 8 तक) शिक्षा मातृभाषा में देने का प्रस्ताव इसी दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।
3. **कला–एकीकरण एवं खेल–आधारित शिक्षा–** भारतीय कला–संस्कृति जैसे –शास्त्रीय संगीत, नृत्य, लोक–कला, हस्तशिल्प, योग–ध्यान को शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा बनाया गया है।
4. **प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालय मॉडल का पुनरुद्धार–** नालंदा–तक्षशिला जैसी बहु–विषयक शिक्षा की परंपरा को आधुनिक रूप देकर बहुविषयक विश्वविद्यालय, क्रेडिट बैंक, मल्टीपल एंट्री–एग्जिट सिस्टम लागू किए गए हैं।
5. **योग, आयुर्वेद और जीवन–कौशल**– योग को स्वास्थ्यदृशिक्षा का अनिवार्य घटक बनाया गया है। आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी आदि चिकित्सा परंपराओं को अनुसंधान कार्यक्रमों से जोड़ा गया है।
6. **स्थानीय एवं आदिवासी ज्ञान**– लोकदृपरंपराओं, जातीय संस्कृति, औषधीय ज्ञान, वनोपज ज्ञान, कृषिदृपद्धतियों जैसे क्षेत्रों को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा की आधुनिक समय में प्रासंगिकता

1. **समग्र शिक्षा की आवश्यकता–** आज की शिक्षा केवल रोजगार देने वाली नहीं हो सकती; उसे नैतिकता, संवेदना, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानसिक स्वास्थ्य को भी साथ लेकर चलना होगा। भारतीय ज्ञान परंपरा यही करती है।
2. **वैज्ञानिक और तकनीकी योगदान**– वैदिक गणित प्रतियोगी परीक्षाओं और इंजीनियरिंग में अत्यंत उपयोगी है। आयुर्वेद और योग वैश्विक चिकित्सा में मान्यता पा रहे हैं। पर्यावरण–अनुकूल भारतीय कृषि पद्धतियाँ सतत विकास में प्रासंगिक हैं।
3. **वैश्विक स्तर पर भारतीयता का उभार**– योग दिवस, आयुर्वेद, भारतीय व्याकरण, ज्योतिष–गणित आदि क्षेत्रों में पूरी दुनिया भारत की ओर देख रही है। NEP–2020 भारत को "ग्लोबल नॉलेज हब" के रूप में स्थापित कर सकती है।
4. **मानसिक स्वास्थ्य और चरित्र निर्माण**– योग, ध्यान, नैतिक शिक्षा, उपनिषदों की शिक्षाएँ युवा पीढ़ी में तनाव प्रबंधन, आत्मविश्वास, अनुशासन, भावनात्मक संतुलन जैसे गुण विकसित करती हैं।
5. **आत्मनिर्भर भारत के संदर्भ में**– भारतीय हस्तकला, पारंपरिक ज्ञान, ग्राम–शिल्प, स्थानीय कला और उद्यमिता को शिक्षा से जोड़कर रोजगार और अर्थव्यवस्था मजबूत हो सकती है।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

चुनौतियाँ

हालाँकि NEP–2020 में भारतीय ज्ञान–परंपरा को पुनर्जीवित करने के व्यापक प्रावधान हैं, लेकिन कुछ चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं –

1. शिक्षक–प्रशिक्षण की कमी
2. नीति के विभिन्न राज्यों में असमान अनुपालन
3. पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक ढाँचे में पुनरूस्थापन की आवश्यकता
4. आधुनिक तकनीक और पारंपरिक ज्ञान का संतुलित समन्वय
5. पर्याप्त शोध संसाधनों की कमी

इन चुनौतियों के समाधान हेतु केंद्र–राज्य सरकारों, विश्वविद्यालयों और समाज को संयुक्त प्रयास करने होंगे।

समाधान एवं सुझाव

1. **भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) शोध–केंद्रों का विस्तार–** भारत के प्रत्येक विश्वविद्यालय में भारतीय ज्ञान परंपरा पर अनुसंधान केंद्र स्थापित किए जाएँ।
2. पाठ्यपुस्तकों का भारतीयकरण स्कूल–स्तर पर इतिहास, साहित्य, विज्ञान, गणित आदि विषयों में भारतीय योगदान स्पष्ट रूप से शामिल किया जाए।
3. **स्थानीय ज्ञान के संवाहक समुदायों से साझेदारी** – आदिवासी, ग्रामीण और कारीगर समुदायों के पारंपरिक कौशल को शिक्षा में जोड़ा जाए।
4. **डिजिटल सामग्री और तकनीकी उपकरण**– भारतीय ज्ञान को ई–लर्निंग, वर्चुअल लैब, ऑडियो–वीडियो सामग्री के रूप में उपलब्ध कराया जाए।
5. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचार–प्रसार, योग, आयुर्वेद, संगीत, नाट्यदृशास्त्र, संस्कृत आदि को अंतरराष्ट्रीय पाठ्यक्रमों में शामिल करने पर कार्य किया जाए।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित करने की ऐतिहासिक पहल है। यह शिक्षा को केवल नौकरी–उन्मुख प्रणाली से हटाकर समग्र, मूल्य–आधारित, विज्ञान–संगत और सांस्कृतिक आधार प्रदान करती है। भारत की प्राचीन विद्या–परंपरा आधुनिक युग में भी वैज्ञानिक, तर्कसंगत और नीति–निर्माण की दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक है। यदि NEP-2020 का पूर्ण और प्रभावी क्रियान्वयन हो सके तो भारत पुनः "विश्वगुरु" की अपनी ऐतिहासिक भूमिका निभा सकता है।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

संदर्भ ग्रंथ–सूची (Reference Bibliography)

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

2. "भारतीय ज्ञान परंपरा और शिक्षा" , इग्नू प्रकाशन, नई दिल्ली।

3. शर्मा, ओमप्रकाश (2018). भारत का ज्ञान–विज्ञान इतिहास, प्रयाग प्रकाशन।

4. शास्त्री, सूर्यकांत (2015). भारतीय दर्शन का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास।

5. डॉ. कपिल कपूर (2020). इंडियन नॉलेज सिस्टम्स, आईआईटी खड़गपुर।

6. पाणिनि, अष्टाध्यायी, संस्कृत साहित्य परिषद।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Role of Indian Knowledge Systems and Technology in NEP 2020

[1]Reval Singh Kharat and [2]Dr. Vinay Gore

[1]Assistant Professor of Physics, PMCoE S.B.N. Govt. P. G. College, Barwani (M.P.)

[2]Assistant Librarians, PMCoE S.B.N. Govt. P. G. College, Barwani (M.P.)

Abstract- The National Education Policy (NEP) 2020 marks a transformative moment in India's educational history, aiming to create a system that is rooted in Indian ethos while being future-ready and globally competitive. A core guiding principle of the policy is the integration of the rich heritage of ancient and eternal Indian knowledge and thought into the mainstream curriculum. Concurrently, the policy advocates for robust technological integration to enhance accessibility, quality, and pedagogical effectiveness. This paper examines the synergistic role of IKS and technology in achieving the holistic development goals of NEP 2020. It argues that by leveraging technology for the documentation, dissemination, and interdisciplinary application of IKS, the policy can bridge the gap between traditional wisdom and modern scientific inquiry. Challenges such as teacher training, resource development, and the risk of pseudoscience are discussed, and a roadmap for a balanced, inclusive, and sustainable educational ecosystem is proposed.

Keywords: Indian Knowledge Systems (IKS), National Education Policy (NEP) 2020, Technology in Education, Holistic Development, Interdisciplinary Learning, Sustainable Practices, Teacher Training.

1.Introduction

The National Education Policy (NEP) 2020, approved by the Union Cabinet of India in July 2020, envisions a comprehensive overhaul of the existing education system. Departing from the previous policy of 1986, the NEP 2020 focuses on moving from rote learning to critical thinking, creativity, and a deep-rooted sense of cultural pride. A significant aspect of this vision is the explicit call for the integration of the Indian Knowledge Systems into the formal educational framework across all levels of learning, from school to higher education. Indian Knowledge Systems encompasses diverse indigenous intellectual traditions and contributions in fields such as mathematics, science, medicine, astronomy, and the arts. The policy aims to revitalize this heritage to address contemporary challenges and foster appreciation for India's intellectual contributions. NEP 2020 also emphasizes the vital role of technology in transforming education. The combination of IKS and technology can create an education system that is relevant locally and competitive globally. This paper explores how this integration can be achieved, including opportunities and challenges

2.Objectives

i. To analyze the role of Indian Knowledge System in NEP 2020.

ii. To examine how modern technology supports the dissemination of IKS.

iii. To study case examples of successful integration.

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

iv. To compare traditional and modern approaches in education.

v. To provide recommendations for effective implementation.

3. Methodology

The nature of this study is descriptive, utilizing an exploratory methodology. Data were sourced from secondary materials, such as journals and articles available in both online and offline formats from a range of newspapers and websites.

i. Qualitative Research: Review of NEP 2020 documents, policy papers, and scholarly articles.
ii. Comparative Analysis: Traditional vs. modern educational practices.
iii. Case Study Method: Institutions implementing IKS with modern technology.
iv. Data Sources: Government reports, UGC guidelines, journals, and online educational platforms.

4. Review of Literature

The National Education Policy (NEP) 2020 marks a significant reform in India's education system, highlighting the inclusion of Yoga, Sanskrit, and traditional arts to preserve cultural heritage and promote holistic learning (Government of India, 2020). This emphasis reflects the policy's vision of integrating Indian Knowledge Systems (IKS) into mainstream education. Scholars argue that IKS provides an ethical grounding and holistic development, fostering values, critical thinking, and cultural identity among learners (Sharma, 2021; Mishra, 2022). Such integration is seen as vital for balancing modern scientific knowledge with traditional wisdom.

Parallelly, research on technology in education underscores the transformative role of digital platforms. Studies demonstrate that technology enhances accessibility, engagement, and personalized learning, particularly in higher education and remote learning contexts (Kumar &Singh, 2021; Patel, 2023). The pandemic further accelerated digital adoption, showcasing its potential to democratize education and bridge geographical divides.

Despite these advancements, a notable gap remains in empirical studies exploring the integration of IKS with modern technology. Current literature often treats cultural preservation and digital innovation separately, with limited focus on their intersection. Future research must investigate how traditional knowledge can be digitized and blended with contemporary pedagogical tools to realize NEP 2020's vision of inclusive and sustainable education.

5. The Mandate for Indian Knowledge Systems in NEP 2020

NEP 2020 includes Indian Knowledge Systems to promote a holistic and interdisciplinary approach. Key reasons for this integration are

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

i. Cultural Identity and Pride: Students can develop a strong sense of cultural identity and appreciation for ancient Indian thinkers.
ii. Holistic and Multidisciplinary Learning: Indian Knowledge Systems aligns with the policy's emphasis on multidisciplinary education, integrating knowledge from various fields.
iii. Sustainability and Ethical Reasoning: Traditional Indian knowledge often emphasizes harmony with nature and sustainable practices, which can foster environmental consciousness and ethical reasoning.
iv. Addressing Contemporary Problems: Principles from IKS can offer alternative solutions to modern problems in areas like health and agriculture.

6. The Role of Technology in Integrating Indian Knowledge Systems

Technology is crucial for integrating Indian Knowledge Systems (IKS) by digitizing, preserving, and disseminating traditional knowledge through tools like AI, machine translation, and online platforms. AI can analyze ancient texts and identify patterns, while blockchain ensures the authenticity of digitized manuscripts. Digital tools and virtual simulations enhance learning, making IKS more accessible to a global audience and modernizing education by creating interactive and culturally grounded experiences.

Digitization and preservation:

i. AI for analysis: Artificial Intelligence can help decipher ancient scripts, interpret complex texts, and find patterns in areas like Vedic mathematics and astronomy.
ii. Digital archives: Creating digital libraries and online platforms makes IKS resources accessible to a global audience, preserving them for future generations.
iii. Blockchain for authenticity: Blockchain technology can create an immutable ledger to prevent tampering and preserve the credibility of digitized manuscripts and knowledge.

Dissemination and accessibility:

i. Machine translation: AI-powered translation tools can make ancient texts and philosophical concepts available in modern languages.
ii. Virtual learning: Virtual reality, online platforms, and multimedia materials expand the reach of IKS education, especially to remote or underdeveloped areas.
iii. AI assistants: Chatbots and virtual assistants can provide explanations and interpretations of complex concepts from ancient texts, aiding in learning and understanding.

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

Enhancing education and research:

i. Interactive learning: Combining Information and Communication Technology (ICT) with IKS fosters experiential learning by incorporating ancient wisdom into modern educational frameworks.

ii. Bridging the gap: Technology helps bridge the gap between traditional knowledge and modern research by providing tools for systematic categorization and study.

iii. Personalized learning: AI-powered tools can create personalized learning experiences that cater to individual student needs while incorporating IKS principles.

7. Integrating IKS and technology faces challenges and considerations:

Integrating Indigenous Knowledge Systems (IKS) with technology faces challenges including a lack of standardized frameworks, insufficient funding and resources, resistance to change, and a shortage of trained faculty. Additionally, IKS is often transmitted orally, making it difficult to document, and conventional Western-based assessment methods are not suited for evaluating its qualitative and holistic nature.

i. Curriculum and standardization: There is a lack of structured frameworks and standardized curricula for IKS, as the current education system is often shaped by Western paradigms that prioritize empirical science.

ii. Faculty and resources: Educational institutions face a shortage of faculty trained in IKS and lack appropriate pedagogical tools and resources, such as written records, to teach it effectively.

iii. Assessment and pedagogy: Existing assessment methods are poorly suited for Indian Knowledge Systems, which often involve experiential learning and qualitative outcomes rather than quantitative, evidence-based metrics.

iv. Resistance and awareness: Resistance to change is common, often stemming from a continued dominance of Western curricula and a general lack of awareness about IKS and its significance among academics and administrators.

v. Documentation and language: Much of Indian Knowledge Systems is transmitted orally, leading to a lack of documented knowledge. Language barriers also exist, as many traditional IKS concepts are conveyed through Indian languages.

vi. Funding and policy: Limited policy support and insufficient funding constrain the institutionalization and implementation of Indian Knowledge Systems in educational settings.

vii. Epistemological Resistance and Bias: Potential resistance exists from an academic system influenced by Western epistemologies. Maintaining scholarly rigor and critical inquiry is crucial.

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

viii. Risk of Pseudoscience: There is a concern that without critical analysis, pseudoscience could be promoted. A scientific approach emphasizing empirical evidence is vital.

ix. Teacher Preparedness: Many educators lack access to primary sources and training in classical languages. Technology-supported training programs are needed.

x. Accessibility and Infrastructure: Effective technology use requires robust digital infrastructure and equitable access, especially in remote areas.

8. Conclusion

NEP 2020's vision for Indian education involves the integration of Indian Knowledge Systems with modern technology. This combination can create a more inclusive, sustainable, and culturally relevant education system that promotes holistic development and addresses contemporary challenges. Technology is a key tool for documenting, researching, and disseminating IKS, making it accessible to today's learners. Successful integration requires a systematic approach, including curriculum reforms, teacher training, institutional support, and a commitment to critical inquiry. By bridging traditional wisdom and modernity, India can nurture future generations who are culturally grounded and globally competent. This effort seeks not only to safeguard India's rich cultural heritage but also to improve the educational environment, ensuring it aligns with the goals of the 21st century while respecting historical traditions.

9. References

1. Ministry of Education, Government of India. (2020). National Education Policy 2020.
2. Baral, S. (2024). Proposed solutions for the implementation of IKS in modern education. Advances in Consumer Research.
3. Bhat, I. A. (2024). theacademic.in
4. Chandel, N., & Prashar, K. K. (2024). Indian knowledge system and NEP: A brief analysis. International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research.
5. Gond, M. (2025). The Indian Knowledge System and indigenous pedagogies: A transformative framework for cultural continuity and academic innovation. IUJ Journal of Management.
6. Jain, A., & Jain, S. (2025). Scientific Approach to the Indian Knowledge System and NEP 2020. International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends.
7. Ministry of Human Resource Development (MHRD). Advantages for integrating IKS in modern education.
8. Rajpoot, B., & Prof. (2025). IKS and NEP 2020: A pathway to holistic and future-ready teacher education. ResearchGate.
9. Sharma, A., & Singh, R. (2024). Exploring the role of NEP-2020 in the Indian knowledge system. New Delhi Publishers.

10. Singh, V. K., & Saxena, A. (2025). Integrating Indian Knowledge Systems (IKS) in education: Enhancing problem-solving abilities through innovative pedagogies aligned with NEP 2020. ResearchGate.
11. Sudhakar, K. (2024). GRT Journal of Education, Science and Technology
12. The National Academy of Sciences, India (NASI). (2022). Integration of IKS and ILs in Indian education through NEP 2020. Central Sanskrit University.
13. Mamgain, R. (2025). Implementing NEP 2020 Recommendations: Promoting the Indian Knowledge System. Integrated Journal for Research in Arts and Humanities, 5(3), 135–140: Focuses on implementing NEP 2020 recommendations for promoting IKS.
14. Sharma, P., & Mishra, N. (2022). [Source not provided]: Discusses the promotion of Indian knowledge systems and their integration into NEP 2020 to instill values like integrity, honesty, humility, and self-reliance.
15. Kumar, S. & Kishor, K. (2024). Exploring the Role of NEP-2020 in the Indian Knowledge System. New Delhi Publishers: Examines how NEP 2020 promotes multilingualism and experiential learning to create an inclusive educational ecosystem.
16. Singh, R. (2024). Indian Knowledge System and National Education Policy (NEP) 2020. ResearchGate: Discusses the integration of IKS and technology in NEP 2020, emphasizing its role in nurturing creativity and cultural upliftment.
17. Agrawal, R. (2025). Indian Knowledge System (IKS) and National Education Policy (NEP) 2020.

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता

डॉ. राजमलसिंह राव

सहायक प्राध्यापक वनस्पति विज्ञान

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस शहीद भीमा नायक शासकीय पीजी कॉलेज बडवानी मप्र

शोध सारांश– भारत विश्व गुरु था, है, और रहेगा भारत की विश्व में पहचान यहाँ के महान वेद, उपनिषद एवं पुराणों, भारतीय जीवन दर्शन, स्मर्तियाँ, संस्कृति एवं परम्पराओ के साथ सम्रर्ध प्राकृतिक संसाधनों से है राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 डॉ. के. कस्तूरीरंगन समिति ने प्रस्तावित किया यह नई शिक्षा नीति भारत में चल रही पुरानी शिक्षा नीति 1986 जिसे 1992 में संशोधित किया गया है प्रतिस्थापित कर अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 रहेगी, जो आधुनिकता एवं कौशल भारतीय विज्ञान एवं परम्पराए, एवं विकास से परिपूर्ण है, जबकि पुरानी 1986 की शिक्षा नीति परम्परागत थी उसमे आधुनिकता का अनुमान का आभाव था, प्राचीन भारत में शिक्षा का लक्ष्य सांसारिक जीवन अथवा स्कुल के बाद के जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञान अर्जन नहीं बल्कि पूर्ण आत्म–ज्ञान और मुक्ति के रूप में माना गया था। तक्षशिला नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी जैसे प्राचीन भारत के विश्व–स्तरीय संस्थानों ने अध्ययन के विविध क्षेत्रो में शिक्षण और शौध के ऊंचे प्रतिमान स्थापित किये थे और विभिन्न प्रष्ठभूमि और देश से आने वाले विद्यार्थियो और विद्वानों को लाभावित किया था । इसी शिक्षा व्यवस्था ने चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त, चाणक्य, चक्रपाणी दत्ता, माधव, पाणिनि, पतंजली, नागाअर्जुन, गौतम, पिंगला, शंकरदेव, मैत्रेयी गार्गी और थीरुवल्लुवर जैसे अनेकों महान विद्वानों को जन्म दिया। इन विद्वानों ने वैश्विक स्तर पर ज्ञान के विविध क्षेत्रो, जैसे गणित, खगोलविज्ञान, धातु विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान और सल्य चिकित्सा और सिविल इंजीनियरिंग, भवन निर्माण, नौकायान–निर्माण और दिशा ज्ञान, योग ललित कला, शतरंज इत्यादि में प्रमाणिक रूप से मोलिक योगदान किये। भारतीय संस्क्रति एवं दर्शन का विश्व में बडा प्रभाव रहा है। वैश्विक महत्व की इस सम्रध्ध विरासत को आने वाली पीड़ियों के लिए न शिर्फ़ सहेज कर संरक्षि रखने की जरूरत है

प्रस्तावना

भारत सांस्कृतिक रूप से एक समृद्धशाली देश है जिसकी ज्ञान परंपरा का देश की सांस्कृतिक संरक्षण एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही है भारतीय ज्ञान परंपरा में वेद उपनिषद स्मृति दर्शन शास्त्र धर्मशास्त्र अर्थशास्त्र शिक्षा शास्त्र आदि का विशाल ज्ञान तत्व समाहित है हमारे ज्ञान परंपरा भारतीय जनसंख्या को मानव पूंजी के रूप में परिवर्तित करने मे सहायक रही है जिसमें देश के संपूर्ण विकास में महत्वपूर्ण योगदान मिलता रहा है इसके विपरीत आधुनिक प्रौद्योगिकी कंप्यूटर और नेटवर्किंग के माध्यम से इसके उपयोगकर्ताओं को उन्नत उपकरण और ज्ञान प्रदान करता रहा है जिससे हमारे कार्य में दक्षता और सटीकता में बढ़ोतरी हो रही है इसी क्रम में हमारी प्रौद्योगिकी शिक्षा को और अधिक रोचक और प्रभावी बना रहा है जिससे शिक्षकों और छात्रों दोनों को लाभ हो रहा है तकनीकी मदद से हमारे शिक्षक व्यक्तिगत पाठ योजनाएं बना रहे हैं और

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

छात्र ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग करके अपने शैक्षणिक गति में से आत्मनिर्भर हो रहे हैं जब भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक प्रौद्योगिकी का संयोजन होता है तो यह शिक्षा के उद्देश्य की प्राप्ति को और अधिक आसान और प्रभावी बना देता है प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षण कार्य को अधिक सुलभ आकर्षक और गतिशील बनाए जा सकता है जिसे जहां एक तरफ समाज के सकारात्मक परिवर्तन और दूसरी तरफ शिक्षण प्रक्रिया को आधुनिक एवं सुव्यवस्थित किया जा सकता है

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 को डॉ. के. कस्तूरीरंगन समिति ने प्रस्तावित किया था। इस समिति का गठन मानव संसाधन विकास मंत्रालय (अब शिक्षा मंत्रालय) द्वारा जून 2017 में किया गया था और इसने मई 2019 में अपनी रिपोर्ट सौंपी थी। यह समिति इसरो के पूर्व अध्यक्ष डॉ. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में बनाई गई थी। समिति ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मसौदा तैयार किया, जो 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का स्थान लेती है। श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने इस अवसर पर संबोधित करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सफल क्रियान्वयन के पांच वर्ष पूर्ण होने पर सभी देशवासियों, और विशेषकर युवा साथियों को अनेकों शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि एनईपी 2020 माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की उस परिवर्तनकारी कल्पना को दर्शाता है, जिसमें उन्होंने शिक्षा को भारत के विकास की गाथा का केन्द्र बिंदु बनाया है। उन्होंने यह भी कहा कि विकसित भारत 2047 के हमारे सपने की दिशा में आगे बढ़ने के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति हमारा राष्ट्रीय मिशन है। उन्होंने कहा कि पिछले 5 वर्षों में हम एनईपी 2020 को शिक्षा प्रणाली में एक प्रतिमान परिवर्तन के साथ कक्षाओं, कैम्पसों और समुदाय तक पहुंचाने में सफल हुए हैं। उन्होंने कहा कि भारतीयता ही एनईपी 2020 का मूल मंत्र है। वैज्ञानिक शिक्षा, नवाचार, अनुसंधान, भारतीय ज्ञान परंपरा, भारतीय भाषाओं को केन्द्र में रखते हुए हम शिक्षा को राष्ट्र निर्माण के वृहद उद्देश्य से जोड़ रहे हैं। 21वीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश का विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। यह नीति भारत की परंपरा और सांस्क्रतिक मूल्यों के आधार को बरक़रार रखते हए, 21वीं सदी की शिक्षा के लिए आकांक्षात्मक लक्ष्यों जिसमे एसडीजी 4 शामिल हैं, के संयोजन में शिक्षा व्यवस्था, उसके नियमन और गवनेंस सहित, सभी पक्षों के सुधार और पुनर्गठन का प्रस्ताव रखती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमताओं के विकास पर विशेष जोर देती है। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति इस सिधांत पर आधारित है की शिक्षा से न केवल साक्षरता और संख्याज्ञान जैसी 'बुशनयादी क्षमताओं' के साथ–साथ उच्चतर स्तर की तार्किक और समस्या–समाधान संबंधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होना चाहिए बल्कि नैतिक सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास होना आवश्यक है। प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समर्धि परंपरा के आलोक में यह नीति तैयार की गयी है। ज्ञान, प्रज्ञा और सत्य की खोज को भारतीय विचार परंपरा और दर्शन में सदा सर्वोच्च मानवीय लक्ष्य माना जाता था। प्राचीन भारत में शिक्षा का लक्ष्य सांसारिक जीवन अथवा स्कुल के बाद के जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञान अर्जन नहीं

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

बल्कि पूर्ण आत्म–ज्ञान और मुक्ति के रूप में माना गया था। तक्षशिला नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी जैसे प्राचीन भारत के विश्व–स्तरीय संस्थानों ने अध्ययन के विविध क्षेत्रो में शिक्षण और शौध के ऊंचे प्रतिमान स्थापित किये थे और विभिन्न प्रष्ठभूमि और देश से आने वाले विद्यार्थियो और विद्वानों को लाभावित किया था । इसी शिक्षा व्यवस्था ने चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त, चाणक्य, चक्रपाणी दत्ता, माधव, पाणिनि, पतंजली, नागाअर्जुन, गौतम, पिंगला, शंकरदेव, मैत्रेयी गार्गी और थीरुवल्लुवर जैसे अनेकों महान विद्वानों को जन्म दिया।

उपरोक्त समस्त विद्वानों ने वैश्विक स्तर पर ज्ञान के विविध क्षेत्रो, जैसे गणित, खगोलविज्ञान, धातु विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान और सल्य चिकित्सा और सिविल इंजीनियरिंग, भवन निर्माण, नौकायान–निर्माण और दिशा ज्ञान, योग ललित कला, शतरंज इत्यादि में प्रमाणिक रूप से मोलिक योगदान किये। भारतीय संस्क्रति एवं दर्शन का विश्व में बडा प्रभाव रहा है। वैश्विक महत्व की इस सम्रध्ध विरासत को आने वाली पीड़ियों के लिए न शिर्फ़ सहेज कर संरक्षि रखने की जरूरत है बल्कि हमारी शिक्षा व्यवस्था द्वारा उस पर शौध कार्य होने चाहिए, उसे और समृद्ध किया जाना चाहिए और नए–नए उपयोग भी सोचे जाने चाहिए।

पुरानी शिक्षा नीति

शिक्षा पर पिछली शिक्षा नीतियों का जोर मुख्य रूप से शिक्षा तक पहुंचे के मुद्दों पर था 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति जिसे 1992 में संशोधित किया गया था इसके अधूरे काम को इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति के द्वारा पूरा करने का भरपूर प्रयास किया गया है पिछली शिक्षा नीति के बाद से एक बड़ा कदम निशुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009 रहा है जिसने सार्वभौमिक प्रारंभिक शिक्षा सुलभ कराने हेतु कानूनी आधार उपलब्ध करवाया है|

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का विजन

इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का विजन भारतीय मूल्य से विकसित शिक्षा प्रणाली है जो सभी को उच्चतर गुणवत्ता शिक्षा उपलब्ध कराके और भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनकर भारत को एक जीवन और न्यायसंगत ज्ञान समझ में बदलने के लिए प्रत्यक्ष रूप से योगदान करेगी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में परिकल्पित है कि हमारे संसाधनों की पाठ्यचर्या और शिक्षण विधि छात्रों में अपने मौलिक दायित्व और संवैधानिक मूल्य देश के साथ जुड़ाव और बदलते विश्व में नागरिक की भूमिका और उत्तरदायित्वों की जागरूकता उत्पन्न करें नीति का विजन छात्रों में भारतीय होने का गर्व न केवल विचारों से बल्कि व्यवहार बुद्धि और कार्यों में भी और साथ ही ज्ञान कौशल मूल्य और सच में भी होना चाहिए जो मानव अधिकारों स्थाई विकास और जीवन यापन तथा वैश्विक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हो ताकि वह सही मायने में वैश्विक नागरिक बन सके सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को अनिवार्य रूप से रूपांतरित करने में तेजी से उभरती परिवर्तनशील प्रौद्योगिकी पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है जब 1986 1992 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाई गई थी तब इंटरनेट के वर्तमान क्रांतिकारी प्रभावों का अनुमान

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

लगाना कठिन था हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली की इन तीव्र और युगांतरकारी परिवर्तनों का सामना करने की असमर्थता की तेजी से प्रतिस्पर्धी होती दुनिया में हमें व्यक्तिगत रूप से और एक राष्ट्र के रूप में खतरनाक और हानिकारक स्थिति की वह ले जा रही है उदाहरण के लिए आज जब कंप्यूटर ने यथनात्मक और प्रक्रियात्मक ज्ञान के मामले में मनुष्य को काफी पीछे छोड़ दिया है तब भी हमारी शिक्षा व्यवस्था उच्चतर स्तर की दक्षताओं के विकास के स्थान पर अपने विद्यार्थियों पर शिक्षक के सभी स्तरों पर ऐसे ज्ञान का अत्यधिक बोझ डालती रहती है इस नीति को ऐसे समय में तैयार किया गया है जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस 3D 7d वर्चुअल रियलिटी जैसे निश्चित परिवर्तनकारी प्रौद्योगिकी का अवकाश रहा है जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित पूनम मानव की लागत कम होती जाएगी वैसे–वैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता कुशल पेशेवरों की बराबरी करने लगेगी वह उनसे भी आगे निकल जाएगी और डॉक्टर जैसे अन्य पेशवारों के लिए पूर्व अनुमान लगाने के कामों में मूल्यवान सहायक सिद्ध होगी ए की परिवर्तन ला पानी की क्षमता स्पष्ट है कि जिस पर त्वरित प्रतिक्रिया के लिए शिक्षा व्यवस्था को तैयार रहना होगा |

भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता

समग्र शिक्षा का विकास: एनईपी– 2020 का लक्ष्य पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणालियों को आधुनिक शिक्षा के साथ जोड़कर एक अधिक समग्र और संतुलित शैक्षिक मॉडल बनाना है।

सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों का संरक्षण: नीति भारतीय भाषाओं, संस्कृत और पारंपरिक मूल्यों को महत्व देती है, ताकि विद्यार्थियो में सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक विकास हो सके।

रचनात्मक और विश्लेषणात्मक सोच को बढ़ावा: यह सिर्फ अंकों तक सीमित रहने के बजाय, छात्रों को रचनात्मक और चिंतनशील बनाने पर जोर देती है, जो भारतीय ज्ञान की एक महत्वपूर्ण विशेषता है।

आधुनिक चुनौतियों के समाधान: भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतों को आधुनिक चुनौतियों, जैसे कि पर्यावरणीय मुद्दों या सामाजिक असमानता से निपटने के लिए एक अधिक दयालु और समग्र दृष्टिकोण प्रदान करने के लिए एकीकृत किया जाएगा।

विविध ज्ञान प्रणालियों को शामिल करना: नीति ने भारतीय ज्ञान परंपरा को केवल ग्रंथों तक सीमित न रखकर, इसमें विज्ञान, गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा और कला जैसे विभिन्न क्षेत्रों को शामिल किया है।

लेखक परिचय– डॉ राजमलसिंह राव, सहायक प्राध्यापक (वनस्पति विज्ञान) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस शहीद भीमा नायक शासकीय पीजी कॉलेज बडवानी मप्र लेखक पूर्व में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020. मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल की पत्रिका नंदीघोष मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति क्रियान्वयन अवसर पर आलेख प्रस्तुत कर चुके है|

सन्दर्भ सूची

1. गिरीश्वर मिश्र (2020) नई शिक्षा नीति सम्भावना एवं चुनोतियाँ ISSN–2582–6530

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

2. भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ खंड 1
3. https://iks.iitgn.ac.in/wp-content/uploads/2016/01/Indian-Knowledge-Systems-Kapil-Kapoor.pdf
4. श्रीजीत दत्ता *द्वारा* नेतृत्व और रणनीति में *दंडनीति* और *राजधर्म* के सिद्धांतअग्नि (खंड XXIV, संख्या III) सितंबर-दिसंबर 2021 अंक
5. http://www.indianscience.org/index.html
6. भारत की पारंपरिक ज्ञान प्रणालियाँ
7. https://www.sanskritimagazine.com/india/traditional-knowledge-systems-of-india/
8. https://orientviews.wordpress.com/2013/08/21/how-colonial-india-destroyed-traditional-knowledge-systems/
9. https://www.thebetterindia.com/63119/ancient-india-science-technology/
10. https://orientviews.wordpress.com/2013/08/21/how-colonial-india-destroyed-traditional-knowledge-systems/
11. अर्थशास्त्र – राज्य कला और सैन्य रणनीति पर एक ग्रंथ
12. https://knowledgemerger.com/the-arthashastra/
13. 21 वीं सदी में अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता
14. http://www.Indiandefencereview.com/spotlights/relevance-of-arthashastra-in-the-21st-sensitive/
15. हेनरिक ज़िमर द्वारा भारत के दर्शन, रूटलेज और केगन पॉल लिमिटेड, 1952
16. आधुनिक युद्ध पर अर्थशास्त्र का प्रभाव
17. https://www.essaycompany.com/dissertations/history/kautilya
18. नई मार्चिंग धुनें, 1947 से पहले के युद्ध सम्मान नहीं – सशस्त्र बलों को और अधिक 'भारतीय' सम्मान मिलने की तैयारी
19. https://theprint.in/india/new-marching-tunes-no-more-pre-1947-battle-honours-armed-forces-set-to-get-more-indian/673013/

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020: भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक शिक्षा का समन्वय

प्रो. सीमा नाईक

सहायक प्राध्यापक, वनस्पतिशास्त्र

शासकीय कन्या महावि. बड़वानी (म.प्र.)

शोध सारः– राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020 में आधुनिक शिक्षा और प्राचीन ज्ञान परम्परा का समन्वय कर शिक्षा को व्यवहारिक, संतुलित और समृद्धशाली संस्कृति के आधार क रूप में विकसीत किया गया है राष्ट्रिय शिक्षा नीति का उद्देश्य छात्रों में आधुनिक विज्ञान, नवाचार, वैश्विक कौशल और तकनिकी के साथ–साथ भारतीय ज्ञान परम्परा के विषय जैसे दर्शन शास्त्र, योग, वैदिक गणित, आयुर्वेद, वेदो का अध्ययन, भाषा परम्परा और, नैतिक मूल्यों पर आधारित विषयों से छात्रों को परिचित कराना है राष्ट्रिय शिक्षा नीति के पाठ्यक्रमों में पर्यावरणीय चेतना, लोक ज्ञान और भारत की वेद संस्कृति को आधार बनाकर आधुनिक शिक्षा के सिद्धांतो को नवाचार के रूप में प्रस्तुत किया है इस प्रकार यह शिक्षा वर्तमान समय की आवश्यकताओं के अनुरूप होने के साथ–साथ अपने सांस्कृतिक मूल्यों से भी जुड़ी हुई है क्योंकि शिक्षा का मुल उद्देश्य न केवल छात्रों का सर्वांगीण विकास करना है वरन समाज का उत्थान एवं संस्कृतिक धरोहर का संरक्षण भी करना है।

प्रस्तावना

राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य भारत की शिक्षा प्रणाली को समग्र, बहुविषयी और कौशल आधारित बनाना है जिससे छात्र वर्तमान समय की आवश्यकताओं के अनुरूप ज्ञान और व्यवहारिक कौशल हासिल कर सके। यह शिक्षा नीति सभी को समान अवसर देने आधुनिक तकनीकि जैसे ऑनलाईन लर्निंग, कृत्रिम बुद्धि एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म के प्रयोग को प्रेरित करने एवं छात्रों मे रचनात्मकता, अन्वेषणात्मकता का विकास कर उन्हे सक्षक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है साथ ही राष्ट्रिय शिक्षा नीति आधुनिक शिक्षा के साथ–साथ छात्रों को उनकी सांस्कृतिक, नैतिक, और पारम्परिक जड़ से जुड़ने के अवसर भी प्रदान करती है क्योकि सांस्कृतिक और पारम्परिक ज्ञान को शिक्षा का मूल हिस्सा माना गया है जिसके द्वारा छात्र अपनी परम्पराओं इतिहास और अपनी देश की संस्कृति को समझ सके, एवं अपने व्यक्तित्व के निर्माण में भारतीयो परम्परा के मूल्यो का अनुप्रयोग कर सकेगें।

अर्थात राष्ट्रिय शिक्षा नीति छात्रों में एक ओर रचनात्मकता, आलोचनात्मक दृष्टिकोण, एवं व्यवहारिक कुशलता के साथ–साथ ज्ञान, शोध और तकनीकि के समन्वय से सीखने के लचिले अवसर प्रदान करती है वही दुसरी ओर भारतीय सांस्कृतिक विरासत एवं पारम्परिक ज्ञान को सहजने के लिए भी प्रेरित करती है। स्वामी विवेकानंद ने भी कहा है कि ''हमें

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

उस शिक्षा की आवश्यकता की जिसके द्वारा चरित्र निर्माण होता है मस्तिष्क की शक्ती बढ़ती ही बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरो पर खड़ा हो सकता है।

शब्द कुंजीः– राष्ट्रिय शिक्षा नीति, परम्परा, कौशल विकास, भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्य ।

राष्ट्रिय शिक्षा नीति में आधुनिक शिक्षा का समावेश

राष्ट्रिय शिक्षा नीति अंतर्राष्ट्रिय स्तर पर छात्रों को आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करते हुए अंतर्विषयक दृष्टिकोण एवं बहुविषयक शिक्षा माड्ल प्रस्तुत करती है साथ ही राष्ट्रिय शिक्षा नीति वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तार्किक विचार क्षमता एवं कौशल आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए व्यवसायिक प्रशिक्षण को समावेश कर छात्रों को स्वरोजगार हेतु प्रेरित करती है। इस तरह यह आत्मनिर्भर भारत की और एक कदम बढ़ाना है यह शिक्षा ज्ञान प्रणाली में नवाचार हेतु शोध और अनुसंधान को महत्व देती है इसके लिए नवीन बहुविषयक शोध कंद्रो को स्थापित करने की योजना बनाई गई है एवं शैक्षणिक पाठ्क्रम में गतिविधीयों तथा लघु शोध प्रबन्ध को समावेश किया गया है साथ ही छात्रों को सीखने के एक से अधिक अवसर प्रदान करने के लिए ऑनलाईन लर्निंग को मान्यता प्रदान की गई है इस हेतु डिजीटल प्लेटफॉर्म पर विभिन्न विषयों से संम्बधित नवीन पाठ्यक्रम बनाकर अपलोड किये गए है जिन्हें छात्र बिना किसी समय बाद्धयता के अपनी रूचि एवं समय उपलबद्धता के अनुसार सीख सकता है एवं नियमित पाठ्यक्रम के साथ–साथ अतिरिक्त ज्ञान प्राप्त कर सकता है इस तरह शिक्षा का डिजिटलीकरण कर । (कृत्रिम बोद्धिता) एवं आधुनिक तकनिकी के द्वारा ऑनलाईन लर्निंग प्रक्रिया को बढ़ावा दिया गया है। राष्ट्रिय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेशः– राष्ट्रिय शिक्षा नीति का उद्देश्य छात्रों को शैक्षणीक पाठ्क्रम तक सीमीत न रख कर उन्हे भारत की सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं से जोड़ना है भारतीय ज्ञान परम्परा, राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020 का मुख्य आधार है जो छात्रों को अपनी मातृभाषा, स्थानिय ज्ञान, रितीरिवाजों और परम्पराओं से परिचित करवाकर उनके संरक्षण एवं अनुप्रयोग के अवसर देती है इस तरह से छात्रों को अपने इतिहास को जानने एवं समझने का अवसर मिलता है एवं उनकी महत्ता के आधार पर वे ज्ञान परम्परा को अपनाने के लिए प्रेरित होते है।

भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व की सबसे समृद्ध और प्राचीन परम्परा मे से एक है यह परम्परा जीवन मुल्यो और स्वअनुशासन पर आधारित है इसका आधार हमारे प्राचीन ग्रंथ जैसे– वेद, उपनिषद, पुराण और दर्शन शास्त्र है जिनमें जीवन पद्धति के विभिन्न आयामों और नैतिक मूल्यों पर विस्तृत रूप से सरल शब्दों में कथाओं एवं सामान्य जीवन के उदाहरणों द्वारा व्याख्या की गई है राष्ट्रिय शिक्षा नीति में इन्ही जीवन मूल्यों पर आधारित भारतीय संस्कृती के सिद्धांतो और ज्ञान परम्परा के तथ्यो को शैक्षणिक पाठयक्रम में जोड़कर व्यवहारिक अनुप्रयोग के अवसर प्रदान किये गए है इस तरह छात्र भारत की समृद्ध संस्कृति, कला, भाषा एवं सांस्कृतिक विरासत से परिचित होता है जो छात्रों में अपनी संस्कृति एवं राष्ट्रियता से अनुराग विकसीत कर उनमें लोकतांत्रिक भावना, सेवा की भावना, दुसरो के लिए सम्मान, जैसे गुणो का विकास करती है।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

भारतीय मूल्यों जैसे सहयोग, धैर्य, सत्य और अहिंसा का शिक्षा में अनुप्रयोग छात्रों के चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है एवं छात्र अपनी संस्कृति और पारम्परिक ज्ञान को समझकर इसे आधुनिक संदर्भ में प्रयोग कर वैश्विक स्तर पर एक विशिष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। जो छात्रों को अधिक सक्षम बनाते है भारतीय ज्ञान परम्परा 'वसुधैव कुटुबकम' पर आधारित है एवं राष्ट्रिय शिक्षा नीति भी छात्रों को अपनी संस्कृती से जोड़कर विश्व नागरिक बनाने के लिए अवसर प्रदान करती है।

राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020 के नवीन पाठ्यक्रम समग्र शिक्षा पर आधारित है जिनका उद्देश्य छात्रों में ज्ञान और संस्कार का साथ–साथ पोषण करना है यहा पर छात्रों कि जिज्ञासा को प्रेरित कर अन्वेषणात्मक बुद्धि का विकास कर सृजनात्मक प्रतिभा का विकास करना है साथ ही छात्रों में प्रकृति बोध और नैतिकता का भाव जगाकर एक संवेदनशील नागरिक का निर्माण करना है।

राष्ट्रिय शिक्षा नीति में लोक परम्परा का संरक्षण

राष्ट्रिय शिक्षा नीति में भारत की लोक परम्पराओ को संरक्षित करने के लिए इन्हे शैक्षणिक पाठ्क्रम का हिस्सा बनाया गया है जैसेः– साहित्य, कला, नाटक, संगीत, चित्रकला आदि के पाठ्क्रम तैयार कर छात्रों में इन्हे अपनाने के लिए प्रेरक सत्रो का आयोजन कर इन्हे भी अन्य पाठ्यक्रम की तरह लोकप्रिय बनाने की योजना है साथ ही लुप्त प्रायः भाषा जैसे संस्कृत एवं स्थानिय भाषाओं को शैक्षणिक गतिविधियों में संप्रेषण के लिए अवसर प्रदान किये गये है एवं छात्रों को प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में प्राप्त करने की सूविधा दि गई है जिससे छात्र स्थानिय और क्षेत्रिय ज्ञान प्रणाली को अपने शिक्षण में शामिल कर सकेंगे।

राष्ट्रिय शिक्षा नीति एवं भारतीय ज्ञान परम्परा का समन्वय

राष्ट्रिय शिक्षा नीति के अन्तर्गत पारम्परिक भारतीय पाठ्यक्रम जैसे गणित, आयुर्वेद, योग, वास्तुकला, धातुकर्म, को शामिल किया गया है जिसका उददेश्य पारम्परिक भारतीय शिल्प और स्वदेशी कौशल को पुर्नजीवित कर कौशल आधारित शिक्षा को प्रेरित करना है साथ ही इसमें नवाचार एवं शोध को प्रेरित करने के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा केन्द्रो की स्थापना और भारतीय विधा भवन जैसे भारतीय संस्थानों को सक्षक्त बनाने की योजना दी गई है इस प्रकार पारम्परिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान को समाहित कर समग्र शिक्षा (Integrated Learning) के महत्व को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रतिपादित किया गया है ।

साथ ही भारतीयों ग्रंथो और शास्त्रो, जैसे रामचरित मानस, श्रीमद् भगवत गीता, वेद, उपनिषेद, और महाभारत जैसे शास्त्रों से लिए गए उदाहरणों और ज्ञान को शिक्षण विषयों जैसे भाषा, कला, विज्ञान आदि में संमावेशित कर एक बहुविषयक दृष्टिकोण अपनाया गया है जिससे भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक विज्ञान में समन्वय हो सके। इसके अतिरिक्त भारतीय

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

पारम्परिक चिकित्सा कौशल जैसे आयुर्वेदिक चिकित्सा, पारम्परिक चिकित्सा प्रणाली एवं योग को आधुनिक चिकित्सा के साथ बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाए प्रस्तावित कि गई है जिसके द्वारा पारम्परिक चिकित्सा को विस्तारित क्षेत्र देने के साथ–साथ उनमे अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के भी प्रावधान है इस तरह राष्ट्रिय शिक्षा नीति भारत की समृद्ध बौद्धिक विरासत को संरक्षित करते हुए विश्व पटल पर शैक्षिक परिदृश्य में एकीकरण के सिद्धांत को प्रशस्त करती है। और यह छात्रों को भारत की विविध संस्कृति और समृद्धशाली परम्परा एवं रितिरीवाजों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने के अवसर प्रदान करती है, एवं आधुनिक विज्ञान के विकास में भारतीय ज्ञान परम्परा के महत्व को बताती है।

उपसंहार

राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020 आधुनिक समय की आवश्यकताओं के अनुसार विधार्थियों को तैयार करने के साथ–साथ देश की समृद्ध परम्परा को पुर्नजीवीत करने का एक सशक्त एवं सराहनिय प्रयास है यह नीति ना केवल शिक्षा को ज्ञान एवं कौशल–आधारित तकनीकि आधारित और वैश्विक रूप में विकसित करती है वरनः छात्रों के चरित्र निर्माण नैतिकता और सत्त जीवनशैली के विविध आयामों के विकास के अवसर प्रदान करती है इस तरह से छात्र आधुनिक ज्ञान के साथ विश्व पटल पर भारतीय संस्कृती और परम्पराओं को नवीन दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत कर सकते है इस तरह राष्ट्रिय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा को आधुनिक शिक्षण प्रणाली के साथ जोड़कर एक प्रभावी संतुलित और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में सहयोगी सक्षक्त शिक्षा प्रणाली का विकास किया गया है। जो स्थानीय और वैश्विक आवश्यकताओं को पूर्ण करने में सक्षम है।

संदर्भग्रंथ

1. https://doi.org/10.29070/adcd6897

2. अजित कुमार राव एवं प्रशांत कुमार (2025)''आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेश' ' रीसेंट रीसर्च इन सोशल साइंस एण्ड ह्यूमनीटीस ;(RRSSH) स्पेशल इशु 01 / Vol.:12 / ISSN:2348-3318 पृष्ठ संख्याः 148–153

3. Ministry of Education, Government of India. *National Education Policy 2020 Government of India, 2020.*

4. Government of India. *NEP 2020: Key Recommendations and Highlights. Ministry of Education,2020.*

5. NEP Report. *Infian knowledge Systems and Cultural Integration. Goverment Publication,2020.*

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

समकालीन भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की प्रासंगिकता

डॉ. सुनीता सोलंकी

सहायक प्राध्यापक,अर्थशास्त्र

शासकीय आदर्श महाविद्यालय, बड़वानी (म. प्र.)

शोध सारांश– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की शैक्षिक यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर मानी जा रही है। स्वतंत्रता के पश्चात् निर्मित विभिन्न शैक्षिक आयोगों और नीतियों का उद्देश्य देश की सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं आर्थिक प्रगति हेतु शिक्षा का सर्वांगीण विकास था, किंतु बदलते वैश्विक परिदृश्य, तकनीकी उन्नति, कौशल–आधारित रोजगार के बढ़ते महत्व और भारत की जनसांख्यिकीय संरचना में तेजी से हो रहे बदलावों को देखते हुए एक ऐसी शिक्षा नीति की आवश्यकता स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी, जो भारतीयता की जड़ों पर आधारित होते हुए समकालीन वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप शिक्षा को रूपांतरित कर सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी आवश्यकता की प्रतिपूर्ति करती है।

इस शोध पत्र में NEP 2020 के मूल प्रावधानों, उसकी संरचनात्मक विशेषताओं, भारतीय शिक्षा प्रणाली में इसके लागू होने की आवश्यकता, समकालीन परिप्रेक्ष्य में इसके सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। ग्रामीण—शहरी शिक्षा में अंतर, तकनीकी अवसंरचना, शिक्षक प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम–परिवर्तन, शिक्षा में बहुभाषिकता तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली के पुनर्संस्थापन जैसे ठोस आयामों के माध्यम से नीति की प्रासंगिकता का मूल्यांकन किया गया है। साथ ही वर्तमान चुनौतियों एवं समाधान भी प्रस्तुत किए गए हैं, ताकि नीति के सफल क्रियान्वयन के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन उपलब्ध हो सके। अंततः यह शोध पत्र यह स्पष्ट करता है कि NEP 2020 केवल शिक्षा सुधार का दस्तावेज नहीं, बल्कि भारत के भविष्य निर्माण का समग्र विज़न है जो ज्ञान–आधारित समाज निर्माण एवं आत्मनिर्भर भारत की दिशा में अत्यधिक प्रासंगिक है।

कीवर्ड:–समकालीन,वैश्विक,प्रतिस्पर्धा,प्रासंगिकता,समग्रविज़न,तकनीकी,उन्नति,कौशल आत्मनिर्भर ।

शोध परिचय

भारत में शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन और रोजगार प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों, सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व, राष्ट्र निर्माण और मानवता को समझने की परंपरा का माध्यम रही है। भारत की विकसित शैक्षिक परंपरा तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों में दिखाई देती थी, जहाँ ज्ञान मूल्यों और राष्ट्रीय–वैश्विक दायित्वों में संतुलन था। किंतु औपनिवेशिक शासन के दौरान शिक्षा का उद्देश्य भारतीयों को प्रशासनिक कार्यों तक सीमित करने, मौलिक चिंतन रोकने और पश्चिमी ज्ञान को श्रेष्ठ सिद्ध करने में परिवर्तित हो गया। स्वतंत्रता के पश्चात् अनेक आयोगों ने शिक्षा सुधार की दिशा में सुझाव दिए, किंतु जनसंख्या वृद्धि, संसाधनों की कमी, तकनीकी क्रांति, वैश्विक प्रतिस्पर्धा और पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था की सीमितताओं के कारण शिक्षा आवश्यक गति से प्रगति नहीं कर सकी।

इसी पृष्ठभूमि में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का निर्माण हुआ, जिसने 34 वर्षों बाद भारत की शिक्षा व्यवस्था को नए दृष्टिकोण से व्यवस्थित किया। नीति ने शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप ढाला। यह

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

नीति शिक्षा को केवल ज्ञान प्रसार तक सीमित न रखकर, नवाचार, आलोचनात्मक चिंतन, अनुसंधान, उद्यमिता, रोजगारोन्मुख कौशल, डिजिटल साक्षरता, नैतिक शिक्षा, सांस्कृतिक धरोहर और स्वायत्तता पर आधारित करती है। यह नीति बाल्यावस्था की शिक्षा, आधारभूत साक्षरता, विषयगत दक्षता, शिक्षण पद्धति, बहुविषयक शिक्षा, शैक्षणिक क्रेडिट प्रणाली और विश्वविद्यालय सुधारों का विस्तृत खाका प्रस्तुत करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षकों के प्रशिक्षण, सीखने के परिणामों की मापन प्रणाली में सुधार, शिक्षा में समानता, ग्रामीण शिक्षा के सुदृढ़ीकरण, तकनीक–सक्षम शिक्षा, अनुसंधान केंद्रों की स्थापना, भारतीय ज्ञान–परंपरा की पुनर्स्थापना तथा शिक्षा की वैश्विक श्रेष्ठता प्राप्त करने का ठोस आधार तैयार करती है। इस नीति का मूल स्वर यह है कि शिक्षा केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का आधार स्तंभ बने। इसी विचार को केंद्र में रखते हुए यह शोध राष्ट्रीय शिक्षा नीति की प्रासंगिकता पर समकालीन भारत के परिप्रेक्ष्य में अकादमिक और विश्लेषणात्मक समीक्षा प्रस्तुत करता है।

समकालीन भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की प्रासंगिकता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत के सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक विकास को नई दिशा प्रदान करती है। समकालीन परिदृश्य में यह नीति क्यों अनिवार्य और युगानुकूल है, इसे विभिन्न संदर्भों में स्पष्ट किया जा सकता है।

1. शिक्षा की संरचना में परिवर्तन और सकारात्मक परिणाम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विद्यालय और उच्च शिक्षा की संरचना को नई सामाजिक और शैक्षणिक आवश्यकताओं के अनुरूप पुनर्गठित किया गया है। पूर्व की 10+2 प्रणाली को बदलकर 5+3+3+4 संरचना दी गई है, जिससे बाल्यावस्था से ही शिक्षण का वैज्ञानिक आधार स्थापित हो सके। यह परिवर्तन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि मनोवैज्ञानिक और व्यवहारिक दृष्टिकोण से यह माना गया है कि बच्चे की शिक्षण क्षमता और आधारभूत कौशल छह वर्ष की आयु तक विकसित हो जाते हैं। यह नीति इस तथ्य को स्वीकार करते हुए शिक्षण को रटने की शैली से हटाकर समझ, विश्लेषण, प्रयोग और नवाचार पर आधारित बनाती है।

2. मातृभाषा और बहुभाषिकता का महत्व

राष्ट्रीय शिक्षा नीति मातृभाषा या स्थानीय भाषा को प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षण माध्यम के रूप में स्वीकार करती है। यह शोध–आधारित तथ्य है कि बच्चे अपनी माँ–बोली में अधिक सहज रूप से सीखते हैं, जिससे न केवल भाषा दक्षता बढ़ती है बल्कि संज्ञानात्मक विकास भी सुदृढ़ होता है। भारत की बहुभाषिक सांस्कृतिक मूल्यों को दृष्टिगत रखते हुए यह नीति भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठा पुनर्स्थापित करती है और अंग्रेजी आधारित मानसिक श्रेष्ठता की धारणा को समाप्त करती है। यह भारतीयता के सांस्कृतिक अस्मिता की पुनरस्थापना का महत्वपूर्ण माध्यम है।

3. कौशल आधारित और रोजगारोन्मुख शिक्षा का विस्तार

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

भारत में लंबे समय तक शिक्षा का उद्देश्य सरकारी नौकरियों की प्राप्ति तक सीमित रहा। इसके कारण युवाओं की बड़ी संख्या शैक्षणिक डिग्रियाँ तो प्राप्त कर लेती थी, परंतु बाज़ार की वास्तविक आवश्यकताओं और उद्योग की अपेक्षाओं के अनुरूप कौशल प्राप्त नहीं कर पाती थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति इस दूरी को समाप्त करती है। व्यावसायिक शिक्षा को छठी कक्षा से ही जोड़ा गया है। इंटर्नशिप, प्रोजेक्ट–आधारित शिक्षा, उद्योग सहभागिता और कौशल आधारित पाठ्यक्रम से युवा अधिक व्यवहारिक, सक्षम और आत्मनिर्भर बन सकते हैं। यह नीति भारत को 'नौकरी खोजने वाला राष्ट्र' से 'नौकरी देने वाला राष्ट्र' की दिशा में परिवर्तित करती है।

4. डिजिटल शिक्षा और तकनीकी सशक्तीकरण

भारत तेजी से डिजिटल क्रांति के युग में प्रवेश कर चुका है। शिक्षा में डिजिटल साक्षरता अपरिहार्य होती जा रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ऑनलाइन शिक्षण, ई–कंटेंट निर्माण, राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी, वर्चुअल लैब, स्मार्ट क्लासरूम, ई–गवर्नेंस आधारित मूल्यांकन और डिजिटल प्लेटफार्मो का व्यापक विस्तार करती है। विशेष रूप से ग्रामीण भारत के लिए यह परिवर्तन आवश्यक है, जहाँ उत्कृष्ट शिक्षकों और संसाधनों तक पहुँच सीमित थी। डिजिटल शिक्षा समानता, अवसर विस्तार और ज्ञान लोकतंत्रीकरण का माध्यम बनती है।

5. अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा

उच्च शिक्षा में अनुसंधान और नवाचार की कमी लंबे समय से भारत की प्रमुख शैक्षणिक समस्या रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति इस दिशा में 'नेशनल रिसर्च फाउंडेशन' जैसी संस्थागत व्यवस्था का निर्माण करती है, जिससे विद्यार्थियों को अनुसंधान अनुदान, प्रयोगशाला संसाधन, नवाचार वातावरण और वैश्विक शोध सहयोग प्राप्त हो सके। यह परिवर्तन भारत को ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर करता है और 'रिसर्च इकोनॉमी' के निर्माण में सहायक है।

6. भारतीय ज्ञान–परंपरा का पुनर्समावेश

भारत केवल तकनीकी ज्ञान की भूमि नहीं रहा है, बल्कि दर्शन, संस्कृति, नैतिक शिक्षा, गणित, ज्योतिष, योग, आयुर्वेद, राजनीति, समाजशास्त्र और मानव जीवन की वैज्ञानिक पद्धतियों का वैश्विक केंद्र रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय ज्ञान–परंपरा को पुनः मुख्यधारा में लाती है। यही वह ऐतिहासिक चरण है, जब वैश्विक विमर्श पश्चिमी ज्ञान वर्चस्व से हटकर वैकल्पिक ज्ञान प्रणालियों का स्वागत कर रहा है। इस प्रकार यह नीति न केवल भारतीय पहचान को सुदृढ़ करती है, बल्कि भविष्य की शिक्षा को वैश्विक स्तर पर भारत का परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है।

7. शिक्षकों का प्रशिक्षण और व्यावसायिक उन्नयन

नीति शिक्षकों को शिक्षा सुधार की धुरी मानती है। शिक्षक प्रशिक्षण, ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों से कौशल उन्नयन, आधुनिक शिक्षण पद्धति, मूल्य आधारित शिक्षा, कक्षा प्रबंधन, विषय दक्षता और मूल्यांकन तकनीकों पर बल दिया गया है। शिक्षक अब केवल ज्ञान प्रदाता नहीं, बल्कि 'शिक्षण–अधिगम के सहयोगी' और छात्रों के मार्गदर्शक के रूप में परिभाषित किए गए हैं।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

8. शिक्षा में समानता और सामाजिक न्याय

भारत में सामाजिक, आर्थिक और भौगोलिक विषमताएँ लंबे समय से शिक्षा में समानता को चुनौती देती रही हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का स्पष्ट लक्ष्य है कि समाज के हर वर्ग—ग्रामीण, आदिवासी, पिछड़ा, दिव्यांग, आर्थिक रूप से कमजोर—के लिए समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध हो। यह समावेश, समान अवसर और शिक्षा को मानवाधिकार के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

9. राष्ट्रीय और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारतीय युवाओं की भूमिका

विशेषज्ञों का अनुमान है कि 2035 तक विश्व कार्यबल का सबसे बड़ा भाग भारत से होगा। यह जनसंख्या भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए चुनौती भी है और अवसर भी। यदि यह युवा वर्ग सक्षम, कुशल, उद्यमशील और मूल्य–आधारित शिक्षा से युक्त होगा, तो भारत विश्व नेतृत्व की भूमिका निभा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति युवाओं को तकनीक, भाषाएँ, ज्ञान, अनुसंधान, नवाचार, सामाजिक चेतना, नेतृत्व और वैश्विक समझ से सशक्त बनाती है।

10. शिक्षा को परीक्षा–केंद्रितता से मुक्त करना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति इस विचार को समाप्त करती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा और अंकों तक सीमित है। यह जीवन कौशल, संचार क्षमता, विश्लेषण, समस्या समाधान,प्रयोग, रचनात्मकता और सामाजिक व्यवहार को शिक्षा की मुख्य धारा में वापस लाती है।यह परिवर्तन भारत की शैक्षणिक व्यवस्था को वास्तविक अर्थों में वैश्विक प्रतिस्पर्धा के योग्य बनाता है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 समकालीन भारत की आवश्यकता, समयबोध और वैश्विक परिवर्तन की दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक है। यह शिक्षा के पारंपरिक, मानसिक, तकनीकी, संरचनात्मक और सांस्कृतिक स्तरों पर गहन परिवर्तन लाती है। यह शिक्षा को भारतीयता की जड़ों से जोड़ते हुए आधुनिक विज्ञान, अनुसंधान, कौशल और डिजिटल ज्ञान से एकीकृत करती है। यह नीति भारत को एक ऐसी ज्ञान–आधारित, मूल्य–आधारित, कौशल–आधारित और नवाचार–आधारित राष्ट्र में परिवर्तित करने की क्षमता रखती है, जिससे भारत विश्व स्तर पर न केवल आर्थिक शक्ति बन सकता है, बल्कि वैश्विक नैतिक नेतृत्व भी प्राप्त कर सकता है।

यह नीति कक्षा से उच्च शिक्षा तक विद्यार्थियों को जीवन के लिए तैयार करती है, न कि केवल परीक्षा के लिए। यह शिक्षक, छात्र, अभिभावक, सरकार, उद्योग, समाज और वैश्विक संस्थानों को जोड़कर शिक्षा को सामूहिक सामाजिक अभियान में बदल देती है। समकालीन भारत की दृष्टि से इसकी प्रासंगिकता इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि यह भारत को जनसंख्या संपदा को जनशक्ति में परिवर्तित करने का अवसर प्रदान करती है। यह केवल शिक्षा सुधार का दस्तावेज नहीं, बल्कि 21वीं सदी के भारत के भविष्य निर्माण का मार्गदर्शक है।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. कोठारी आयोग(1966). शिक्षा और राष्ट्रीय विकास, नई दिल्ली: शिक्षा आयोग रिपोर्ट।
2. मिश्रा,संदीप(2022). भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा,वाराणसी: सांस्कृतिक प्रकाशन।
3. शर्मा,नीलम(2021). नई शिक्षा नीति और भारतीय समाज, भोपाल: शारदा पब्लिकेशन्स।
4. सोनावणे,आर.(2022).NEP and Higher Education Reforms in India,मुंबई: यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. शिक्षा मंत्रालय,भारत सरकार(2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,नईदिल्ली: भारत सरकार प्रकाशन।
6. त्यागराजन,एम.(2021).भारतीय शिक्षा व्यवस्था और राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नईदिल्ली: मुक्त प्रकाशन।
7. यशपाल समिति(1993). सीखने की दिशा में, नई दिल्ली: मानव संसाधन मंत्रालय।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

नई शिक्षा नीति 2020 : भारत–केंद्रित ज्ञान–संस्कृति की संरचना

डॉ. भूपेंद्र भार्गव

सहायक प्राध्यापक,

प्रधानमंत्री उत्कृष्ट महाविद्यालय, बड़वानी (म. प्र.)

शोध सारांश– भारत की शिक्षा परंपरा सदियों से ज्ञान, मूल्यों और जीवन दृष्टि पर आधारित रही है। गुरुकुल प्रणाली से लेकर तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों तक भारतीय शिक्षा ने मानवता को आध्यात्मिकता, विज्ञान, गणित, चिकित्सा, भाषा और दर्शन का मार्ग दिखाया। परंतु औपनिवेशिक काल में यह शिक्षा प्रणाली अपने मूल स्वरूप से विचलित हो गई। स्वतंत्रता के बाद भारत में शिक्षा के अनेक सुधार हुए, किंतु भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा के केंद्र में लाने का वास्तविक प्रयास राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से हुआ। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतीक है, जिसका लक्ष्य न केवल आधुनिक आवश्यकताओं को पूरा करना है, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा के केंद्र में लाकर उसकी पुनर्स्थापना करना भी है। यह शोध पत्र इसी विषय का गहन विश्लेषण करता है। इसका उद्देश्य यह स्थापित करना है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा को उसकी जड़ों से जोड़ने और वैश्विक स्तर पर ज्ञान के केंद्र के रूप में भारत की प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित करने का एक महत्वाकांक्षी और मौलिक प्रयास है।

की वर्ड :– भारतीय ज्ञान परंपरा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा दर्शन, सांस्कृतिक पुनर्जागरण, स्वदेशी शिक्षा, आत्मनिर्भर भारत, मूल्य आधारित शिक्षा, शिक्षा में भारतीयता।

परिचय

भारत विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है, जिसकी शिक्षा प्रणाली जीवन को केवल रोज़गार नहीं, बल्कि "पूर्णता" की दिशा में अग्रसर करती थी। "सा विद्या या विमुक्तये" – यह भारतीय शिक्षा का मर्म रहा है।

प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के अंदर ज्ञान, चरित्र, और आत्मबोध का विकास करना था। तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी और पुष्पगिरी जैसे विश्वविद्यालय विश्व में प्रसिद्ध थे, जहाँ भारतीय और विदेशी विद्यार्थी ज्ञानार्जन करते थे।

औपनिवेशिक काल में अंग्रेज़ों ने "मैकाले शिक्षा नीति (1835)" लागू कर भारतीय शिक्षा की आत्मा को कमजोर किया और उसे मात्र रोजगारोन्मुख बना दिया। इस कारण शिक्षा प्रणाली में आत्मीयता, संस्कार और सांस्कृतिक मूल्यों का स्थान घट गया।

स्वतंत्र भारत में शिक्षा पर अनेक आयोग (राधाकृष्णन आयोग, कोठारी आयोग, राष्ट्रीय ज्ञान आयोग) गठित हुए, परंतु शिक्षा में भारतीयता के समावेश की वास्तविक रूपरेखा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से सामने आई। यह नीति केवल सुधार नहीं, बल्कि भारत के आत्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना का प्रयास है। इसमें प्राचीन भारतीय ज्ञान

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

प्रणाली (Indian Knowledge Systems – IKS) को आधुनिक शिक्षा से जोड़ा गया है ताकि यह शिक्षा "स्थानीय से वैश्विक" (Local to Global) दृष्टि को प्राप्त कर सके।

2. शोध का उद्देश्य

इस शोध का उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्स्थापन का अध्ययन करना।
2. भारतीय शिक्षा दर्शन और नई नीति के मूल तत्वों के बीच सामंजस्य को पहचानना।
3. यह विश्लेषण करना कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कैसे भारत के सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों को पुनः जीवंत बनाती है।

3.शोध पद्धति

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 संबंधित दस्तावेजों, अकादमिक साहित्य और सरकारी घोषणाओं का गुणात्मक विश्लेषण का उपयोग किया गया है।

4.राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का दृष्टिकोण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 को घोषित की गई। यह स्वतंत्र भारत की तीसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति है (पहली1968,व दूसरी1986 में बनी थी)। इस नीति का उद्देश्य केवल "शिक्षा सुधार" नहीं बल्कि "**शिक्षा का भारतीयकरण**" है।

नीति की प्रमुख विशेषताएँ

- **समग्र शिक्षा** (Holistic Education) पर बल–ज्ञान, कौशल, मूल्य, कला, भाषा और नैतिकता का संतुलन।
- **भारतीय भाषाओं का संवर्धन** – मातृभाषा में शिक्षा को प्रोत्साहन।
- **भारतीय ज्ञान प्रणालियों (IKS)** को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना।
- **बहुविषयक शिक्षा** (Multidisciplinary Education) – विज्ञान, कला, संस्कृति, प्रौद्योगिकी का एकीकरण।
- **चरित्र निर्माण और मूल्य शिक्षा** की व्यहारिकता पर विशेष बल।
- **गुरु–शिष्य परंपरा** के भाव को पुनर्स्थापित करने का प्रयास।
- **'आत्मनिर्भर भारत'** की भावना के अनुरूप कौशल आधारित शिक्षा।

इस नीति का उद्देश्य केवल आधुनिक वैश्विक प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि भारत के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक ज्ञान को आधुनिक शिक्षा के केंद्र में लाना है।

5. भारतीय ज्ञान परंपरा की पुनर्स्थापना का सफल सार्थक प्रयास

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

(क) भारतीय शिक्षा दर्शन का पुनरुद्धार– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा के तीन प्रमुख तत्वों – ज्ञान, कर्म और भावना– को पुनर्जीवित करती है। यह नीति "नैतिकता, आत्म–अनुशासन, और समाज के प्रति उत्तरदायित्व" को शिक्षा का आधार मानती है।

(ख) भारतीय भाषाओं का पुनर्जीवन – भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान, संस्कृति और भावनाओं की संवाहक हैं। NEP-2020 ने मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा को प्राथमिक स्तर तक अनिवार्य बनाकर ज्ञान की जड़ों को सशक्त किया है।

(ग) भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System – IKS) – वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, गणित, खगोलशास्त्र, योग, संगीत, वास्तुशास्त्र जैसे विषयों को समकालीन दृष्टि से शिक्षा में स्थान दिया गया है। **"IKS Division"** की स्थापना AICTE (All India Council for Technical Education) में की गई है ताकि भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित शोध को प्रोत्साहन मिले। महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में "भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र" की स्थापना की जा रही है।

(घ) गुरु–शिष्य परंपरा की पुनर्स्थापना – राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षक को "राष्ट्र निर्माता" के रूप में देखती है। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भारतीय शिक्षा परंपरा और संस्कार मूल्यों को जोड़ा गया है।

(ङ) नैतिक और मूल्य आधारित शिक्षा–भारतीय ज्ञान परंपरा का केंद्र "धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष" के संतुलन में है। NEP 2020 में विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्व पर बल दिया गया है – जिसमें पर्यावरण चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व, और आत्मानुशासन भी शामिल हैं।

6. नीति में भारतीय संस्कृति और अध्यात्म का समावेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को केवल "रोज़गार का साधन" नहीं बल्कि "जीवन का मार्ग" मानती है। नीति में भारतीय सांस्कृतिक प्रतीकों और दर्शन को इस प्रकार समाविष्ट किया गया है:

- **योग, ध्यान और आयुर्वेद** को शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य से जोड़ा गया है।
- **संगीत, कला, नाट्य और नृत्य** को शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा बनाया गया है।
- **भारतीय लोक ज्ञान और कारीगरी** को व्यावसायिक शिक्षा में स्थान दिया गया है।
- शिक्षा में **'स्वदेशी तकनीक और नवाचार'** को प्रोत्साहित किया गया है ताकि भारत आत्मनिर्भर बने।

यह नीति **"ज्ञान और कर्म"** दोनों के बीच संतुलन स्थापित करती है– जैसा कि गीता में कहा गया है:

"योगःकर्मसु कौशलम्" – अर्थात कर्म में कुशलता ही योग है।

7. क्रियान्वयन की चुनौतियाँ

- **शिक्षक प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण:–** भारतीय ज्ञान परंपरा को पढ़ाने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करना एक बड़ी चुनौती है। उन्हें न केवल IKS की सामग्री से अवगत कराना होगा, बल्कि इसे आधुनिक संदर्भों और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जोड़ने का कौशल भी प्रदान करना होगा।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

- **पाठ्यचर्या सामग्री का विकास:–** भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न पहलुओं को सभी स्तरों पर पाठ्यक्रम में एकीकृत करने के लिए विश्वसनीय, वैज्ञानिक रूप से मान्य और आकर्षक शिक्षण सामग्री का निर्माण करना एक विशाल कार्य है।
- **मानसिकता में परिवर्तन:–** वर्षों से स्थापित औपनिवेशिक मानसिकता को बदलना और यह स्वीकार करना कि भारत का भी विज्ञान, प्रौद्योगिकी और दर्शन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है, एक सामाजिक और अकादमिक चुनौती है।
- **संसाधन और समय:** – इस परिवर्तन को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधन, समय और राजनीतिक इच्छाशक्ति की आवश्यकता होगी।

8. क्रियान्वयन से अवसर

- **वैश्विक ज्ञान केंद्र:** IKS की पुनः स्थापना से भारत वैश्विक स्तर पर एक बार फिर ज्ञान और नवाचार के केंद्र के रूप में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित कर सकता है।
- **समस्या–समाधान:** भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ, जैसे कि आयुर्वेद, योग और पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ, आधुनिक दुनिया की समस्याओं(जैसे, स्वास्थ्य संकट, जलवायु परिवर्तन) के लिए नवीन समाधान प्रदान कर सकती हैं।
- **सांस्कृतिक गर्व और राष्ट्रीय पहचान:** यह प्रयास युवा पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ेगा और उनमें राष्ट्रीयगौरव की भावना को मज़बूत करेगा जो समावेशी विकास और सामाजिक सामंजस्य के लिए आवश्यकहै।
- **कौशल विकास:** अनुभवात्मक शिक्षा और स्थानीय कलाओं/शिल्पों के साथ व्यावसायिक एकीकरण छात्रों को भविष्य के रोज़गार के लिए तैयार करने वाले महत्वपूर्ण कौशल प्रदान करेगा।

9. निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 केवल एक नीति दस्तावेज़ नहीं, बल्कि यह भारत की शैक्षणिक आत्मा का पुनर्जागरण है। इसने औपनिवेशिक शिक्षा के प्रभाव से बाहर निकलकर भारतीयता के पुनर्स्थापन की दिशा में ठोस कदम बढ़ाया है। यह नीति आधुनिक विज्ञान और तकनीक के साथ–साथ वेदांत, योग, संस्कार और नैतिकता जैसे भारतीय मूल्यों को भी शिक्षा का अभिन्न अंग बनाती है।यह "विद्या और विवेक" को "विकास" से जोड़ने का प्रयास है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का यह दृष्टिकोण भारत को "ज्ञान आधारित समाज" के रूप में स्थापित करने में सहायक सिद्ध होगा। यह नीति भारतीयता, आधुनिकता और वैश्विकता का संगम है – जहाँ शिक्षा केवल बुद्धि का विकास नहीं, बल्कि चरित्र और संस्कृति का संवाहक बनती है।

इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शिक्षकों, शिक्षाविदों, नीति निर्माताओं और समाज के सामूहिक और समर्पित प्रयासों की आवश्यकता होगी। यदि इसका कार्यान्वयन देश में सफलतापूर्वक किया जाता है, तो NEP 2020 निश्चित रूप से भारतीय ज्ञान परंपरा को उसके उचित स्थान पर पुनः स्थापित करेगी, जिससे भारत 21वीं सदी में ज्ञान और नवाचार के वैश्विक मंच पर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सक्षम होगा।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

10. संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
2. आचार्य, सत्यदेव. (2021). भारतीय शिक्षा दर्शन और आधुनिक परिप्रेक्ष्य. वाराणसी: गंगाप्रसाद प्रकाशन।
3. कुमार, रमेश. **भारतीय शिक्षा का इतिहास**. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, 2018।
4. ब्रह्मानंद, स्वामी. **भारतीय संस्कृति का वैश्विक योगदान.** भोपाल: मकरंद प्रकाशन, 2021।
5. शर्मा, वीरेन्द्र. शिक्षा और संस्कृति का संगम: एनईपी 2020 का विश्लेषण. लखनऊ: शिक्षा भारती प्रकाशन।
6. AICTE (2021). *Indian Knowledge System (IKS) Division Report*. नई दिल्ली: AICTE.
7. मिश्रा, एस. एन., एवं सिंह, ए. के. (2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय ज्ञान परंपरा. शैक्षिक चिंतन जर्नल।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

राष्ट्रीय शिक्षा निति में भारतीय ज्ञान परम्परा का महत्त्व

प्रियंका शर्मा

पी.ए.डी. शोधार्थी

विक्रम विष्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

राष्ट्रीय शिक्षा निति

NEP 2020 राष्ट्रीय शिक्षा निति भारत सरकार द्वरा 29 जुलाई 2020 को घोषित एक निति है, जो देश की शिक्षा प्रणाली में बड़े बदलाव लाना चाहती है और इसने 1986 की निति का स्थान लिया है। इस निति के मुख्य उद्देश्य स्कूली और उच्च शिक्षा को समावेशी लचीला और आधुनिक बनाना शामिल है। इसमें शिक्षा का माध्यम मातृभाषा/स्थानीय भाषा को बनाने "5+3+3+4" शैक्षाणिक सरंचना अपनाने और उच्च शिक्षा शिक्षा में अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट जैसी व्यवस्थाए शुरू करने का प्रस्ताव है।

मुख्य बिन्दु

2030 तक सकल नामाकंन अनुपाल (GER) 100% करना। उच्च शिक्षा में (GER) 50% करना।

शिक्षा पर 6% GDP का सार्वजानिक व्यय "5+3+3+4" मोडल को अपनाती है, जिसमे विभिन्न स्तरों पर शिक्षा को व्यवस्थित किया गयाः–

- पहला चरण (3–8 वर्ष): फाउंडेशनल स्टेज, जिसमें कक्षा 3 साल के ऑगनवाड़ी/प्री स्कूल और कक्षा 1 और 2 शमिल है।
- दूसरा चरण (8–11 बर्ष): प्रीपरटेरी स्टेज, जिसमे कक्षा 3, 4 और 5 शमिल है।
- तीसरा चरण (11–14 वर्ष): मिडिल स्टेज, जिसमें कक्षा 6, 7 और 8 शामिल है।
- चौथा चरण (14–18): सेकेंडरी स्टेज, जिसमें कक्षा 9, 10, 11 और 12 शमिल है। (इस चरण को आगे दो भागों में विभाजित किया गया है।
  - मातृभाषा/स्थानीय भाषा को बढ़ावा।
  - मल्टीपल एंट्री और एग्जिट विकल्प।
  - अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट
  - मानव संसाधन मंत्रालय का नाम बदलाकर शिक्षा मंत्रालयश् कर दिया।
  - एम. फिल. कार्यक्रम को समाप्त किया गया।

भारतीय ज्ञान परंपरा

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

भारतीय ज्ञान परंपरा भारत की प्राचीन ज्ञान और शिक्षा की एक समृद्ध विरासत है, जो वेदों और उपनिषदों से शुरू होकर दर्शन विज्ञान, कला नैतिकता तक फैली हुई है। इसमें ज्ञान को पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित करने व्यवस्थित तरीका शमिल है। जिसमें तर्क, अनुभव और गहन अध्ययन के माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया जाता है। आज भारत सरकार राष्ट्रीय शिक्षा निति 2020 के तहत उस परम्परा को पुर्नजीवित करने का प्रयास कर रही है.

मुख्य पहलू

- दार्शनिक और आध्यात्मिक गहराई।
- वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण।
- सांस्कृतिक और सामाजिक योगदान।
- ऐतिहासिक शिक्षा केन्द्र।
- समकालीन प्रासंगिकता।
- सरकारी पहल।

राष्ट्रीय शिक्षा निति में भारतीय ज्ञान परम्परा का महत्तव

राष्ट्रीय शिक्षा निति में भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्तव बहुत अधिक है, भारतीय ज्ञान परंपरा ने हमें विभिन्न क्षेत्रों में गहरा ज्ञान और समझ प्रदान की है, जैसे कि दर्शन, विज्ञान, गणित, आयुर्वेद, संगीत और कला।

आज वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा निति मैं भारतीय ज्ञान परंपरा को शामिल किया गया है, कि विद्यार्थियों को हमारी संस्कृति, ज्ञान, कला, आर परम्परा, रीति रिवाज के बारे में ज्ञान हो सके।

मनसे चेतसे धिय आकूत्य उत चित्तये।
ज्यै रुताय चक्षसे विधेन हविषा वयम्।
(अथर्ववेद, 6.41.1)

अर्थात् शिक्षा का लक्ष्य मनुष्य को दर्शन, श्रवण, स्मरण, चिन्तन–मनन, चेतना धारण, बुद्धि एवं संकल्प शक्तियों से परिपूर्ण करने के साथ– साथ शिक्षा व्यक्ति को क्या हितकारी अर्थात उचित है, तथा क्या अहितकारी अर्थात अनुचित है, इसका भी उपदेश देती है।

राष्ट्रीय शिक्षा निति में भारतीय ज्ञान परंपरा को निम्न बिदुओं से समझा जा सकता हैः–

1. सांस्कृतिक जड़ से जुड़ावः– NEP शिक्षा को हमारी सभ्यता, संस्कृति और परम्पराओं से जोड़ने पर जोर देती है। भारतीय ज्ञान परंपराः– जैसे वेद, उपनिषद, आयुवेद, योग, ज्योर्तिव साहित्य, छात्रों में सांस्कृतिक गर्व और पहचान विकसित करती है।

2. समग्र शिक्षाः– भारतीय परंपरा में शिक्षा केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि शरीर+मन+बुद्धि+आत्मा का विकास है। NEP इसी समग्र दृष्टिकोण को अपनाती है. जैसे

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

- योग
- ध्यान
- नैतिक शिक्षा
- पर्यावरण जागरुकता

3. बहु–विषयक सोचाः– तक्षाशिला और नालंदा जैसी परंपराओं में शिक्षा बहु–विषयंक थी। NEP उसी मोडल को अपनाते हुए छात्रों को–विभिन्न विषयों का मिश्रित अध्ययन करने की सुविधा देती है।

4. स्थानीय ज्ञान और कौशल का सम्मानः– भारत में लोककला, हस्तकला, कृषि, चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में अदभुत अनुभव आधारित ज्ञान है।

NEP इन स्थानीय ज्ञान प्रणालियों को

- पाठ्यक्रम।
- परियोजनाओं।
- व्यावहारिक शिक्षा में शामिल करती है।

5. मातृभाषा और भारतीय भाषाओं को बढ़ावा:– भारतीय ज्ञान परंपरा को समझने के लिए भाषा सबसे बड़ा माध्यम है। NEP शुरुआती शिक्षा मातृभाषा/भाषाई विविधता में देने पर बल देती है

नैतिक और मूल्य आधारित शिक्षाः– अहिंसा, सत्य, करुणा, सेवा, सह–अस्तित्व जैसे मूल्य भारतीय परंपरा का मूल है।

6. विज्ञान और तकनीक में भारतीय योगदानः– भारतीय ज्ञान परम्परा में

- गणित (शून्य, बीज गंगिल)
- ज्योतिष
- वास्तु
- धातु विज्ञान

जैसे वैज्ञानिक क्षेत्रों का बड़ा योगदान रहा है। NEP इन वैज्ञानिक उपलब्धियों को भी शिक्षा मैं सम्मिलित करती है, ताकि छात्रों में नवाचार बढ़े।

7. वैश्विक स्तर पर भारत की पहचान को मजबूत करनाः– भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा में शमिल करने से भारत की वैष्विक प्रतिष्ठा, संस्कृति और वैचारिक समृद्धि दुनिया के सामने उजागर होती है।

निष्कर्ष

इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा निति में, भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्त्व बहुत अधिक है, क्योकि बच्चे की प्रथम पाठशाला उसके संस्कार, परंपरा, कला, संस्कृति होती है। अगर विद्यार्थी शुरुआती शिक्षा को ही अपनी संस्कृति से जुड़ जायेगा तो उसे भविष्य में कभी भी किसी और संस्कृति के पीछे नही भागना पड़ेगा, हमारी संस्कृति ज्ञान, कौशल, विकास, व्यक्तित्व,

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

अपनेपन की भावना, प्रेम, सौहार्द, सम्मान और संस्कार सीखाती है। अगर विद्यार्थी शिक्षा के साथ– साथ ये सब–सीखता है, तो वह शिक्षित होने के साथ साथ संस्कारवान भी बनाता है। हमारे प्राचीन समय में गुरुकुल, वेद पाठशला, संस्कृत पाठशाला, संचलित थी, जो शिक्षा ज्ञान के साथ–साथ वेदों, उपनिषदों का भी ज्ञान देती है। जिससे पहले त्रेतायुग, सतयुग, द्वापरयुग मै भगवान कृष्ण, भगवान श्री राम जी, लक्ष्मण जी, बलराम जी, जैसे आदर्श पद पर चलने वाले पुरुषोत्तमों का जन्म हुआ। इसलिए कहा गया कि षिक्षा के साथ–साथ संस्कार भी जरूरी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. रविन्द्र कान्हेरे, डॉ. धीरेन्द्र शुक्ल भारतीय ज्ञान परम्परा द्वितीय (संसोधित) 2025, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल (म.प्र.)
2. कृष्ण गोपाल, भारत की संत परंपरा और सामाजिक समरसता, चौदहवाँ (आवृत्ति) 2025, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल (म.प्र.)
3. प्रो. एस. एस. पी. गौतम श्रीमद भागवत में विज्ञान बारहवीं (आवृत्ति) 2024 म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल (म.प्र.)
4. http://hi.wikipedia.org. https://blog.mygov.in

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

21 वीं सदी में भारतीय ज्ञान परम्परा की आवश्यकता: एक अध्ययन

Dr. Dilip Kumar Parsendiya,

Assistant Professor Commerce,

Govt. Adarsh P.G. College Jhabua (M.P.)

सारांश– 21वीं सदी का वैश्विक परिःश्य तीव्र वैज्ञानिक उन्नति, डिजिटल क्रांति, सामाजिकःसांस्कृतिक बदलाव और पर्यावरणीय संकटों से गुज़र रहा है। ऐसे समय में ज्ञान की ऐसी परम्पराओं की आवश्यकता बढ़ गई है जो केवल तकनीकी दक्षता ही नहीं, बल्कि नैतिकता, मानवीय मूल्यों, सामंजस्य, सतत विकास और समग्रता के दर्शन को भी आगे बढ़ाएँ। भारतीय ज्ञान परम्परा जो वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, योग, गणित, ज्योतिष, वास्तु, नीतिशास्त्र, साहित्य, कला, दर्शन और जीवन पद्धतियों में विकसित हुई है, मनुष्य और प्रकृति के रिश्ते को समग्र दृष्टिकोण से देखने की क्षमता प्रदान करती है। प्रस्तुत शोध–पत्र 21वीं सदी में भारतीय ज्ञान परम्परा की आवश्यकता, प्रासंगिकता और अनुप्रयोगों पर केन्द्रित है।

शब्द कुंजी: भारतीय ज्ञान परम्परा, आध्यात्मिकता, वैज्ञानिक–दार्शनिक दृष्टिकोण, दर्शन, विज्ञान, योग और ध्यान, साहित्य एवं लोकपरम्पराएँ।

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व की सबसे प्राचीन और सतत् विकसित बौद्धिक परम्पराओं में से एक है। यह केवल जानकारी का संग्रह नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक समग्र दृष्टि है। तकनीकी प्रगति के बावजूद आज की दुनिया तनाव, अवसाद, पर्यावरण संकट, सामाजिक असमानता, मूल्य–संकट और सांस्कृतिक संघर्ष से जूझ रही है। ऐसे में भारतीय ज्ञान परम्परा का वह वैज्ञानिक–दार्शनिक दृष्टिकोण, जिसमें आध्यात्मिकता और व्यवहारिकता का सामंजस्य विद्यमान है, 21वीं सदी की प्रमुख चुनौतियों के समाधान देने में सक्षम है। भारतीय ज्ञान परम्परा कभी भी अतीतःमुखी नहीं रही, यह परिवर्तन को स्वीकार करते हुए निरन्तर नवीनीकरण की प्रक्रिया का हिस्सा रही है। आज जब विश्व में 'ग्लोबल नॉलेज सिस्टम' का निर्माण हो रहा है, भारतीय चिन्तनःधारा उसमें महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। भारतीय ज्ञान परम्परा की जड़ें हजारों वर्षों के सांस्कृतिक अनुभव, दर्शन, विज्ञान और व्यवहार में निहित हैं। इसके प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं:–

वेद एवं उपनिषद: ज्ञान, सत्य, ब्रह्मांड, चेतना और आत्मा के दार्शनिक सिद्धांत।

आयुर्वेद: समग्र स्वास्थ्य: दर्शन, रोगःप्रतिरोध, जीवनःशैली विज्ञान।

योग और ध्यान: मानसिक: शारीरिक–भावनात्मक संतुलन की वैज्ञानिक पद्धतियाँ।

गणित एवं खगोलशास्त्र: शून्य, दशमलव प्रणाली, बीजगणित, ज्यामिति, नक्षत्र विज्ञान।

अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्र: सुशासन, न्याय, वित्त, राजनीति और सामाजिक व्यवस्था।

कला, संगीत, साहित्य एवं लोकपरम्पराएँ: सौंदर्यबोध, भावनात्मक विकास, सामुदायिक जीवन।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

पर्यावरण एवं कृषि ज्ञान: प्रकृति संग सहजीवन, सतत् कृषि व जल–संरचना मॉडल।

इन सभी तत्वों का केन्द्र बिन्दु समग्रता, संतुलन, नैतिकता और सामूहिक कल्याण है। भारतीय ज्ञान परम्परा को समझने और बचाने से सांस्कृतिक पहचान बनती है, इंटरकल्चरल कम्युनिकेशन आसान होता है, और अलग–अलग क्षेत्र में ग्लोबल दृष्टिकोण बढ़ते हैं। ''वसुधैव कुटुम्बकम'' जैसे विचार, जिसका मतलब है ''पूरी दुनिया एक परिवार है'' पारंपरिक भारतीय फिलॉसफी के नैतिक और इकोलॉजिकल पहलुओं पर ज़ोर देते हैं। रामायण और महाभारत जैसी महाकाव्य कहानियों में इंटेलेक्चुअल, नैतिक और एथिकल सबक हैं। भगवद गीता नाम का एक ज़रूरी आध्यात्मिक प्रवचन भी महाभारत में शामिल है। ये हिस्से मिलकर एक महान ताना–बाना बनाते हैं जिसने भारत की कल्चरल, फिलॉसॉफिकल और साइंटिफिक हेरिटेज को आकार दिया है। दिवाली, होली और नवरात्रि जैसे त्योहार सिर्फ़ सेलिब्रेशन ही नहीं हैं, बल्कि इनका कल्चरल और फिलॉसॉफिकल महत्व भी है, जो खुशी, मेलजोल और बुराई पर अच्छाई की जीत के मूल्यों को बढ़ावा देते हैं। ब्रिटिश कॉलोनियलिज़्म ने पारंपरिक भारतीय एजुकेशन सिस्टम को बिगाड़ दिया, देसी भाषाओं की जगह इंग्लिश को लाया और वेस्टर्न करिकुलम शुरू किया। इससे पारंपरिक ज्ञान को किनारे कर दिया गया। कॉलोनियल एजुकेशन सिस्टम ने देसी ज्ञान की कीमत पर वेस्टर्न ज्ञान को प्राथमिकता दी। इससे पारंपरिक और मॉडर्न एजुकेशन के बीच फर्क पैदा हुआ, जिससे देसी सिस्टम पर भरोसा कम हुआ। वेस्टर्न वैल्यूज़ और नॉर्म्स को लागू करने से इंडिया की कल्चरल पहचान के पहलू खत्म हो गए और वेस्टर्न साइंटिफिक नॉलेज और देसी सिस्टम के बीच हायरार्की की सोच बन गई।

शोध पत्र के उद्देष्य

1. भारतीय ज्ञान परम्परा की अवधारणा को समझना।
2. भारतीय ज्ञान परम्परा के महत्व का अध्ययन करना।
3. वर्तमान में भारतीय ज्ञान परम्परा की आवष्यकता की जांच करना।
4. वैष्विक युग में भारतीय ज्ञान परम्परा का अध्ययन करना।

समंक संकलन

यह शोधपत्र द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त समंकों पर आधारित है। इसमें विभिन्न संस्थानों की रिपोर्ट, समाचार पत्रों एवं पुस्तकों से प्राप्त तथ्यों को संकलित किया गया है।

21वीं सदी की चुनौतियाँ और भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता

21वीं सदी में मानसिक स्वास्थ्य संकट, अवसाद, चिंता, तनाव और अकेलापन तेजी से बढ़ रहा है। योग, प्राणायाम और ध्यान मानसिक स्वास्थ्य के वैज्ञानिक एवं प्रभावी उपाय प्रदान करते हैं। भारतीय मनोविज्ञान में चित्त, मन, बुद्धि और अहंकार की अवधारणाएँ व्यक्तित्व निर्माण को गहराई से समझाती हैं। पर्यावरण संकट और जलवायु परिवर्तन भारतीय परम्परा 'प्रकृतिःपूजन' नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ "सहःअस्तित्व" का दर्शन देती है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' का अर्थ है, कि पृथ्वी परिवार है और उसके सभी संसाधनों का संरक्षण आवश्यक है। कृषि में जैविक तरीकों, जल–संरक्षण प्रणालियों और वनों के

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

संरक्षण की परम्पराएँ आज भी अत्यंत उपयोगी हैं। तकनीक और नैतिकता का संघर्ष आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, जैव–प्रौद्योगिकी, साइबर–दुनिया सबके सामने नैतिक प्रश्न हैं। भारतीय नीतिशास्त्र धर्म, कर्तव्य, नैतिक आचरण और संतुलन को महत्व देता है, जो आधुनिक तकनीकी समाज के लिए दिशा–निर्देशक बन सकता है। वैश्वीकरण और सांस्कृतिक पहचान ग्लोबलाइजेशन तेजी से सांस्कृतिक समानता की ओर बढ़ रहा है। भारतीय संस्कृति विविधता में एकता का सिद्धांत देती है, जो बहु–सांस्कृतिक विश्व के लिए एक संतुलित मॉडल प्रस्तुत करता है। हजारों वर्षों से, कई तरह की ट्रेडिशनल मान्यताएं, प्रैक्टिस और नॉलेज एक साथ आकर भारतीय ज्ञान परम्परा बनाते रहे हैं। वेद, उपनिषद और अलग–अलग शास्त्रों जैसे पुराने ग्रंथों से प्रेरणा लेकर, इसमें फिलॉसफी, एस्ट्रोनॉमी, मैथ, आयुर्वेदिक मेडिसिन, आर्ट और म्यूजिक जैसे कई सब्जेक्ट शामिल हैं। यह एक होलिस्टिक नजरिया दिखाता है, जो मैटेरियल और स्पिरिचुअल दोनों तरह की भलाई की खोज के साथ–साथ सभी चीजों की एक–दूसरे पर निर्भरता पर जोर देता है। भारतीय ज्ञान परम्परा प्रेरणा और रिसर्च का सोर्स बना हुआ है और इसने दुनिया के इंटेलेक्चुअल इतिहास में काफी योगदान दिया है।

शिक्षा प्रणाली की चुनौतियाँ

वर्तमान में शिक्षा मात्र नौकरी–केन्द्रित हो गयी है। भारतीय शिक्षा–दर्शन में विद्या का अर्थ है, "जो व्यक्ति को आत्म–पहचान, नैतिकता और समाज–हित के प्रति जागरूक बनाए।" नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान प्रणाली को शामिल किया जाना इसकी प्रासंगिकता को और अधिक प्रमाणित करता है। भारतीय ज्ञान परम्परा को मात्र आस्था–आधारित मान लेना उचित नहीं है। कई तत्त्वों का वैज्ञानिक विश्लेषण उपलब्ध है। योग और विज्ञान के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर योग को न्यूरोसाइंस, साइकोलॉजी और मेडिकल रिसर्च ने स्वीकार किया है। तनाव कम करने, रक्तसंचार सुधारने, प्रतिरक्षा बढ़ाने में योग का प्रभाव सिद्ध है। आयुर्वेद और समग्र चिकित्सा को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी ज्तंकपजपवदंस डमकपबपदम ैजतंजमहल में आयुर्वेद को महत्व दिया है। आयुर्वेद, शरीर, मन, आत्मा और पर्यावरण के संतुलन पर आधारित है। गणित और विज्ञान में योगदान के अंतर्गत शून्य और दशमलव पद्धति आर्यभट, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य की खोजें है। आज की कंप्यूटर–तकनीक भी बाइनरी सिस्टम पर आधारित है, जो भारतीय गणित की विरासत से जुड़ा हुआ है। वैदिक पर्यावरण–ज्ञान जैसे अथर्ववेद में जल–संरक्षण एवं वन संरक्षण के निर्देश है। ये आज के 'इकोलॉजी' और 'सस्टेनेबिलिटी' के सिद्धांत से मेल खाते हैं। शिक्षा, अनुसंधान और नीति–निर्माण में भारतीय ज्ञान परम्परा का स्थान, शिक्षा में एकीकरण छम्च्.2020 में भारतीय भाषाओं, दर्शन, योग, आयुर्वेद, लोक–ज्ञान को पाठ्यक्रम में शामिल करने की सिफारिश की गई है। विद्यालयों में योग–शिक्षा, नैतिक शिक्षा, भारतीय कला–संगीत का बढ़ता समावेश सकारात्मक बदलाव ला रहा है। अनुसंधान क्षेत्र में उपयोगिता, आयुर्वेद आधारित दवाओं पर शोध, योग–थेरेपी भारतीय समाज–विज्ञान में ग्राम–व्यवस्था, पंचायती शासन, लोक–अर्थनीति पर अध्ययन भारतीय गणित और खगोल–विज्ञान पर नए शोध हो रहे है। "अंत्योदय", "स्वावलंबन", "न्यूनतम संसाधनों में अधिकतम संतुलन" ये भारतीय शासन–दर्शन के सिद्धांत हैं। आज 'सतत विकास लक्ष्यों में भी इन्हीं सिद्धांतों की प्रतिध्वनि सुनाई देती है।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

भारतीय ज्ञान परम्परा और वैश्विक प्रभाव

21वीं सदी में भारत की ज्ञान परम्परा सिर्फ देश के लिए नहीं, बल्कि विश्व के लिए भी उपयोगी है। योग का वैश्विक विस्तार, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाना यह दर्शाता है कि योग विश्व–स्वास्थ्य आंदोलन बन चुका है। आयुर्वेद और वैश्विक हेल्थकेयर, आयुर्वेद पर आधारित प्राकृतिक चिकित्सा, डाइट–थैरेपी, हर्बल–मेडिसिन का उपयोग बढ़ रहा है। भारतीय दर्शन और विश्व–दृष्टिकोण, 'वसुधैव कुटुम्बकम' और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' जैसे संदेश वैश्विक शांति और सहयोग के लिए महत्वपूर्ण हैं। भारतीय गणित और तार्किक चिंतन आधुनिक वैज्ञानिक दुनिया की प्रमुख शक्तियों में से है। 21वीं सदी में भारतीय ज्ञान परम्परा की आवश्यकता निम्न कारणों से अत्यधिक महत्वपूर्ण है–

समग्र दृष्टिकोण: आधुनिक जीवन समस्याओं को खंडित तरीके से देखता है, जबकि भारतीय परम्परा जीवन को एक "समग्र इकाई" मानती है।

नैतिक और मानवीय मूल्य: तेजी से बदलते समाज में नैतिकता और मानवीय संवेदनाएँ कमजोर हो रही हैं। भारतीय नीतिशास्त्र सदाचार, संयम, कर्तव्य और सत्य पर आधारित है।

सतत विकास मॉडल: भारत की परम्परागत कृषि, जल–प्रबंधन, वन–संरक्षण प्रणालियाँ आज के पर्यावरण संकट का हल प्रस्तुत करती हैं।

मानसिक और भावनात्मक सुदृढ़ता: योग–ध्यान तनाव–प्रबंधन और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य साधन बन चुके हैं। ज्ञान का लोकतंत्रीकरण: भारतीय ज्ञान परम्परा गुरु–शिष्य परम्परा और लोक–परम्पराओं के माध्यम से 'जन–जन' तक पहुँचती है। यह ज्ञान को केवल अभिजात वर्ग तक सीमित नहीं करती।

सांस्कृतिक आत्मविश्वास: वैश्विक प्रतिस्पर्धा में किसी भी राष्ट्र के लिए सांस्कृतिक आत्मबोध आवश्यक है। भारतीय ज्ञान परम्परा नई पीढ़ी में 'सांस्कृतिक आत्मविश्वास' स्थापित करती है।

निष्कर्ष

21वीं सदी वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति का युग है, लेकिन साथ ही यह अनेक वैश्विक संकटों का समय भी है। भारतीय ज्ञान परम्परा समग्र जीवन–दृष्टि, नैतिकता, मानसिक शांति, प्रकृति सम्मत जीवन–पद्धति, आत्म–अनुशासन और सामाजिक सामंजस्य का ऐसा मॉडल प्रस्तुत करती है जो आधुनिक दुनिया की वास्तविक आवश्यकताओं के अनुरूप है। आज आवश्यकता है कि भारतीय ज्ञान परम्परा को आधुनिक विज्ञान, तकनीक, शिक्षा और नीतियों के साथ समन्वित कर "नई ज्ञान–संरचना" तैयार की जाए। यह न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है। भारतीय ज्ञान परम्परा 21वीं सदी के लिए केवल एक सांस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि भविष्य–निर्माण की बौद्धिक शक्ति है। भारतीय ज्ञान परम्परा एक सजग, बदलती परंपरा है जिसने अपने बुनियादी विचारों को बनाए रखते हुए अलग–अलग ऐतिहासिक दौर के हिसाब से खुद को लगातार बदला है। एक अच्छी तरह से तैयार की गई ज्ञान तकनीक को बनाने के लिए, अभी इस पुराने

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

ज्ञान को आज की शिक्षा के साथ जोड़ने की कोशिश की जा रही है। इसके हिस्से इस बात पर ध्यान दिलाते हैं कि मन, शरीर और आत्मा सभी कैसे आपस में जुड़े हुए हैं।

संदर्भ सूची

1. Ṛgveda Saṃhitā. Translated by Ralph T.H. Griffith. Motilal Banarsidass, New Delhi.
2. Atharvaveda Saṃhitā. Translated by Maurice Bloomfield. Sacred Books of the East Series.
3. Vedic Hymns. Translated by F. Max Müller. Sacred Books of the East.
4. The Principal Upaniṣads. Translated by S. Radhakrishnan. HarperCollins, 1953.
5. The Upanishads. Translated by Patrick Olivelle. Oxford University Press, 1996.
6. Radhakrishnan, S. Indian Philosophy (Vol. I & II). Oxford University Press, 1923.
7. Panikkar, Raimon. The Vedic Experience: Mantramañjarī. University of California Press, 1977.
8. Kapila Vatsyayan. The Square and the Circle of Indian Arts. Abhinav Publications, 1997.
9. Goswami, S. Environmental Ethics in the Vedic Tradition. Indian Journal of Traditions and Culture, 2010.
10. Frawley, David. Gods, Sages and Kings: Vedic Secrets of Ancient Civilization. Lotus Press, 1991.

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पाठ्यक्रमों में कौशल–ज्ञान विकास का चिंतन

डॉ. अनिल पाटीदार

सहायक प्राध्यापक, इतिहास

शासकीय आदर्श महाविद्यालय बडवानी

सारांश– राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भारत की शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन का आधार स्तंभ है, जो शिक्षा को केवल पाठ्य–सूचना तक सीमित न रखते हुए भारतीय ज्ञान परम्परा आधारित कौशल, ज्ञान, मूल्यों, नवाचार, स्वावलंबन और रोजगारोन्मुखता की दिशा में आगे बढ़ाती है। इस नीति का मूल भाव ऐसे छात्र तैयार करना है जो न केवल विषय ज्ञान रखते हों, बल्कि जीवनोपयोगी दक्षताओं, डिजिटल क्षमता, समस्या समाधान, कौशल, नेतृत्व, संप्रेषण और नैतिक मूल्यों से भी सम्पन्न हों। साथ ही वैश्विक चुनौती का सामना करना योग्य हो। प्रस्तुत शोध पत्र में एनईपी–2020 के पाठ्यक्रमों में कौशल एवं ज्ञान विकास की भूमिका, उसकी प्रासंगिकता, व्यवहारिकता और भावी संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है।

शोध के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि यह नीति शिक्षा को रोजगार और जीवन के वास्तविक अनुप्रयोग से जोड़ते हुए भारत को विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली में एक क्रांतिकारी परिवर्तन है, जो पाठ्यक्रम में कौशल विकास और ज्ञान विकास को एकीकृत करने पर जोर देती है। इस नीति में भारतीयता का भाव विजिट करने की क्षमता है। यह शोध पत्र एनईपी 2020 के पाठ्यक्रम ढांचे में कौशल–आधारित शिक्षा के चिंतन का विश्लेषण करता है, जिसमें व्यावसायिक शिक्षा, बहु–विषयक दृष्टिकोण और छात्रों के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित है। अध्ययन से पता चलता है कि एनईपी कौशल विकास को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाकर रोजगार योग्यता और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देती है।

की वर्ड– शिक्षा नीति, भारतीय ज्ञान परम्परा, कौशल ज्ञान,

प्रस्तावना

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) 29 जुलाई 2020 को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित की गई, जो 1986 की पुरानी नीति की जगह लेती है। इस नीति का मुख्य उद्देश्य शिक्षा को समावेशी, समग्र और कौशल–उन्मुख बनाना है, ताकि छात्र न केवल ज्ञान प्राप्त करें बल्कि व्यावहारिक कौशल विकसित करके वैश्विक चुनौतियों का सामना कर सकें। एनईपी में पाठ्यक्रम को 5+3+3+4 संरचना में विभाजित किया गया है, जिसमें कक्षा 6 से व्यावसायिक शिक्षा शुरू होती है, और इंटर्नशिप को अनिवार्य बनाया गया है।मानव सभ्यता के संपूर्ण इतिहास में शिक्षा सबसे शक्तिशाली साधन के रूप में उभरती रही है, किंतु 21वीं सदी में शिक्षा का स्वरूप अभूतपूर्व रूप से बदल रहा है। आज की दुनिया में सफलता और प्रगति का आधार केवल पुस्तक–ज्ञान नहीं, बल्कि प्रयोगिक ज्ञान, तकनीकी समझ, कौशल क्षमता और नवाचार की योग्यता है। ऐसे समय में भारत की शिक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधार की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। इसी संदर्भ में राष्ट्रीय

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

शिक्षा नीति–2020 का प्रादुर्भाव हुआ, जिसने शिक्षा को रटने पर आधारित जानकारी से आगे बढ़ाकर कौशल–आधारित ज्ञान प्रणाली में परिवर्तित करने की दिशा निर्धारित की।

यह नीति इस तथ्य को स्वीकार करती है कि आज का विद्यार्थी वैश्विक प्रतिस्पर्धा में तभी आगे बढ़ सकता है जब वह विद्यालयों और विश्वविद्यालयों से निकलते समय केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने वाला छात्र नहीं, बल्कि कौशल, ज्ञान और मूल्यों से सम्पन्न नागरिक के रूप में तैयार हो। इसीलिए एनईपी–2020 के पाठ्यक्रमों के केंद्र में कौशल विकास और जीवनोपयोगी शिक्षा को स्थापित किया गया है।

1. कौशल एवं ज्ञान विकास की दार्शनिक अवधारणा

कौशल और ज्ञान पर आधारित शिक्षा की जड़ें भारतीय शिक्षा दर्शन में प्राचीन काल से मौजूद रही हैं। गुरुकुल परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल वेद–ज्ञान प्राप्त करना नहीं था, बल्कि जीवन के विविध कौशलों में दक्ष होना भी था—कृषि, पशुपालन, अस्त्र–शस्त्र कला, धातु विज्ञान, योग, आयुर्वेद, संगीत, स्थापत्य, वाद–विवाद, नैतिक मूल्य, नेतृत्व और सामाजिक व्यवहार। यह स्पष्ट दर्शाता है कि भारतीय शिक्षा का मूल स्वभाव ज्ञान–कौशल–चरित्र का संतुलन रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 इसी दार्शनिक परंपरा को आधुनिक संदर्भ में पुनःस्थापित करती है। इसके अनुसार शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य एक ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण है जो ज्ञान के साथ–साथ कर्म करने और जीवन में सफल होने की क्षमता भी रखता हो। यह दृष्टिकोण शिक्षा को केवल परीक्षा–उन्मुख और डिग्री–केंद्रित दृष्टि से आगे बढ़ाकर व्यक्ति विकास और राष्ट्र निर्माण की व्यापक भूमिका से जोड़ता है।

कौशल ज्ञान विकास का चिंतन एनईपी में केंद्रीय है, क्योंकि यह सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक अनुप्रयोग से जोड़ता है। नीति में कहा गया है कि शिक्षा का उद्देश्य तथ्यों का नहीं, बल्कि मूल्यों का ज्ञान और कौशल विकास करना है। यह चिंतन भारतीय परंपरा और आधुनिक आवश्यकताओं का मिश्रण है, जहां छात्रों को क्रिटिकल थिंकिंग, समस्या समाधान, रचनात्मकता और डिजिटल कौशल सिखाए जाते हैं। इस पत्र का उद्देश्य एनईपी के पाठ्यक्रम में इस चिंतन का गहन विश्लेषण करना है, हिंदी स्रोतों के आधार पर, और इसके प्रभावों को समझना।

2. एनईपी–2020 में पाठ्यक्रम और कौशल विकास का समन्वय

एनईपी–2020 का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह है कि उसने ज्ञान और कौशल को विरोधी ध्रुवों की जगह सहयोगी आयामों के रूप में स्थापित किया। शिक्षा नीति ज्ञान को बौद्धिक समझ, अनुसंधान क्षमता और विवेकपूर्ण दृष्टिकोण से जोड़ती है, जबकि कौशल को व्यवहारिक अनुभव, दक्षता और कार्य–निपुणता के रूप में विकसित करती है। दोनों का मेल ही एक पूर्ण शिक्षित व्यक्ति का निर्माण करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति पाठ्यक्रमों में कौशल विकास को अभिन्न रूप से जोड़ती है। विद्यालय स्तर पर इंटर्नशिप, स्थानीय कला–कौशल, कृषि एवं हस्तकला का प्रशिक्षण; माध्यमिक स्तर पर बहुविषयक अध्ययन और व्यावसायिक शिक्षा; तथा उच्च शिक्षा में चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम, उद्योग सहयोग, शोध एवं नवाचार प्रयोगशालाएँ—ये परिवर्तन कौशल विकास को शिक्षा

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

का स्वाभाविक तत्व बनाते हैं। इस प्रकार शिक्षा का उद्देश्य नौकरी की खोज करने वाले युवाओं की बजाय नौकरियाँ और अवसर सृजित करने वाले युवाओं को तैयार करना बनता है।

3. शिक्षण–अधिगम की नई पद्धतियाँ और कौशल विकास–

एनईपी–2020 ने शिक्षण की पद्धति को केवल कक्षा–केंद्रित व्याख्यान से आगे बढ़ाकर अनुभव–केंद्रित बना दिया है। विद्यार्थी वास्तविक जीवन समस्याओं को पहचानकर उनके समाधान खोजते हैं, परियोजनाएँ विकसित करते हैं, प्रयोग करते हैं, डिजिटल उपकरणों का उपयोग करते हैं और अपने कार्य को प्रस्तुत करना सीखते हैं। इस प्रक्रिया में संचार कौशल, टीम वर्क, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, तर्क शक्ति, निर्णय क्षमता और रचनात्मक सोच स्वाभाविक रूप से विकसित होते हैं।

इसके साथ ही मूल्यांकन प्रणाली में भी परिवर्तन किया गया है। अब सीखने की गुणवत्ता का मूल्यांकन केवल लिखित परीक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि असाइनमेंट, पोर्टफोलियो, प्रयोगात्मक कार्य, प्रदर्शन, समूह प्रस्तुति और वास्तविक जीवन कार्यों के आधार पर किया जाता है। इस विधा के माध्यम से विद्यार्थी सीखते हैं, करके सीखते हैं और करके दिखाते हैं। शिक्षा का यही वास्तविक उद्देश्य है।

4. रोजगार और उद्यमिता की दिशा में शिक्षा–

आज भारत जनसांख्यिकीय दृष्टि से विश्व का सबसे युवा राष्ट्र है। यदि युवाओं की ऊर्जा, कौशल और क्षमता का सही उपयोग हो तो भारत विश्व ज्ञान अर्थव्यवस्था का नेतृत्व कर सकता है। एनईपी–2020 इस दृष्टिकोण को केंद्र में रखते हुए रोजगार, कौशल और उद्यमिता को शिक्षा के अभिन्न अंग के रूप में प्रस्तुत करती है। डिजिटल साक्षरता, कोडिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा प्रबंधन और तकनीकी प्रशिक्षण—ये सभी 21वीं सदी के रोजगार क्षेत्र की आवश्यकताएँ हैं, और इन सभी को पाठ्यक्रमों में सम्मिलित किया गया है।

एक महत्वपूर्ण पहल यह है कि विद्यार्थी को अपनी रुचि और प्रतिभा के आधार पर विषय चुनने की स्वतंत्रता दी जाती है। विज्ञान के छात्र कला पढ़ सकते हैं, कला के छात्र कंप्यूटर विज्ञान पढ़ सकते हैं – यह लचीलापन आधुनिक वैश्विक चुनौतियों के अनुरूप है। इसके साथ ही स्टार्ट–अप संस्कृति, नवाचार लैब और फील्ड इंटर्नशिप विद्यार्थियों को वास्तविक दुनिया से जोड़कर शिक्षा को सार्थक और रोजगारपरक बनाती है।

5. कौशल आधारित शिक्षा की चुनौतियाँ और संभावनाएँ–

कौशल आधारित शिक्षा का विस्तार व्यापक संभावनाएँ प्रस्तुत करता है, किंतु इसके क्रियान्वयन की चुनौतियाँ भी हैं। शैक्षणिक संस्थानों में संसाधनों की कमी, प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता, ग्रामीण–शहरी अंतर, डिजिटल उपलब्धता में विषमता और समाज में डिग्री–प्रधान सोच जैसी चुनौतियाँ बदलाव की गति को धीमा कर सकती हैं। फिर भी यह नीति भारत की प्रगति के लिए अत्यंत उपयुक्त दिशा प्रदान करती है। सरकार, शिक्षकों, उद्योग और समाज के संयुक्त प्रयास से इन चुनौतियों को कम किया जा सकता है। भविष्य की दृष्टि से देखें तो कौशल आधारित शिक्षा भारत को वैश्विक आवश्यकता के अनुसार मानव संसाधन का केंद्र बनाने की क्षमता रखती है।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भारत की शिक्षा प्रणाली को समय की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालते हुए सीखने की प्रक्रिया को जीवन, समाज और रोजगार से जोड़ती है। यह शिक्षा को सूचना–केंद्रित प्रणाली से आगे बढ़ाकर अनुभव, कौशल, नवाचार और चरित्र पर आधारित बनाती है। इससे विद्यार्थी की सीखने की क्षमता बढ़ती है। एनईपी–2020 के पाठ्यक्रमों में कौशल और ज्ञान का समन्वय छात्र को परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थी से आगे बढ़ाकर जीवन–कुशल, स्वावलंबी, नैतिक, सृजनात्मक और वैश्विक नागरिक के रूप में विकसित करता है। भारतीयता, आधुनिकता और प्रौद्योगिकी का यह संतुलन भारत को 21वीं सदी में ज्ञान और कौशल के विश्व–नेता के रूप में स्थापित करने की दिशा में सबसे निर्णायक कदम है।

संदर्भ

1. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020. नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
2. कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय। (2023). कौशल भारत–कुशल भारत रिपोर्ट. नई दिल्ली।
3. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग। (2022). उच्च शिक्षा में बहुविषयक एवं क्रेडिट आधारित ढांचा: दिशा–निर्देश. नई दिल्ली।
4. शर्मा, ए. (2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति और कौशल विकास: एक अध्ययन। भारतीय शिक्षा समीक्षा, 15(2), 112–124।
5. तिवारी, सुनील। (2022). शिक्षा, रोजगार एवं उद्यमिता: नई शिक्षा नीति की संभावनाएँ। उच्च शिक्षा अनुसन्धान जर्नल, 9(1), 51–63।
6. Anubooks. (2022). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कौशल विकास के अवसर. https://anubooks.com/uploads/session_pdf/166279315425.pdf

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा का महत्व

[1]प्रो. दीपक सोलंकी

[2]डॉ. दिनेश सोलंकी

[1]सहायक प्राध्यापक हिन्दी,

[2]सहायक प्राध्यापक रसायन शास्त्र

शासकीय कन्या महाविद्यालय बड़वानी

सारांश– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (छम्च् 2020) भारतीय शिक्षा को वैश्विक, समकालीन तथा भविष्य उन्मुख बनाने के साथ–साथ भारत की बहुआयामी भारतीय ज्ञान परम्परा को पुनर्स्थापित करने की दिशा में सबसे व्यापक और महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, ज्योतिष, योग, दर्शन, साहित्य, गणित, कृषि, कला, संगीत, नाट्य, वास्तु, शिल्प, पर्यावरण–समझ, सामुदायिक–ज्ञान आदि सदियों तक समाज के मूलाधार रहे हैं। आधुनिक शिक्षा ने इन तत्त्वों को हाशिये पर डाल दिया था। छम्च् 2020 पहली शिक्षा नीति है जो ज्ञान को केवल रोजगार का साधन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना, नैतिकता, पर्यावरणीय संतुलन, समग्र व्यक्तित्व विकास और राष्ट्रीय पहचान के रूप में देखती है।

इस शोध–पत्र में भारतीय ज्ञान परम्परा के ऐतिहासिक विकास, छम्च् 2020 में उसके पुनर्स्थापन, पाठ्य चर्या में उनमें किए गए प्रावधानों, नीतिगत निर्देशों तथा भावी शिक्षा पर इसके संभावित प्रभावों का विश्लेषण प्रस्तुत है। साथ ही इस दिशा में मौजूद चुनौतियों और सुझावों को भी सम्मिलित किया गया है।

शब्द कुंजी – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय ज्ञान परम्परा, भारतीय शिक्षा, नैतिक शिक्षा, समेकित शिक्षा, संस्कृति,

प्रस्तावना

भारतीय सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है, जिसकी विशेषता ज्ञान, अध्यात्म, विज्ञान और संस्कृति के समन्वय में निहित है। यहाँ ज्ञान केवल बौद्धिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि अनुभव–आधारित, सामाजिक, व्यावहारिक और नैतिक जीवन पद्धति रहा है। गुरुकुल परंपरा, तक्षशिला नालंदा जैसे विश्वविद्यालय, आयुर्वेद, योग, खगोलशास्त्र, गणित, दर्शन ये सब भारतीय ज्ञान परंपरा के स्वर्णिम अध्याय रहे हैं। परंतु औपनिवेशिक काल में मैकॉले की शिक्षा पद्धति ने भारतीय मूल्यों, भाषाओं और ज्ञान तंत्र को शिक्षा से बाहर कर दिया। शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्र निर्माण के बजाय सरकार चलाने के लिए क्लर्क तैयार करना बन गया।

इक्कीसवीं सदी में विश्व बहुसांस्कृतिकता, नैतिकता, पर्यावरणीय संकट, तनाव, मानसिक स्वास्थ्य आदि मुद्दों से जूझ रहा है। ऐसे समय में भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल तत्त्व मानव केन्द्रित शिक्षा, आत्मानुशासन, योग, अहिंसा, समरसता,

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

प्रकृति सम्मान, विज्ञान परकता, और समग्रता विश्व को नए समाधान प्रदान कर सकते हैं। छम्च् 2020 इसी संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा के केंद्र में लाने का प्रयास करती है।

अध्ययन की आवश्यकता

1. भारतीय मूल्य आधारित शिक्षा का अभाव
2. बढ़ते सामाजिक विकार, तनाव और अतिस्पर्धा
3. पर्यावरणीय असंतुलन और ज्ञान से प्रकृति का अलगाव
4. छात्रों में जड़ों से दूरी एवं सांस्कृतिक हीन भावना
5. भारतीय साहित्य और विज्ञान के योगदान की उपेक्षा
6. कौशल आधारित शिक्षा और पारंपरिक लोक ज्ञान की अनदेखी

इन परिस्थितियों में भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्स्थापन समय सापेक्ष और अत्यंत आवश्यक है।

शोध के उद्देश्य

1. भारतीय ज्ञान परंपरा की ऐतिहासिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि का अध्ययन।
2. छम्च् 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित प्रावधानों का विश्लेषण।
3. वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इन प्रावधानों की उपयोगिता का मूल्यांकन।
4. राष्ट्रीय विकास में भारतीय ज्ञान की भूमिका की पहचान।
5. भावी शिक्षा मॉडल के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

मुख्य चर्चा

1. भारतीय ज्ञान परम्परा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
2. भारत की ज्ञान–परम्परा बहुस्तरीय, बहुभाषी और बहु–सांस्कृतिक रही है।

मुख्य घटक

वेद, उपनिषद, ब्राह्मण, स्मृति ग्रंथ, आयुर्वेद, योग–सूत्र, नाट्यशास्त्र, अर्थशास्त्र, न्याय, मीमांसा, सांख्य, वेदान्त दर्शन, ज्योतिष, गणित, कृषि–ज्ञान, जल–संरक्षण, लोक–ज्ञान, हस्तशिल्प, स्थापत्य–कला, इनमें वैज्ञानिक दृष्टि, तार्किक सोच, पर्यावरण अनुकूल जीवन, आध्यात्मिक संतुलन और नैतिकता का समन्वय मिलता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूल भावना

NEP 2020 शिक्षा को तीन प्रमुख आधारों पर पुनर्गठित करती है

1. समग्र व्यक्तिगत विकास
2. 21वीं सदी के कौशल
3. भारतीयता पर आधारित वैश्विक नागरिक

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

नीति स्पष्ट रूप से कहती है कि शिक्षा को "भारतीय जड़ों" से जोड़ना आवश्यक है।

NEP 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रमुख प्रावधान

3.1 मातृभाषा और सांस्कृतिक जुड़ाव

कक्षा 5 तक मातृभाषा, स्थानीय भाषा में शिक्षा रू अब सभी सरकारी, निजी एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों (अल्पसंख्यक विद्यालयों सहित) में कक्षा 1 से 5 तक की शिक्षा मातृभाषा में दी जाएगी। NEP 2020 के तहत भारत के सभी राज्यों की प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा में शिक्षा या क्षेत्रीय भाषा या स्थानीय भाषा में देने पर जोर दिया गया है। इस नीति के पीछे यह विश्वास है कि बच्चे अपनी पहली भाषा में बेहतर सीखते हैं। इसका उद्देश्य है कि बच्चे घर की उस भाषा में सीखें जिसमें वे सोचते और समझते हैं, साथ ही घर में बात करते हुए सुनते है।

भारतीय भाषाओं का विकास रू एक युग में जहां तकनीक ने दुनिया को जोड़ा है, वहीं यह भी महत्वपूर्ण है कि भारतीय भाषाएं डिजिटल स्पेस में कैसे स्थान पा रही हैं। आज भारत सरकार 'भाषा इंडिया', 'नेशनल लैंग्वेज ट्रांसलेटर मिशन' और ।प् आधारित भारतीय भाषाओं के अनुवाद मॉडल्स पर कार्य कर रही है। बीते कुछ वर्षों में सरकार ने बहुभाषी आधारभूत तकनीक का विकास किया है, जिससे 22 भारतीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री का निर्माण किया जा सके। इससे डिजिटल साक्षरता में भी इजाफा होगा और स्थानीय नागरिकों को सरकारी योजनाओं का लाभ सरलता से मिलेगा।

भारतीय भाषाओं का संरक्षण रू आई.जी.एन.सीए भारत की भाषाई और सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा के लिए दस्तावेजीकरण, डिजिटलीकरण, शोध और जागरूकता कार्यक्रम चलाता है। प्रमुख पहलों में स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों के लिए भारत विद्या परियोजना (बीवीपी), वैदिक ग्रंथों के लिए वैदिक विरासत अभिलेखागार और मौखिक परंपराओं और लोक कथाओं के लिए लोक परंपरा शामिल हैं। आदि दृश्य कार्यक्रम स्वदेशी भाषाओं और रॉक कला का अध्ययन करता है, जबकि कला निधि डिजिटल लाइब्रेरी दुर्लभ पांडुलिपियों और जाति विवरण अभिलेखों को संरक्षित करती है। पूर्वोत्तर भारत प्रलेखन परियोजना नागा, बोडो, मिजो और खासी जैसे समुदायों के मौखिक इतिहास और भाषाई संरचनाओं को रिकॉर्ड करती है। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय सांस्कृतिक मानचित्रण मिशन (एनएमसीएम) देश भर में 6 लाख गांवों का मानचित्रण करते हुए क्षेत्रीय भाषाओं, कला रूपों और रीति–रिवाजों का अभिलेखीकरण कर रहा है। इससे छात्र अपनी संस्कृति, लोक.परंपराओं और लोक. ज्ञान से जुड़ते हैं।

3.2 भारतीय ज्ञान प्रणाली का समावेशन

NEP 2020 की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है भारतीय ज्ञान प्रणाली प्रकोष्ठ की स्थापना।

इसके अंतर्गत शामिल – भारतीय दर्शन, आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, पारंपरिक कृषि–ज्ञान, जल संरक्षण के स्वदेशी मॉडल, कला, संगीत, नृत्य, लोक संस्कृति, पंचतत्व आधारित पर्यावरणीय सोच।

3.3 योग, ध्यान और मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

नीति में योग, खेल, ध्यान, मूल्य शिक्षा, जीवन कौशल को नियमित पाठ्यचर्या में सम्मिलित करने का निर्देश है। भारत में विकसित योग विश्व के लिए तनाव मुक्ति और स्वास्थ्य का प्रमुख साधन बन चुका है।

3.4 नैतिक शिक्षा और भारतीय मूल्य

नैतिक शिक्षा और भारतीय मूल्यों में सम्मान, ईमानदारी, सत्य, अहिंसा, करुणा, दया, त्याग, और निष्काम कर्म जैसे सिद्धांत शामिल हैं। इन मूल्यों का उद्देश्य चरित्र निर्माण करना और जिम्मेदार नागरिक बनाना है, जो समाज में सद्भाव और आशावादिता लाते हैं। इनके अलावा सामाजिक समरसता और कर्तव्यबोध, पंचतत्व.आधारित पर्यावरणीय मूल्य के प्रति जागरूक करना है।

3.5 कला समेकित शिक्षा

भारतीय कला परंपरा,नृत्य, संगीत, नाट्य, चित्रकला, शिल्प, लोक कलाएँ, भारतीय स्थापत्य इन सभी को नई शिक्षा पद्धति में अनिवार्य तत्व माना गया है।

3.6 अनुभव आधारित और कौशल आधारित शिक्षण

यह भारतीय शिक्षा का मूल सिद्धांत रहा है। गुरुकुल शिक्षा स्मंतदपदह इल क्रपदह

3.7 भारतीय विज्ञान और गणित का पुनर्मूल्यांकन

भारतीय गणितज्ञों और वैज्ञानिकों आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, सुश्रुत, चरक, कात्यायन आदि के योगदान को पाठ्यक्रम में शामिल करने पर बल।

4. NEP 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा का महत्व

1. राष्ट्रीय पहचान और सांस्कृतिक आत्मविश्वास का निर्माण
2. शिक्षा का मानवीय और नैतिक आधार मजबूत
3. समग्र विकासकृशारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक
4. पर्यावरणीय समझ, सतत विकास और प्रकृतिदृसंतुलन
5. स्वदेशी विज्ञान, कृषि एवं चिकित्सा को प्रोत्साहन
6. वैश्विक स्तर पर भारतीय शिक्षादृमॉडल की प्रतिष्ठा
7. युवाओं में सांस्कृतिक हीनभावना का निवारण
8. रोजगारदृउन्मुख कौशल और लोक ज्ञान का संरक्षण

चुनौतियाँ

NEP 2020 भारतीय ज्ञान, दर्शन, कला, भाषा, विज्ञान और मूल्यों को आधुनिक शिक्षा के साथ जोड़ने का लक्ष्य रखती है, लेकिन इसे जमीनी स्तर पर उतारने में निम्नलिखित बाधाएँ आ सकती हैं–

1. शिक्षक सामर्थ्य विकास और आपूर्ति

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

- प्रशिक्षित शिक्षकों की कमीरू भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) के विभिन्न पहलुओं जैसे योग, आयुर्वेद, प्राचीन भारतीय विज्ञान, दर्शन आदि को पढ़ाने के लिए विशेषज्ञ और प्रशिक्षित शिक्षकों की भारी कमी है।
- पुनः प्रशिक्षणरू मौजूदा शिक्षकों को (IKS) को प्रभावी ढंग से पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए व्यापक और गहन पुनः प्रशिक्षण की आवश्यकता होगी।

2. पाठ्य चर्या और मानकीकरण

- सामग्री का प्रमाणीकरण: एक विशाल और विविध क्षेत्र है। इसकी सामग्री को सत्यपूर्ण, वैज्ञानिक और सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य तरीके से चुनना और मानकीकृत करना एक बड़ी चुनौती है, ताकि यह केवल मिथक या अपुष्ट जानकारी बनकर न रह जाए।
- समकालीन ज्ञान के साथ समन्वय रू भारतीय ज्ञान को आधुनिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अन्य विषयों (जैसे STEM) के साथ तार्किक और सहज तरीके से एकीकृत करने के लिए नवीन पाठ्य चर्या विकसित करने की आवश्यकता है।

3. भाषाई बाधाएँ और संसाधन

भारतीय भाषाओं में सामग्री: भारतीय ज्ञान का एक बड़ा हिस्सा संस्कृत या अन्य भारतीय भाषाओं में है। इन प्राचीन ग्रंथों और ज्ञान को समकालीन छात्रों के लिए सुलभ बनाने हेतु उनका अनुवाद और सरलीकरण करना एक बड़ी चुनौती है।

पाठ्य पुस्तकों और संसाधनों की कमी: IKS पर आधारित गुणवत्ता पूर्ण पाठ्य पुस्तकों, संदर्भ सामग्री और शिक्षण–अधिगम उपकरणों को विकसित करने में समय और संसाधन लगेंगे।

4. शिक्षण जगत का विरोध

परंपरागत शैक्षणिक चिंतन: कुछ पारंपरिक अकादमिक हलकों से भारतीय ज्ञान को आधुनिक शिक्षा में शामिल करने का प्रतिरोध हो सकता है, जो इसे गैर–वैज्ञानिक या अव्यावहारिक मान सकते हैं।

मानसिकता में बदलाव: दशकों से चली आ रही याद करके सीखने की पद्धति और केवल परीक्षा–केंद्रित शिक्षा प्रणाली से हटकर समग्र और बहु–विषयक दृष्टिकोण अपनाना शिक्षकों और छात्रों दोनों के लिए एक मानसिक चुनौती है।

5. क्रियान्वयन और आर्थिक अड़चनें

स्थानीय स्तर पर कार्यान्वयन: भारत में शिक्षा एक समवर्ती विषय है, इसलिए राज्यों और केंद्र के बीच समन्वय स्थापित करना और नीति को पूरे देश में समान रूप से लागू करना जटिल है।

पर्याप्त धन: NEP 2020 की सफलता, विशेष रूप से प्ज्ञै के एकीकरण के लिए, बुनियादी ढांचे, शिक्षक प्रशिक्षण और गुणवत्ता पूर्ण सामग्री के विकास के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधनों की मांग करती है।

संक्षेप में, भारतीय ज्ञान परंपरा को NEP 2020 के माध्यम से मुख्यधारा की शिक्षा में लाना एक परिवर्तन कारी है लेकिन जटिल कार्य है, जिसके लिए व्यापक तैयारी, सहयोग और शिक्षकों तथा प्रशासकों के मजबूत संकल्प की आवश्यकता होगी।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

सुझाव

1. भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम।
2. स्कूल और विश्वविद्यालय स्तर पर भारतीय ज्ञान पर विशेष अनिवार्य पाठ्यक्रम।
3. योग, आयुर्वेद, संस्कृति, भारतीय गणित, ज्योतिष आदि पर रिसर्च सेंटर की स्थापना।
4. स्थानीय लोक ज्ञान का दस्तावेजीकरण।
5. डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भारतीय ज्ञान सामग्री की उपलब्धता।
6. विद्यार्थियों के लिए इंटर्नशिप आधारित भारतीय कलादृकौशल प्रशिक्षण।
7. भारतीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण सामग्री का विकास।

निष्कर्ष

NEP 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था के इतिहास में एक मील का पत्थर है। यह केवल एक नीति नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्जागरण का दस्तावेज है। यह शिक्षा को वैश्विक प्रतिस्पर्धा उन्मुख बनाने के साथ–साथ भारतीय संस्कृति, भारतीय मूल्य और भारतीय ज्ञान धाराओं से जोड़ती है। समग्र, नैतिक, वैज्ञानिक, समावेशी और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध शिक्षा मॉडल का निर्माण यही NEP 2020 का मूल उद्देश्य है। यदि नीति के प्रावधान प्रभावी रूप से लागू किए जाएँ तो भारत एक ऐसी ज्ञान महाशक्ति बन सकता है जो आधुनिकता और परम्परा का श्रेष्ठ समन्वय विश्व के सामने प्रस्तुत करेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली – मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
2. सिंह, अरविंद। भारतीय ज्ञान परम्परा – एक अध्ययन. दिल्ली – भारतीय ज्ञानपीठ।
3. शर्मा, ओंकारनाथ। भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं दर्शन. दिल्ली – अटल प्रिंटर्स।
4. कुमार, अशोक। "NEP 2020 and Indian Knowledge System", भारतीय शिक्षा जर्नल, खंड 12, अंक 3, 2021
5. मिश्रा, मधुसूदन। योग और भारतीय शिक्षा. वाराणसीरू काशी विद्यापीठ प्रकाशन।
6. चौबे, सुरेश। भारतीय संस्कृति और शिक्षा. दिल्ली – राजकमल प्रकाशन

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020 के क्रियान्वयन में चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

डॉ. नटवरलाल गुप्ता प्राध्यापक (वाणिज्य)

डॉ. इन्दु डावर सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य)

शासकीय कन्या महाविद्यालय बड़वानी

सारांश (Abstract)– भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020 ने शिक्षा–प्रणाली में व्यापक सुधारों का मार्ग प्रशस्त किया है। यह नीति वैश्विक प्रतिस्पर्धा, कौशल–आधारित शिक्षा, समग्र विकास, बहुभाषिकता एवं तकनीक–सक्षम शिक्षण पर बल देती है। किंतु इसके सफल क्रियान्वयन के सामने अवसंरचना, वित्तीय संसाधन, शिक्षक प्रशिक्षण, सामाजिक असमानताएँ, डिजिटल विभाजन तथा संस्थागत समन्वय जैसी अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र में NEP–2020 के उद्देश्यों, कार्यान्वयन की प्रमुख बाधाओं तथा उपलब्ध संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि यदि नीति के अनुरूप शासन, शैक्षणिक संस्थान और समुदाय मिलकर कार्य करें, तो भारत की शिक्षा व्यवस्था वैश्विक मानकों तक पहुँच सकती है।

1. प्रस्तावना (Introduction)

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास का आधार होती है। बदलती वैश्विक परिस्थितियों, चौथी औद्योगिक क्रांति, तकनीकी नवाचार और कौशल–आधारित रोजगार की बढ़ती मांग ने भारत को शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन करने के लिए प्रेरित किया। इसी उद्देश्य से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू की गई, जो भारत में 34 वर्षों बाद शिक्षा क्षेत्र में सबसे बड़ा सुधार है।

यह नीति शिक्षा को लचीला, बहु–विषयक, कौशल–केंद्रित और समावेशी बनाने का लक्ष्य रखती है। हालांकि नीति की अपेक्षित सफलता उसके प्रभावी क्रियान्वयन पर निर्भर करती है, जहाँ अनेक चुनौतियाँ सामने आती हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन में चुनौतियाँ

1. वित्तीय संसाधनों की कमी– नीति में शिक्षा पर कुल GDP का 6% व्यय करने की अनुशंसा की गई है, जो कि एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य है। वर्तमान में शिक्षा क्षेत्र को पर्याप्त बजट नहीं मिल पाता, जिसके कारण डिजिटल संसाधनों का विकास, शिक्षक प्रशिक्षण, विद्यालयों के ढाँचे का विस्तार, और नवाचार आधारित कार्यक्रमों का कार्यान्वयन बाधित होता है। अधिकांश राज्यों में शिक्षा बजट की सीमाएँ नीति के प्रभावी क्रियान्वयन को धीमा कर देती हैं।

2. डिजिटल विभाजन की समस्या– डिजिटल शिक्षा राष्ट्रीय शिक्षा नीति का केंद्रीय घटक है, लेकिन भारत में डिजिटल असमानता बहुत बड़ी है। ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की धीमी गति, बिजली आपूर्ति की अस्थिरता और स्मार्ट डिवाइसों की कमी के कारण e–learning को लागू करना चुनौतीपूर्ण है। शहरों और गाँवों के बीच डिजिटल उपलब्धता का अंतर नीति के उद्देश्यों को कमजोर करता है।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

3. शिक्षक प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षण पद्धति में बड़े सुधारों की बात करता है—जैसे कौशल आधारित शिक्षा, गतिविधि आधारित शिक्षा, और बहुविषयी अध्यापन। इन नई पद्धतियों को लागू करने के लिए शिक्षकों के व्यापक प्रशिक्षण की आवश्यकता है। अधिकांश शिक्षक पारंपरिक रटने–रटाने पर आधारित शिक्षण से परिचित हैं, अतः नई प्रणालियों को अपनाना उनके लिए कठिन है।

4. मातृभाषा में शिक्षण की जटिलताएँ– नीति के अनुसार कक्षा 5 तक मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। यह उद्देश्य बच्चों की समझ के लिए महत्त्वपूर्ण है, किंतु व्यवहार में इसे लागू करना आसान नहीं है। अनेक राज्यों में एक ही जिले में कई बोलियाँ बोली जाती हैं, ऐसे में शिक्षण–सामग्री तैयार करना और योग्य शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित करना चुनौती बन जाता है।

5. 5+3+3+4 की नई शिक्षा संरचना का कार्यान्वयन– यह संरचना शिक्षा को समग्र और चरणबद्ध बनाती है, लेकिन इसे लागू करने के लिए विद्यालयों में कक्षाओं, पाठ्य–पुस्तकों, मूल्यांकन प्रणालियों और प्रशासनिक प्रक्रियाओं में बड़े पैमाने पर परिवर्तन की आवश्यकता है। ग्रामीण क्षेत्रों और छोटे निजी विद्यालयों में इस बदलाव के लिए संसाधनों की कमी है।

6. मूल्यांकन प्रणाली में सुधार– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पारंपरिक परीक्षा आधारित मूल्यांकन से हटकर कौशल आधारित और सतत मूल्यांकन प्रणाली का सुझाव दिया गया है। इसे लागू करने के लिए शिक्षकों, परीक्षा बोर्डों और संस्थानों को नई सोच अपनानी होगी। मूल्यांकन में पारदर्शिता बनाए रखना और शिक्षकों को इस पद्धति में प्रशिक्षित करना कठिन कार्य है।

7. उच्च शिक्षा में संरचनात्मक बदलाव– नीति उच्च शिक्षा को बहुविषयी बनाने, शोध को बढ़ावा देने, और कॉलेजों को अधिक स्वायत्तता देने की बात करती है। लेकिन अनेक कॉलेजों के पास आवश्यक मानव संसाधन, शोध–सुविधाएँ और वित्तीय संसाधन उपलब्ध नहीं हैं। छोटे एवं दूरस्थ क्षेत्रों के संस्थानों के लिए इन मानकों पर खरा उतरना कठिन है।

8. केंद्र और राज्यों के बीच समन्वय– भारत की शिक्षा व्यवस्था संघीय ढाँचे का पालन करती है, जिसमें शिक्षा केंद्र एवं राज्य दोनों के अधिकार क्षेत्र में आती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कई बिंदुओं पर राज्यों के विचार भिन्न हैं। नीति के समान रूप से क्रियान्वयन के लिए राज्यों के बीच तालमेल की कमी एक बड़ी चुनौती है।

9. सामाजिक जागरूकता की कमी– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों और लाभों के बारे में आम जनता, विद्यालय प्रशासन, अभिभावकों और छात्रों में पूरी जानकारी नहीं है। अभिभावकों को मातृभाषा में पढ़ाई, कौशल आधारित शिक्षा और वैकल्पिक विषयों के महत्व के बारे में जागरूक करना आवश्यक है।

10. प्रशासनिक ढांचे की जटिलताएँ– कई स्कूलों और कॉलेजों में प्रशासनिक प्रक्रियाएँ अत्यधिक जटिल तथा धीमी हैं। नई नीतियों को अपनाने के लिए प्रशासनिक सुधार आवश्यक हैं, जो कम समय में संभव नहीं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन की संभावनाएँ

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

1. शिक्षा की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार– नीति का केंद्रबिंदु रटने पर आधारित शिक्षा को हटाकर गतिविधि आधारित, कौशल आधारित और वैचारिक शिक्षा को अपनाना है। यह छात्रों में समस्या समाधान क्षमता, नवाचार, और विश्लेषणात्मक सोच को बढ़ावा देता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से न केवल सीखने का स्तर बढ़ेगा बल्कि यह छात्रों के समग्र विकास को सुनिश्चित करेगा।

2. डिजिटल शिक्षा और तकनीकी प्रगति– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में डिजिटल प्लेटफॉर्मों को बढ़ावा देने की बात कही गई है, जैसे—SWAYAM, DIKSHA, वर्चुअल लैब्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित शिक्षण तंत्र आदि। इससे दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले बच्चे भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। यह तकनीक आधारित शिक्षा को एक नए युग में ले जाता है।

3. बहुविषयी शिक्षा की अवधारणा– नीति के अनुसार विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार किसी भी विषय का चयन कर सकता है। कला, विज्ञान और वाणिज्य की पारंपरिक सीमाएँ टूट जाएँगी। इससे सीखना अधिक लचीला होगा और छात्रों को अपनी प्रतिभा के अनुरूप करियर विकल्प चुनने में सहायता मिलेगी।

4. कौशल विकास और रोजगार उपलब्धता– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में व्यावसायिक शिक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है, जिससे विद्यार्थियों में व्यावहारिक कौशल विकसित होंगे। स्थानीय उद्योगों, पारंपरिक कलाओं, और आधुनिक तकनीकी क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी साथ ही युवाओं में कार्यक्षमता अधिक और आत्मनिर्भर बनेगा।

5. अनुसंधान एवं नवाचार को प्रोत्साहन– राष्ट्रीय शोध फाउंडेशन (NRF) की स्थापना से भारत में अनुसंधान की गुणवत्ता बढ़ेगी। उच्च शिक्षा संस्थानों और उद्योगों के बीच सहयोग बढ़ेगा। इससे भारत वैश्विक शोध एवं विकास के क्षेत्र में अपनी स्थिति मजबूत कर सकता है।

6. सामाजिक समावेशन और समानता– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पिछड़े क्षेत्रों, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों, लड़कियों, दिव्यांग छात्रों और अल्पसंख्यक समुदायों के लिए विशेष योजनाएँ प्रस्तुत करता है। इससे शिक्षा में समानता आएगी और सभी वर्गों को शिक्षा के अवसर मिलेंगे।

7. मातृभाषा एवं भारतीय संस्कृति का संवर्धन– प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में देने से बच्चों की बौद्धिक समझ विकसित होती है। साथ ही, यह स्थानीय संस्कृति, परंपराओं और स्वदेशी ज्ञान परंपरा को सुदृढ़ करता है।

8. वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप शिक्षा–क्रेडिट ट्रांसफर, मल्टी–एंट्री–मल्टी–एग्जिट प्रणाली, और विदेशी विश्वविद्यालयों के भारत में प्रवेश से भारतीय शिक्षा प्रणाली अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप बन रही है। इससे छात्रों को वैश्विक अवसर मिलेंगे।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक नए युग में प्रवेश कराती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए एक परिवर्तनकारी नीति है, जिसमें शिक्षा को आधुनिक, लचीला, समावेशी और वैश्विक बनाने की क्षमता है। यद्यपि इसके क्रियान्वयन में वित्तीय सीमाएँ, डिजिटल असमानता, शिक्षक प्रशिक्षण की कमी, विविध सामाजिक, आर्थिक, संरचनात्मक और प्रशासनिक जटिलताएँ जैसी कई चुनौतियाँ हैं। फिर भी, यह नीति भारत को वैश्विक ज्ञान

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

अर्थव्यवस्था में अग्रणी स्थान दिला सकती है। यदि सरकार, शिक्षण संस्थान, समाज और उद्योग मिलकर प्रयास करें, तो नीति की संभावनाओं का अधिकतम लाभ उठाया जा सकता है। नीति के प्रावधानों को समयबद्ध, पारदर्शी और समन्वित ढंग से लागू किया जाए, तो भारत की शिक्षा प्रणाली विश्व स्तरीय गुणवत्ता प्राप्त कर सकती है।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आने वाले वर्षों में भारत को ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

संदर्भ सूची (References)

1. Ministry of Education, Government of India. National Education Policy 2020.
2. UNESCO. Education for Sustainable Development Goals.
3. World Bank Reports on Education and Digital Divide.
4. AISHE (All India Survey on Higher Education) Reports.
5. MHRD. School Education Quality Index (SEQI).

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय परंपरागत शिक्षा का महत्व

डॉ श्याम नाईक

सहायक प्राध्यापक, भौतिक शास्त्र

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस,

शहीद भीमा नायक शा. स्नातकोत्तर महावि., बडवानी

सारांश– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की समृद्ध, प्राचीन ज्ञान विरासत को आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ एकीकृत करके एक समग्र, बहु–विषयक और चरित्र–निर्माण पर केंद्रित शिक्षा मॉडल स्थापित करने का लक्ष्य रखती है। यह नीति भारतीय ज्ञान को केवल एक ऐतिहासिक विषय के रूप में नहीं, बल्कि भविष्य की चुनौतियों का समाधान करने के लिए आवश्यक एक सशक्त आधार मानती है। भारतीय परंपरागत शिक्षा का महत्व केवल सूचना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह नैतिक मूल्यों, तार्किक क्षमता और आत्म–जागरूकता के विकास पर केंद्रित है, जो 21वीं सदी के छात्रों के लिए अपरिहार्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत विकसित ज्ञान के क्षेत्रों, जैसे गणित, खगोल विज्ञान, योग, आयुर्वेद, पर्यावरण चेतना और तर्कशास्त्र को वैज्ञानिक ढंग से पाठ्यक्रम में शामिल करने पर जोर देती है। यह नीति पारंपरिक भारतीय कलाओं और हस्तशिल्पों को व्यावसायिक शिक्षा से जोड़कर 'करके सीखने' की पद्धति को भी प्रोत्साहित करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में संस्कृत को भारतीय ज्ञान परंपरा की कुंजी मानते हुए, इसके संवर्धन पर विशेष ध्यान दिया गया है। यह पहल छात्रों में उनकी सांस्कृतिक जड़ों और राष्ट्रीय पहचान के प्रति गौरव एवं आत्मविश्वास की भावना को बढ़ावा देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय परंपरागत शिक्षा का समावेश एक दूरदर्शी कदम है, जो भारत की शिक्षा प्रणाली को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के साथ–साथ मानवीय मूल्यों पर आधारित एक संतुलित समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। प्रस्तुत पेपर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा की पुनःस्थापना और प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है।

की वर्ड: भारतीय ज्ञान परंपरा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति,

1. प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय परम्परागत शिक्षा प्रणाली एक अत्यंत समृद्ध, सुदृढ, सुव्यवस्थित और जीवन–उन्मुखी शिक्षा प्रणाली थी। इस शिक्षा प्रणाली के कारण ही वेदो का अद्वितीय ज्ञान भारतवर्ष में हजारों वर्षों तक संरक्षित और सुरक्षित रहा। इस ज्ञान और शिक्षा प्रणाली ने हजारों वर्षों तक भारतीय समाज को वैश्विक स्तर पर उन्नत और समृद्धशाली बनाये रखा था। यह शिक्षा प्रणाली आधुनिक शिक्षा प्रणाली से कई मायनों में भिन्न थी। इस प्रणाली का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत ज्ञानार्जन से बढकर व्यक्ति का समग्र और सर्वांगीण विकास था, जो उसे राष्ट्र के लिये एक योग्य नागरिक बनाना था। भारत में इस शिक्षा और शिक्षा प्रणाली की समृद्ध विरासत वैदिक काल (सबसे पहला काल) से निरंतर चली आ रही थी। इस विरासत में भारतीय परम्परागत

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

विज्ञान केवल संख्याओं सूत्रों और अवधारणाओं का संग्रह मात्र नहीं था, अपितु यह भारत के समृद्ध सांस्कृतिक, दार्शनिक और बौद्धिक जीवन में बहुत गहराई तक समाहित हुआ था। भारतीय विज्ञान वैदिक काल से लेकर वर्तमान काल तक लगातार विकसित होता चला आ रहा है। समय के साथ इसमें कई नये सूत्रों तथा कई नई अवधारणाओं का समावेश होता रहा है तथा कई सूत्र और अवधारणायें विलोपित भी हुये है। वैदिक काल तथा उसके बाद के कालो में भारतीय विज्ञान वैश्विक स्तर बहुत ही उन्नत अवस्था में रहा था। उस काल में भारतीय विद्वानों ने इस विज्ञान का उपयोग करके अनेक क्षेत्रों जैसे खगोल विज्ञान, ज्योतिष विज्ञान, भूगोल, स्थापत्य कला, विद्वान वास्तुकला आदि के क्षेत्रों के अनेको कीर्तिमान स्थापित किये थे। बहुत बड़ी–बड़ी गणनायें करके उन्हें प्रायोगिक रूप से प्रयुक्त भी किया था। वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक कई भारतीय विद्वानों ने विश्व को महत्वपूर्ण अवधारणाएँ देकर वैश्विक विज्ञान और प्रौद्योगिकी को नई दिशा प्रदान की थी तथा मानव सभ्यता के विकास में अमूल्य योगदान दिया था। भारतीय परम्परागत विज्ञान का मानव सभ्यता के विकास में यह वैश्विक ऐतिहासिक योगदान और भारतवर्ष का सांस्कृतिक महत्व आपस में बहुत गहराई से जुड़े हुए हैं।

2. भारतीय परम्परागत शिक्षा प्रणाली

भारतवर्ष में प्राचीन काल से जो शिक्षा प्रणाली चली आ रही थी, उसे ही भारतीय परंपरागत शिक्षा प्रणाली कहते है। इस शिक्षा प्रणाली की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार है।

1. मुख्य उद्देश्य

प्राचीन भारतीय परम्परागत शिक्षा के केंद्र में मानव जीवन के चार पुरुषार्थ धर्म (कर्तव्य), अर्थ (धन), काम (इच्छाएँ), और मोक्ष (मुक्ति) थे। प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षा इस प्रकार से दी जाती थी, कि विद्यार्थी अपने जीवनकाल में इन चारों पुरूषार्थो को पूर्ण कर पाये। धर्म व्यक्ति को अपने परिवार, समाज, देश के प्रति अपने कर्तव्यों का बोध कराता है। यह व्यक्ति को स्वयं के द्वारा किये जाने वाले कार्यो के बारे में मार्गदर्शन प्रदान करता है, कि व्यक्ति को क्या कार्य करना चाहिये और क्या नही करना चाहिये। इसका उद्देश्य सम्पूर्ण मानव समाज की भलाई है। यह व्यक्ति को एक जिम्मेदार नागरिक बनाता था, जो परिवार, समाज, देश के प्रति अपने कर्तव्यों को समझता हो और उन्हे पूर्ण करता हो। इनसे विद्यार्थी का चरित्र निर्माण होता है तथा नैतिकता की भावना का विकास होता है। इसमें न्याय, सत्य, अहिंसा, दया, ईमानदारी, अनुशासन और बड़ों का सम्मान जैसे मानवीय मूल्यों को सर्वोपरि रखा जाता था। अर्थ पुरूषार्थ के अंतर्गत विद्यार्थीयों को व्यावहारिक और व्यावसायिक रूप से कुशल बनाया जाता था। छात्रों को अपने जीवनयापन के लिए आवश्यक कलाओं, कौशलों, शिल्पों और कृषि/व्यापार आदि का ज्ञान दिया जाता था, जिससे वह इन कार्यों के द्वारा अपने जीवन का निर्वाह भली भॉती कर पाये तथा दूसरों के जीवन निर्वाह में भी सहायक हो सकें। अर्थ सामाजिक व्यवस्था को गतिमान रखने के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण कारक था। इस शिक्षा प्रणाली का अंतीम उद्देश्य विद्यार्थी का आत्मिक और आध्यात्मिक विकास था, जिससे विद्यार्थी शिक्षा का अंतिम लक्ष्य आत्म–साक्षात्कार (Self–realization) और मोक्ष प्राप्त कर सकें।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

2. शिक्षा का केंद्र: गुरुकुल प्रणाली

प्राचिन भारत में विद्यार्थी को शिक्षा गुरुकुल में प्रदान की जाती थी। गुरुकुल प्राचिन भारतीय पारंपरिक शिक्षा का मुख्य केंद्र थे। गुरुकुल सामान्यतया गॉवों व शहरों से दूर प्राकृतिक परिवेश में स्थित होते थे। अतः विद्यार्थी गॉवों शहरों की हलचल से दूर, शांत प्राकृतिक वातावरण (जंगल या नदी के किनारे) में शिक्षा ग्रहण करते थे। गुरू और शिष्य के बीच संबंध भी बहुत अधिक आत्मिक पवित्र और घनिष्ठ होता था। गुरु को पिता तुल्य मानकर सम्मान दिया जाता था तथा गुरू भी अपने शिष्य से पुत्रवत स्नेह रखकर उन्हे शिक्षित करते थे। शिष्य गुरु के परिवार का सदस्य बनकर रहता था। छात्रों की जीवन शैली का भी बहुत अधिक महत्व होता था। छात्रों का जीवन सादा, अनुशासित और कठोर (ब्रह्मचर्य) होता था। वे केवल अध्ययन नहीं करते थे, बल्कि आश्रम के दैनिक कार्यों (जैसे लकड़ी काटना, पानी भरना, पशुओं की देखभाल, भिक्षाटन) में भी हाथ बंटाते थे, जिससे उनमें विनम्रता और श्रम के प्रति सम्मान पैदा होता था।

3. शिक्षण विधियाँ

प्राचिन भारत में विद्यार्थी शिक्षण विधियाँ सरल, सहज तथा अत्यंत प्रभावशाली थीं। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण विधियॉ इस प्रकार है।

1) **मौखिक विधि:** वेदों और अन्य ग्रंथों को पीढ़ी–दर–पीढ़ी सुनकर और याद करके (श्रुति परंपरा) ज्ञान को संरक्षित और सुरक्षित किया जाता था। इस विधि से स्मृति शक्ति और एकाग्रता में अद्भुत विकास होता था।
2) **वाद–विवाद और शास्त्रार्थ की विधि:** विषयों की गहरी समझ के लिए छात्रों के बीच खुली चर्चा, तर्क–वितर्क (वाद–विवाद) और शास्त्रार्थ (विद्वानों के बीच बहस) को प्रोत्साहित किया जाता था। इससे विचार शक्ति, तर्क शक्ति तथा आपसी सामंजस्य को बल मिलता था।
3) **प्रश्नोत्तर और व्याख्यान विधि :** गुरु अपने विद्यार्थीयों विस्तृत व्याख्यान देते थे। उनसे प्रश्न उत्तर करते थे।
4) **अनुभव द्वारा शिक्षा कि विधि:** कई कौशल (जैसे युद्ध कला, शिल्प, कृषि) वास्तविक जीवन के अनुभवों और अभ्यास के माध्यम से सिखाए जाते थे।

4. पाठ्यक्रम

भारतीय परम्परागत शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम बहुत ही व्यापक और बहु–विषयक होते थे। इसमें कई महत्वपूर्ण विषयों पर शिक्षा दी जाती थी जैसे धार्मिक शिक्षा के अंतर्गत विभिन्न धार्मिक ग्रंथों जैसे वेद, उपनिषद, पुराण, दर्शनशास्त्र आदि की शिक्षा दी जाती थी। भाषा और साहित्य की शिक्षा के अंतर्गत संस्कृत व्याकरण (पाणिनि का व्याकरण), काव्य और नाटक आदि की शिक्षा दी जाती थी। विज्ञान और गणित की की शिक्षा के अंतर्गत गणित, खगोल विज्ञान (Astronomy), ज्योतिष, चिकित्सा (आयुर्वेद) आदि की शिक्षा दी जाती थी। सामाजिक विज्ञान की शिक्षा के अंतर्गत राजनीति विज्ञान (अर्थशास्त्र), तर्कशास्त्र, और कानून (धर्मशास्त्र) आदि की शिक्षा दी जाती थी। कला और कौशल की शिक्षा के अंतर्गत संगीत, नृत्य, वास्तुकला, और विभिन्न शिल्प आदि की शिक्षा दी जाती थी। गुरु प्रत्येक शिष्य की क्षमताओं और कमजोरियों को पहचान

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

कर व्यक्तिगत मार्गदर्शन देते थे। शिक्षा पूर्णतया निःशुल्क थी। अध्ययन पूरा होने के बाद शिष्य की क्षमता और इच्छा के अनुसार अपने गुरु को भेंट देता था, जिसे गुरूदक्षिणा कहते थे।

3. आधुनिक समय में प्रासंगिकता

वर्तमान में भारत में प्रचलित मैकाले की शिक्षा प्रणाली हमारी प्राचीन भारतीय परंपरागत प्रणाली की तरह उत्कृष्ट नही है। इस शिक्षा प्रणाली में अनेक त्रुटियॉ उपस्थित है इन त्रुटियों के कारण आज समाज और देश के सामने कई तरह की समस्यायें विकराल रूप मे उपस्थित हो गयी है। इस प्रणाली में पारंपरिक भारतीय ज्ञान को बहुत कम महत्व दिया गया है, इसने भारतीय संस्कृति और ज्ञान को हाशिए पर धकेलना का काम किया है। इस प्रणाली ने पारंपरिक भारतीय शिक्षा जैसे संस्कृत शिक्षा आदि की आलोचना की और पश्चिमी ज्ञान को प्राथमिकता दी। इसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय ज्ञान और पारंपरिक शिक्षा पद्धतियां कम महत्वपूर्ण हो गईं। इस प्रणाली ने भारतीयों में सामाजिक और सांस्कृतिक विभाजन उत्पन्न किया है। अंग्रेजी शिक्षा ने भारत में एक ऐसे वर्ग का निर्माण किया जो "रंग और रक्त से भारतीय हो, लेकिन विचारों और नैतिकता में ब्रिटिश हो"। इस शिक्षित वर्ग और अशिक्षित जनता के बीच खाई बढ़ गई, जिसके दीर्घकालिक सामाजिक और सांस्कृतिक विभाजन के प्रभाव आज भी देखे जाते हैं। इस शिक्षा प्रणाली में अंग्रेजी भाषा का प्रभुत्व है। इसमें अंग्रेजी को "सफलता का टिकट" बना दिया गया, जिससे अदालत, विश्वविद्यालय और नौकरियाँ उसी भाषा में होने लगीं। इसके कारण भारतीय भाषाएँ, जैसे संस्कृत, हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाएँ, शैक्षिक प्रतिस्पर्धा से बाहर हो गईं और कई भारतीय अवसरों से वंचित रह गए। इस प्रणाली ने छात्रों की रुचियों और कौशलों के बजाय रटने पर जोर दिया, जिससे छात्रों की रचनात्मकता और कौशल का विकास नहीं हो सका। इसने सभी विद्यार्थियों के लिए एक ही तरह के मानदंड लागू किए, भले ही उनकी योग्यता या रुचि अलग हो। मैकाले की योजना "अधोगामी निस्यन्दन का सिद्धान्त" पर आधारित थी। इसका उद्देश्य सिर्फ उच्च और मध्यम वर्ग को शिक्षित करना था ताकि वे समाज के निचले तबके में अंग्रेजी शिक्षा और ब्रिटिश संस्कृति का प्रसार कर सकें। इससे शिक्षा का लाभ समाज के एक छोटे से वर्ग तक ही सीमित रहा और बहुसंख्यक आबादी अशिक्षित रह गई। सबसे बडे दुष्परिणाम के रूप में इस प्रणाली ने भारतीयो में औपनिवेशिक मानसिकता का निर्माण किया। इस शिक्षा ने भारतीयों में एक गहरी हीन भावना पैदा की और औपनिवेशिक मानसिकता को बढ़ावा दिया। इसका मुख्य उद्देश्य ऐसा भारतीय प्रशासकीय वर्ग तैयार करना था जो उपनिवेशवादियों के शासन को बनाए रखने में मदद करे।

4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) में भारतीय परंपरागत शिक्षा का महत्व

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) मौजूदा शिक्षा प्रणाली की कमीयों को दूर कर भारतीय शिक्षा प्रणाली को भारतीय नागरिको और भारतवर्ष के अनूकूल तथा अधिक प्रभावी और श्रेष्ठ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इस प्रकार से बनाई गयी है, कि इसके द्वारा वर्तमान शिक्षा में पारंपरिक भारतीय शिक्षा के कई पहलुओं, जैसे समग्र विकास, अनुभवात्मक शिक्षा, और भारतीय ज्ञान प्रणालियों को आधुनिक पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना है। यह प्रणाली वर्तमान समय में मूल्य–

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

आधारित शिक्षा, सतत विकास और छात्रों के मानसिक कल्याण के लिए प्रेरणा का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। वर्तमान समय में भारतीय परम्परागत ज्ञान शिक्षा (Indian Traditional Knowledge Systems - IKS) की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से महत्वपूर्ण हो गयी है।

1) समग्र विकास

भारतीय पारंपरिक शिक्षा प्रणाली छात्रों के बौद्धिक, भावनात्मक, नैतिक और आध्यात्मिक पहलुओं सहित समग्र विकास पर जोर देती है। इसे शिक्षा प्रणाली में शामिल करने पर यह आधुनिक शिक्षा के "केवल करियर–उन्मुख" दृष्टिकोण की कमियों को दूर करेगा, जिससे विद्यार्थी केवल करियर उन्मुखीकरण छोड़कर समग्र विकास की दिशा में आगे बढेगा।

2) सांस्कृतिक पहचान और मूल्य–आधारित शिक्षा

भारत देश का आधार ही उसकी अपनी विशिष्ट संस्कृति है। यह संस्कृति ही देश की पहचान का आधार है। सांस्कृतिक शिक्षा को आधुनिक पाठ्यक्रम में शामिल करने से छात्रों में अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ती है उन्हे अपनी संस्कृति का ज्ञान होता है, जिससे उनमें सहानुभूति, लचीलापन और महत्वपूर्ण सोच जैसे मानवीय मूल्यों का विकास भी होता है। परंपरागत ज्ञान को पाठ्यक्रम में शामिल करने से छात्रों में अपनी संस्कृति, भाषा और कला के प्रति गौरव, सकारात्मक पहचान और आत्म–सम्मान की भावना जागृत होगी।

3) व्यावहारिक और अनुभवात्मक शिक्षा

प्राचीन भारतीय शिक्षा में व्यावहारिक अनुभवों और परियोजना–आधारित शिक्षा (जैसे गुरु–शिष्य परंपरा) का उपयोग किया जाता था। इससे विद्यार्थी प्रायोगिक रूप से सीख कर कुशल बनता था। वर्तमान शिक्षा में इस पद्धति का उपयोग बहुत कम था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के अंतर्गत व्यावहारिक अनुभवों और परियोजना–आधारित शिक्षा की विधी को भी बढाया जायेगा, जिससे विद्यार्थी सौद्धांतिक ज्ञान के साथ साथ प्रायोगिक रूप से भी कुशल बने

4) सतत विकास

भारतीय पारंपरिक विज्ञान, जैसे कि कृषि, जल प्रबंधन और स्वास्थ्य प्रणालियाँ (आयुर्वेद), प्रकृति के साथ सामंजस्य और सतत विकास पर आधारित थीं। कृषि, जल प्रबंधन, आयुर्वेद आदि की इन प्राकृतिक पद्धतियों को बढाने से कई भयावह समस्याओं जैसे पर्यावरण असंतुलन से निपटने में मदद मिलेगी।

5) आलोचनात्मक सोच और समस्या–समाधान

भारतीय पारंपरिक शिक्षा प्रणाली ने हमेशा आलोचनात्मक सोच (critical thinking) और पूछताछ को प्रोत्साहित किया है। इसे भी आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शामिल किया गया है, इससे ज्ञान/विज्ञान/तकनीक के परिष्करण में मदद मिलती है। जो आधुनिक शिक्षा का भी एक प्रमुख लक्ष्य है।

6) आधुनिक विज्ञान के साथ एकीकरण

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (IIT) सहित कई विशेषज्ञ, आधुनिक विज्ञान को पारंपरिक भारतीय ज्ञान के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देते हैं। यह एक व्यापक शिक्षा प्रणाली बनाने में मदद करेगा जो वैश्विक समझ को बढ़ावा देती है।

7) तकनीकी आत्मनिर्भरता और अनुसंधान को बढ़ावा

प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर स्वदेशी तकनीक को बढ़ावा देने का प्रयास किया जा रहा है। यह हमारे देश को तकनिकी आत्मनिर्भरता की ओर ले जाता है। भारतीय ज्ञान प्रणालियों को पाठ्यक्रम में शामिल करने से संबंधित क्षेत्रों में अनुसंधान और अध्ययन को बढ़ावा मिलेगा, जिससे उपयोगी साधनों की खोज की जा सकेगी।

5. निष्कर्ष

आधुनिक शिक्षा के साथ साथ भारतीय पारंपरिक ज्ञान शिक्षा की आवश्यकता ज्ञान के एकीकरण के माध्यम से छात्रों का समग्र विकास करने, उन्हें नैतिक मूल्यों से जोड़ने और सतत एवं व्यावहारिक समाधान खोजने में सक्षम बनाने के लिए है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस भारतीय पारंपरिक ज्ञान को अलग विषय के रूप में नहीं, बल्कि विज्ञान, कला, भाषा और प्रौद्योगिकी सहित सभी विषयों के पाठ्यक्रम में नवचारी ज्ञान के साथ एकीकृत करने का प्रस्ताव करती है। इसका उद्देश्य भारतीय पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक और सटीक तरीके से पढ़ाना है ताकि छात्र अपनी जड़ों से जुड़े रहें और साथ ही साथ आधुनिक चुनौतियों का समाधान करने में सक्षम हों। संक्षेप में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय परंपरागत ज्ञान को केवल इतिहास का विषय नहीं, बल्कि भविष्य के निर्माण और भारत को 'विश्वगुरु' बनाने की यात्रा में एक सशक्त कदम है।

संदर्भ

1. https://ncert.nic.in/textbook/pdf/heih111.pdf
2. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकताः एक गहन विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. प्रियंका देवड़ा

सहायक प्राध्यापक, गृह विज्ञान

शासकीय कन्या महाविद्यालय, बड़वानी

1. सारांश– शिक्षा किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती है। भारत सरकार द्वारा लागू की गई श्राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्त होकर एक आत्मनिर्भर और ज्ञान–आधारित भारत के निर्माण की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। इस नीति का सबसे महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी पहलू शिक्षा के सभी स्तरों पर श्भारतीय ज्ञान परंपराश् का समावेश है। यह शोध पत्र इस बात का अन्वेषण करता है कि 21वीं सदी की आधुनिक चुनौतियों–जैसे मानसिक तनाव, पर्यावरणीय संकट, और नैतिक मूल्यों का पतन–का समाधान भारतीय ज्ञान परंपरा में कैसे निहित है। शोध यह सिद्ध करता है कि भारतीय ज्ञान केवल अतीत का गौरव नहीं है, बल्कि गणित, विज्ञान, चिकित्सा, खगोल विज्ञान, और प्रबंधन के क्षेत्र में आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। इस पत्र का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि कैसे IKS और आधुनिक विज्ञान का समन्वय छात्रों के समग्र विकास को सुनिश्चित कर सकता है।

मुख्य शब्दः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय ज्ञान परंपरा प्ज्ञै वैदिक गणित, समग्र विकास, सतत जीवन शैली, विऔपनिवेशीकरण।

2. प्रस्तावना

एसा विद्या या विमुक्तये (विद्या वह है जो मुक्त करे)–यह भारतीय संस्कृति में शिक्षा का मूल मंत्र रहा है। परंतु, विगत कई शताब्दियों, विशेषकर ब्रिटिश शासनकाल के दौरान, मैकाले की शिक्षा पद्धति ने भारतीयों को अपनी जड़ों से काट दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय शिक्षित वर्ग अपनी ही संस्कृति, भाषा और ज्ञान को हीन भावना से देखने लगा। 34 वर्षों के अंतराल के बाद आई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इस ऐतिहासिक भूल को सुधारने का बीड़ा उठाया है।

NEP 2020 का विजन स्पष्ट हैः एक ऐसी शिक्षा प्रणाली जो भारत में सीधे तौर पर निहित हो, जो देश को एक न्यायसंगत और जीवंत ज्ञान समाज में बदलकर वैश्विक महाशक्ति बनाए। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता को समझना अनिवार्य है। भारतीय ज्ञान परंपरा का अर्थ केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं है, बल्कि यह तर्क, विज्ञान, कला, शिल्प और जीवन जीने की कला का एक विशाल महासागर है, जिसे हजारों वर्षों के ऋषियों, मनीषियों और वैज्ञानिकों ने विकसित किया है।

आज जब विश्व श्ग्लोबल वार्मिंग मानसिक अवसाद और असहिष्णुता जैसी समस्याओं से जूझ रहा है, तब भारतीय दर्शन का वसुधैव कुटुम्बकम और श्प्रकृति के साथ सामंजस्य का सिद्धांत एक नई राह दिखाता है। यह शोध पत्र इसी संदर्भ में NEP 2020 के अंतर्गत IKS की उपयोगिता और कार्यान्वयन का विश्लेषण करता है।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

3.भारतीय ज्ञान परंपराः एक वैज्ञानिक और दार्शनिक अवलोकन

भारतीय ज्ञान परंपरा की व्यापकता को समझे बिना इसकी प्रासंगिकता पर चर्चा करना अधूरा होगा। यह ज्ञान दो प्रमुख धाराओं में बहता हैः परा विद्या (आध्यात्मिक ज्ञान) और अपरा विद्या (लौकिक या सांसारिक ज्ञान)। NEP 2020 में अपरा विद्या के उन तत्वों पर जोर दिया गया है जो आधुनिक समय में उपयोगी हैं।

1. **ज्ञान का संरचित स्वरूपः** भारत में ज्ञान के 14 और 18 स्थानों (विद्यास्थान) की चर्चा मिलती है, जिसमें 4 वेद, 6 वेदांग (जिसमें व्याकरण, खगोल विज्ञान और निरुक्त शामिल हैं), पुराण, न्याय, मीमांसा और धर्मशास्त्र शामिल हैं। इसके अलावा 64 कलाओं का वर्णन है जिनमें गायन–वादन से लेकर भवन निर्माण और जल प्रबंधन तक शामिल हैं।
2. **वैज्ञानिक आधारः** भारतीय ज्ञान परंपरा में विज्ञान का स्तर अत्यंत उच्च था। उदाहरण के लिएः
    - **गणितः** शून्य का आविष्कार, दशमलव प्रणाली, ज्यामिति (शुल्ब सूत्र), और त्रिकोणमिति का आधार भारत में रखा गया।
    - **खगोल विज्ञानः** आर्यभट्ट और वराहमिहिर ने बिना दूरबीन के ग्रहों की गति का सटीक वर्णन किया।
    - **चिकित्साः** चरक संहिता और सुश्रुत संहिता (शल्य चिकित्सा) आज भी चिकित्सा विज्ञान के आधार स्तंभ हैं।
    - **धातु विज्ञानः** दिल्ली का लौह स्तंभ, जो सदियों से जंग–रोधी है, भारतीय रसायन विज्ञान की उन्नत अवस्था का प्रमाण है।

अतः, यह धारणा गलत है कि भारतीय ज्ञान केवल दर्शन तक सीमित है यह अत्यंत प्रयोगधर्मी और वैज्ञानिक रहा है।

4.राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख प्रावधान

NEP 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाने के लिए निम्नलिखित प्रावधान किए गए हैंः

1. **पाठ्यचर्या में एकीकरणः** नीति के अनुसार, भारतीय ज्ञान प्रणालियों, जिसमें आदिवासी ज्ञान और स्वदेशी और पारंपरिक तरीके शामिल हैं, को गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, इंजीनियरिंग, भाषा विज्ञान, साहित्य, खेल, और शासन व्यवस्था जैसे विषयों में सटीक और वैज्ञानिक तरीके से शामिल किया जाएगा।
2. **संस्कृत और अन्य शास्त्रीय भाषाएंः** संस्कृत को ज्ञान की कुंजी माना गया है। त्रि–भाषा फॉर्मूले के तहत संस्कृत को स्कूल और उच्च शिक्षा के हर स्तर पर एक विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया जाएगा। इसके अलावा पाली, प्राकृत और फारसी के अध्ययन के लिए भी संस्थान मजबूत किए जाएंगे।
3. **कला और संस्कृति का समावेशः** शिक्षा में कला–एकीकृत दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया जाएगा, जिससे छात्र भारत की विविध सांस्कृतिक विरासत को समझ सकें।
4. **मूल्य आधारित शिक्षाः** श्पंचतंत्र, श्हितोपदेशश् और श्जातक कथाओंश् के माध्यम से नीतिशास्त्र और नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाएगी।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

5. **शिक्षकों का प्रशिक्षणः** शिक्षकों को IKS पढ़ाने के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा ताकि वे आधुनिक संदर्भ में प्राचीन ज्ञान को समझा सकें।

5. 21वीं सदी में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता

यह शोध पत्र का मुख्य भाग है, जहाँ हम यह विश्लेषण करेंगे कि IKS आज के समय में क्यों और कैसे प्रासंगिक है।

(क) आधुनिक विज्ञान और तकनीकी नवाचार के लिए

अक्सर यह माना जाता है कि प्राचीन ज्ञान आधुनिक तकनीक के लिए अनुपयोगी है, लेकिन वास्तविकता इसके विपरीत है।

- **कंप्यूटर साइंस और भाषा विज्ञानः** पाणिनी का व्याकरण (अष्टाध्यायी) दुनिया का सबसे वैज्ञानिक व्याकरण है। आधुनिक श्नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग और कोडिंग के लिए संस्कृत के संरचनात्मक नियम अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। पिंगल ऋषि का श्छन्दशास्त्रश् बाइनरी सिस्टम का आदि स्रोत माना जाता है, जिस पर आज के कंप्यूटर काम करते हैं।
- **गणितीय क्षमताः** वैदिक गणित के सूत्र न केवल गणना की गति को बढ़ाते हैं, बल्कि छात्रों के मस्तिष्क को अलग तरीके से सोचने के लिए प्रेरित करते हैं। यह श्रटने की जगह श्समझन पर जोर देता है।

(ख) स्वास्थ्य और जीवन शैली

कोविड–19 महामारी के बाद दुनिया ने भारतीय जीवन शैली के महत्व को स्वीकारा है।

- **योग और आयुर्वेदः** NEP 2020 में योग को केवल एक व्यायाम नहीं, बल्कि एक जीवन दर्शन के रूप में शामिल करने की बात कही गई है। आयुर्वेद का दिनचर्या और ऋतुचया का सिद्धांत छात्रों को स्वस्थ जीवन जीने की कला सिखाता है।
- **मानसिक स्वास्थ्यः** आज के युवा अवसाद और चिंता से ग्रस्त हैं। भारतीय मनोविज्ञान, जो मन और आत्मा के संबंध को समझता है (जैसे पतंजलि योग सूत्र), पश्चिमी मनोविज्ञान की तुलना में मानसिक शांति के लिए अधिक प्रभावी उपकरण प्रदान करता है। ध्यान को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने से छात्रों की एकाग्रता बढ़ेगी।

(ग) पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास

वर्तमान समय की सबसे बड़ी चुनौती जलवायु परिवर्तन है। पश्चिमी मॉडल उपभोग पर आधारित है, जबकि भारतीय मॉडल श्त्याग और संयम पर।

- IKS में पृथ्वी को ''माता'' (माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः) माना गया है।
- वृक्षों, नदियों और पर्वतों की पूजा का वैज्ञानिक अर्थ पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण है।
- परंपरागत जल संरक्षण (जैसे राजस्थान की बावड़ियाँ) और जैविक खेती की विधियाँ आज के सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स (SDGs) को पूरा करने में सक्षम हैं। NEP 2020 के माध्यम से छात्र इन विधियों को सीखेंगे।

(घ) समग्र मानवीय विकास (Holistic Development)

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

NEP 2020 का लक्ष्य छात्र का श्समग्र विकासश् है। आधुनिक शिक्षा अक्सर केवल बौद्धिक विकास (प्फ) पर ध्यान देती है।

- भारतीय शिक्षा दर्शन में श्पंचकोशश् की अवधारणा हैः अन्नमय कोष (शरीर), प्राणमय कोष (सांस/ऊर्जा), मनोमय कोष (मन), विज्ञानमय कोष (बुद्धि), और आनंदमय कोष (आत्मा)।
- जब शिक्षा इन पांचों स्तरों पर काम करती है, तभी एक पूर्ण मानव का निर्माण होता है। यह अवधारणा आधुनिक शिक्षा की एकाकीपन की समस्या को दूर करती है।

(ङ) नैतिकता और मानवीय मूल्य (Ethics and Values)

भ्रष्टाचार, हिंसा और सामाजिक वैमनस्य का मूल कारण मूल्यों की कमी है।

- भारतीय साहित्य (रामायण, महाभारत, उपनिषद) कर्तव्य–बोध, सत्यनिष्ठा और सेवा का पाठ पढ़ाते हैं।
- श्निष्काम कर्म (फल की चिंता किए बिना कर्म करना) का सिद्धांत छात्रों को तनावमुक्त होकर कार्य करने की प्रेरणा देता है, जो आज के प्रतिस्पर्धी युग में अत्यंत आवश्यक है।

6. क्रियान्वयन में चुनौतियां (Challenges in Implementation)

यद्यपि IKS का समावेश अत्यंत आवश्यक है, लेकिन इसके क्रियान्वयन में कई व्यावहारिक चुनौतियां हैंः

1. प्रामाणिक शोध सामग्री का अभावः IKS पर उपलब्ध अधिकांश सामग्री या तो बहुत क्लिष्ट संस्कृत में है या फिर उसका सही अनुवाद उपलब्ध नहीं है। छात्रों के लिए सरल और वैज्ञानिक भाषा में पाठ्यपुस्तकें तैयार करना एक बड़ी चुनौती है।

2. प्रशिक्षित शिक्षकों की कमीः वर्तमान शिक्षक श्मैकाले पद्धतिश् से प्रशिक्षित हैं। उन्हें प्राचीन ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के बीच सेतु बनाने के लिए पुनः प्रशिक्षित (Re-skilling) करना होगा, जो एक समय लेने वाली प्रक्रिया है।

3. पूर्वाग्रह और भ्रांतियांः अकादमिक जगत के एक वर्ग में यह पूर्वाग्रह है कि भारतीय ज्ञान श्पिछड़ा या संप्रदायिक है। इस भ्रांति को तोडना और इसे श्तथ्य–आधारित (Evidence-based) रूप में प्रस्तुत करना आवश्यक है।

4. आधुनिकता के साथ समन्वयः चुनौती यह है कि हम छात्रों को अतीत में न ले जाएं, बल्कि अतीत के ज्ञान का उपयोग भविष्य निर्माण के लिए करें। संतुलन बनाए रखना कठिन कार्य है।

7. भविष्य की राह और सुझाव (Suggestions and Way Forward)

भारतीय ज्ञान परंपरा को NEP 2020 के माध्यम से सफल बनाने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जाने चाहिएः

1. **ब्रिज कोर्सेज** (Bridge Courses): आधुनिक विज्ञान और प्राचीन विज्ञान के बीच के अंतर को पाटने के लिए विशेष पाठ्यक्रम बनाए जाएं। जैसे– आयुर्वेद और आधुनिक पोषण विज्ञान, श्वास्तु और आधुनिक आर्किटेक्चर।

2. **डिजिटलीकरणः** प्राचीन पांडुलिपियों (Manuscripts) का डिजिटलीकरण किया जाए और उन पर आधारित शोध को बढ़ावा दिया जाए।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

3. **अनुभवात्मक शिक्षण** (Experiential Learning): छात्रों को केवल किताबें न पढ़ाई जाएं, बल्कि उन्हें पारंपरिक कारीगरों, वैद्यों और किसानों के पास ले जाकर प्रत्यक्ष ज्ञान दिया जाए।

4. **शोध केंद्रः** प्रत्येक विश्वविद्यालय में IKS के लिए एक समर्पित शोध केंद्र हो, जहाँ अंतर्विषयक (Interdisciplinary) शोध को बढ़ावा मिले।

5. **भाषा को बाधा न बनने देंः** यद्यपि संस्कृत महत्वपूर्ण है, लेकिन प्ज्ञै के ज्ञान को हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में अनूदित करके सुलभ बनाया जाना चाहिए।

निष्कर्ष (Conclusion)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश भारत की **'स्व'** (Self) की खोज है। यह केवल एक भावुक निर्णय नहीं, बल्कि एक सुविचारित वैज्ञानिक पहल है। इस शोध पत्र के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा आधुनिक विश्व की जटिल समस्याओं का सरल और स्थायी समाधान देने की क्षमता रखती है।

यह शिक्षा नीति छात्रों को श्जड़ों से जुड़े रहकर आसमान छूने; (Rooted yet Global) की प्रेरणा देती है। जब भारत का युवा पाणिनी के व्याकरण के साथ पाइथन कोडिंग सीखेगा, चरक संहिता के साथ आधुनिक सर्जरी पढ़ेगा, और कौटिल्य के अर्थशास्त्र के साथ आधुनिक प्रबंधन समझेगा, तब वह न केवल एक बेहतर पेशेवर बनेगा, बल्कि एक संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक भी बनेगा।

अतः भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता निर्विवाद है। आवश्यकता है इसे सही परिप्रेक्ष्य, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आधुनिक संदर्भ के साथ कक्षा–कक्ष (Classroom) तक पहुँचाने की। यदि इसे सही ढंग से लागू किया गया, तो यह भारत को पुनः विश्वगुरु या ग्लोबल नॉलेज हब के रूप में स्थापित करने में मील का पत्थर साबित होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली
2. कपूर, के., एण्ड सिंह, ए.के. (2005). Indian Knowledge Systems. D.K. Print world.
3. झा, जी.एन. (2018) Science and Technology in Ancient India.विज्ञान प्रसार.
4. राधाकृष्णन, एस, (1948). भारतीय दर्शन (भाग 1 और 2). राजपाल एंड संस.
5. NITI Aayog. (2021). National Education Policy 2020: Implementation Plan.

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Reflection on Indian Knowledge Tradition in the Curriculum of the National Education Policy, 2020

Dr Vivekanand Jha

Principal, Govt. College Rithora Kalan, Morena

Abstract- The National Education Policy (NEP) 2020 creates a significant occasion in the educational history of India, as it is capable of reconnecting the contemporary learning with the intellectual and cultural foundations of the subcontinent. This paper is going to reflect on how the policy reimagines the place of Indian Knowledge Systems (IKS) within the formal education and how it seeks to make this heritage relevant for the present and future generations. It also talks about the practical challenges that lie ahead. It emphasizes that the vision of the policy needs balanced and rigorous implementation. If this is done well, the education system can grow stronger. It can become ethically grounded. It can become culturally aware. It can encourage scientific curiosity. It can also help learners become socially responsible.

Keywords: Indian Knowledge Systems, NEP 2020, Curriculum Transformation, Indigenous Learning, Classical Languages, Holistic Pedagogy, Civilizational Heritage

Introduction

The release of the National Education Policy in 2020 indicates a paradigm shift in the educational imagination of India. For much of the postcolonial period, curricula and teaching practices kept on relying on the models shaped during the colonial era. Although these systems promoted certain forms of academic discipline, they often distanced learners from the intellectual legacies of their own civilization. NEP 2020 makes a significant attempt to correct this imbalance by explicitly recognizing the depth and diversity of Indian knowledge traditions and by proposing the ways and means to integrate them meaningfully into modern education. This renewed emphasis on the Indian Knowledge System is not a cultural ornamentation rather it is presented as a vital intellectual resource. The policy stresses that education must help the students to understand their civilizational context while preparing them to participate in global knowledge networks. In this sense, the integration of the Indian Knowledge System seeks to nurture the students who possess both analytical sharpness as well as cultural literacy. It also reflects a broader understanding that sustainable development, ethical decision-making, scientific curiosity, and social well-being grow when inherited wisdom and modern knowledge work together. This balanced approach shows that both traditional insights and contemporary ideas can strengthen one another, creating a more thoughtful and responsible society.

Indian Knowledge Tradition: Scope, Depth, and Civilizational Contribution

The Indian knowledge system and tradition is not just one school of thought, nor is it a closed collection of old ideas. It includes many perspectives and has continued to evolve over time. In fact, it is a cumulative intellectual tradition, shaped over centuries through inquiry, experimentation, and thoughtful reflection. The Upanishadic discussions on reality and

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

consciousness, the logical precision of the Nyaya school, the metaphysical analyses of Samkhya, and the ethical considerations in Dharmashastra texts reveal an astonishing range of philosophical explorations. These were never isolated exercises; they influenced social behaviour, art, governance, and education.

Alongside philosophical debates, India nurtured scientific and technical innovations that influenced diverse fields. Mathematicians like Aryabhata and Brahmagupta introduced important ideas that later became the foundation of arithmetic and algebra. The advanced ideas and contents about astronomy in the books like the Surya Siddhanta show that people clearly understood how the planets move or revolve. The medical knowledge in the Charaka Samhita and Sushruta Samhita shows a strong, practical understanding of the human body, surgery, and ways to prevent illness. The accuracy and precision of grammatical system by Panini continues to astonish the linguists as well as the computer scientists. Treatises on the architecture and town planning reveal the sensitivity to climate, materials, and social arrangements. These examples show that the Indian knowledge system combined deep thinking with practical use. Knowledge was not seen as separate or divided. Instead, it was understood as a connected and holistic effort aimed at helping the individuals to grow and improve the well-being of society as a whole. This holistic worldview makes IKS uniquely relevant in the present era, where issues like sustainability, mental health, ethical technology, and cultural identity increasingly dominate global discourse.

NEP 2020 and Its Vision for Reintegrating Indian Knowledge Systems

The NEP 2020 does not just suggest giving students a casual or occasional introduction to the traditional knowledge but it also recommends making a deeper and more permanent change in how the curriculum is designed. One of its central claims is that access to India's intellectual heritage requires proficiency in classical and regional languages. The policy, therefore, supports promoting Sanskrit and other classical languages—not for tradition's sake, but because these languages give direct access to the original texts that shaped India's ideas and knowledge systems

In addition, NEP 2020 encourages various educational institutions to embed core ideas from the Indian philosophical traditions into ethics and value-education programs. Ideas such as compassion (karuna), duty (dharma), truthful living (satya), and balanced understanding (samagra jnana) are highlighted as universal values that help the students grow into the responsible and ethical citizens.

The policy further recommends that schools and colleges include the traditional scientific achievements of India at the time of teaching the history of science. This does not aim to replace modern scientific knowledge; rather, it enriches it by offering students a wider and more inclusive understanding of how scientific ideas have evolved over time.

It also recommends that environmental education include traditional ecological practices, local farming methods, community-based techniques used in the water conservation, and

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

indigenous knowledge of biodiversity. These elements help students to understand and value the sustainable practices that have been an integral part of dominant cultural and environmental heritage India.

At the level of higher education, NEP 2020 envisions dedicated IKS centres, research fellowships, translation programs, digital documentation, and interdisciplinary academic pathways. It treats IKS as a vibrant area of study with potential contributions to the contemporary research in sustainability, public health, psychology, design, linguistics, and technological innovation.

Curricular Reorientation and the Role of Indigenous Knowledge

Under NEP 2020, the transformation in the curriculum follows a gradual, steady and structured approach. In the formative and the foundational years, children are introduced to the stories, idioms, practices, and local cultural knowledge in their mother tongue. This helps them to connect the learning with the familiar contexts. Since many indigenous practices are passed down orally within the families and communities, an early exposure allows the students to link the formal education with their lived experience. As students move into the middle and secondary school, the curriculum expands to include the classical literature, scientific concepts from the ancient texts, and the regional histories. These additions help and support the students to broaden their perspectives and become familiar with the rich diversity of Indian intellectual traditions. The policy also highlights the ancient centres of learning, such as Nalanda and Takshashila, to showcase the India's long-standing history of organized scholarly inquiry. In science and mathematics, presenting concepts within a historical framework helps the students to understand how ideas evolved across the civilizations. Recognizing the Indian contributions to the decimals, astronomy, metallurgy, and chemistry provides the learners with a fuller and more inclusive understanding of the development of scientific learning and knowledge. Similarly, the introduction of basic ideas from Ayurveda encourages learners to view health as a composite of body, mind, environment, and lifestyle.

At universities, the curricular landscape widens further. Students can pursue the specialized degrees or interdisciplinary programs that combine the traditional knowledge with the contemporary fields such as environmental studies, cognitive science, architecture, computational linguistics, or design. This creates a podium and platform where inherited knowledge can co-exist with the modern research, thus offering new directions for the innovation.

Pedagogical Possibilities and the Ethos of Indian Learning

Pedagogy forms the heart of educational reform, and NEP 2020 draws an inspiration from the dialogical spirit of Indian learning. Ancient traditions exclusively emphasized on the debate,

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

questioning, and collaborative exploration. Knowledge grew and spread more through conversation rather than its mere transmission. Modern education, as envisioned by NEP 2020, attempts to revive this interactive spirit by promoting the inquiry-based learning, peer discussion, and experiential assignments.

The *gurukula* tradition stressed that learning must engage the whole person—ethical, emotional, intellectual, and social. While residential schooling is not practical today, its underlying philosophy remains useful: students learn better when they observe the processes, participate in the community activities, and receive mentorship from the experienced individuals. Incorporating IKS also encourages an interdisciplinary teaching. For instance, aesthetic theories can deepen the understanding in the education of arts; classical metaphysics can support the discussions in psychology; indigenous agricultural practices can enrich the lessons in the environmental science; and traditional logic can enhance the computational thinking. These connections reflect the integrative approach that has long been characterized the Indian epistemology.

Challenges, Responsibilities, and the Road Ahead

The intention to integrate the IKS is ambitious, but its implementation requires more and more thoughtful planning. One challenge involves producing study material that is academically reliable. Traditional knowledge should be taught accurately, thus avoiding both blind glorification and dismissive scepticism. Developing the textbooks and digital resources, therefore, requires collaboration among the experts from the different fields. Teacher training is also vital and essential. The teachers and educators need to be familiar with the classical concepts, original texts, and interdisciplinary approaches. Without this understanding, the curriculum reforms may remain superficial. Institutions must invest in the research infrastructure, including the libraries with classical texts, digitized manuscripts, translation projects, and opportunities for fieldwork. A strong academic aura and environment is vital and prerequisite for supporting the rigorous scholarship. At the same time, traditional knowledge should be seen as dynamic, not static. Some practices remain relevant, while others ask for reinterpretation or empirical validation. The goal is not to replace the modern knowledge but to complement it with the diverse perspectives. If carried out with the intellectual rigor and openness, the vision of NEP 2020 can help the India to nurture a generation of learners who could respect tradition while embracing innovation.

Conclusion

The National Education Policy 2020 encourages a renewed interest and focus on the intellectual heritage of India, thus presenting the traditional knowledge systems as living sources of insight rather than merely historical relics. By integrating the Indian Knowledge Systems (IKS) into the curriculum, the policy aims to foster an education that honors the cultural heritage while

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

addressing the contemporary challenges. When students learn about the glorious achievements of India in mathematics, medicine, ecology, and literature, they gain and attain more than facts that is they develop a sense of historical continuity and cultural identity. At a time when societies across the world are reflecting on ethics, sustainability, and personal responsibility, the Indian knowledge traditions provide valuable frameworks that combine critical thinking, moral reflection, and environmental awareness. The thoughtful blending of ancient wisdom with the modern knowledge, as envisioned by NEP 2020, has the potential to cultivate citizens who are creative, responsible, and well-prepared for the future.

References

1. National Education Policy 2020. Ministry of Education, Government of India.
2. Radhakrishnan, S. *Indian Philosophy.* Oxford University Press, 2017.
3. Balasubramanian, R. *History of Indian Philosophy.* Oxford University Press, 2018.
4. Sharma, Arvind. *The Hindu Tradition: Readings in Oriental Thought.* Motilal Banarsidass, 2012.
5. Bose, D.M. *A Concise History of Science in India.* Indian National Science Academy, 2009.
6. Rao, S.K. "Indian Knowledge Systems and Education." *Journal of Indian Education*, NCERT, 2021.
7. Kapur, Deepti. "Holistic Education and NEP 2020: A Transformative Framework." *Economic and Political Weekly*, 2021.

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Relevance of Indian Knowledge System in Implementation of NEP-2020

Dr. Jagdish Mujalde

Assistant Professor of English

Government Girls College, Barwani (MP)

Email: jmujalde@gmail.com

Abstract- The National Education Policy (NEP) 2020 marks a transformational shift in India's educational landscape, emphasizing holistic learning, multidisciplinary approaches, and cultural rootedness. A central component of this policy is the revitalization and integration of the Indian Knowledge System (IKS)—a vast corpus of indigenous intellectual traditions, sciences, philosophies, languages, and cultural practices developed over thousands of years. This research paper examines the relevance of IKS in implementing NEP-2020 by analyzing its pedagogical, philosophical, cultural, and socio-economic contributions. Through a qualitative review of policy documents, scholarly literature, and conceptual frameworks, the study explores the potential of IKS to enrich Indian education, discusses challenges in its implementation, and proposes strategic recommendations. The findings suggest that IKS can play a transformative role in fostering holistic, values-based, contextually relevant, and future-ready education, provided that its integration is systematic, inclusive, and academically rigorous.

Keywors: National, Policy, Holistic, Multidisciplinary, Cultural, Research, Value-based, Inclusive etc.

1. Introduction

India possesses one of the world's oldest and most diverse bodies of knowledge, encompassing fields such as mathematics, astronomy, metallurgy, philosophy, governance, linguistics, traditional medicine, arts, ecology, and agriculture. Collectively termed the **Indian Knowledge System (IKS)**, this intellectual heritage reflects centuries of empirical observation, scientific inquiry, cultural evolution, and ethical deliberation.

The **National Education Policy 2020**, announced after more than three decades of policy reform, recognizes the need to root education in India's cultural context while remaining globally scompetitive. A significant innovation in NEP-2020 is its explicit focus on IKS as a foundational element for shaping curricula, pedagogy, and research in the 21st century.

The policy highlights IKS as essential for:

- Holistic and multidisciplinary education

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

- Development of critical thinking and creativity
- Inculcation of values and ethics
- Linguistic and cultural revitalization
- Promoting sustainability and community-based knowledge

Given this strong policy emphasis, understanding the role of IKS becomes essential for effective implementation. This paper investigates the conceptual, pedagogical, and practical relevance of IKS in achieving NEP-2020's objectives.

2. Objectives of the Study

1. To explain the concept and scope of the Indian Knowledge System.
2. To analyze provisions in NEP-2020 related to IKS.
3. To explore the relevance of IKS in transforming Indian education.
4. To identify challenges in integrating IKS into contemporary educational structures.
5. To propose recommendations for effective implementation of IKS under NEP-2020.

3. Literature Review

Existing literature on IKS emphasizes its depth, diversity, and significance in both historical and contemporary contexts. Scholars view IKS as an integrated system of knowledge linking theory and practice—ranging from the scientific achievements of Aryabhata and Sushruta to the philosophical insights of the Upanishads and Buddhist traditions.

Recent studies highlight several themes:

IKS as a foundation for holistic learning

Traditional Indian education focused on the cultivation of physical, mental, spiritual, and ethical capacities—similar to NEP's vision of holistic development.

Multidisciplinarity in ancient Indian traditions

Centres like *Takshshila* and *Nalanda* followed broad multidisciplinary curricula; this correlates with NEP's liberal-arts and flexible curriculum structure.

Importance of mother-tongue instruction

Ancient education heavily emphasized learning in regional languages and classical tongues like Sanskrit, Tamil, and Pali. NEP revives this emphasis through its multilingual approach.

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

Sustainability and indigenous knowledge

Tribal ecological knowledge, Ayurvedic medicine, natural farming, water management systems, and architectural practices highlight India's sustainability-oriented worldview.

Challenges in mainstreaming IKS

Scholars note that inadequate documentation, teacher shortage, regional disparities, and misconceptions about IKS hinder effective integration. The literature collectively supports NEP-2020's stance that IKS provides a robust intellectual and cultural framework for revitalizing Indian education.

4. Methodology

This study adopts a **qualitative, descriptive, and analytical research method**. The methodology includes:

- Review of NEP-2020 policy documents
- Review of secondary literature: research papers, books, and conceptual articles
- Analysis of curricular models incorporating IKS
- Conceptual assessment of relevance, challenges, and opportunities

This approach allows for a holistic understanding of the themes and dynamics surrounding IKS in modern education.

5. Understanding the Indian Knowledge System (IKS)

IKS is not limited to a single cultural, regional, or linguistic stream. It includes:

Scientific Traditions

- **Mathematics:** zero, decimal system, algebra, trigonometry
- **Astronomy:** planetary models, calendars, astronomical observations
- **Metallurgy:** rust-resistant iron, zinc extraction
- **Agricultural sciences:** organic farming, soil management, irrigation

Medicinal and Health Systems

- **Ayurveda**, Siddha, Unani, Yoga, Naturopathy

Philosophical and Ethical Frameworks

- Vedanta, Nyaya, Buddhism, Jainism, Charvaka, Tantra

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

- Ethics, logic, epistemology, metaphysics

Linguistic and Literary Heritage

- Classical languages (Sanskrit, Tamil, Pali, Prakrit)
- Regional languages and folk traditions
- Grammar, poetics, rhetoric

Arts, Aesthetics, and Culture

- Music, dance, drama, sculpture, architecture
- Natya Shastra, Vaastu Shastra

Social, Political, and Economic Thought

- Arthashastra, Dharmashastra, Buddhist governance models
- Community-based local governance and cooperatives

Indigenous and Tribal Knowledge Traditions

- Ecological knowledge
- Healing practices
- Handicrafts and artisanal skills

The richness and interdisciplinarity of IKS make it ideally aligned with NEP-2020's educational philosophy.

6. Provisions for IKS in NEP-2020

NEP-2020 integrates IKS into its core structure:

Curricular Integration

- IKS to be embedded across school and higher education curricula.
- Emphasis on classical Indian sciences, arts, and philosophical traditions.
- Inclusion of ancient mathematicians, scientists, and linguists in textbooks.

Language Policy

- Strong emphasis on mother-tongue/regional languages.
- Promotion of classical Indian languages and literature (Sanskrit, Tamil, Pali, etc.).

Research and Institutional Infrastructure

- Establishment of IKS-focused research centres.

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

- Grants for documentation and digitization of IKS resources.
- Encouraging interdisciplinary research involving IKS and modern science.

Holistic and Value-Based Education

- Integration of yoga, meditation, ethics, environmental awareness.
- Focus on "Jnan, Vijnana, and Jeevan-Darshan" (knowledge, science, worldview).

Vocational and Skill-Based Education

- Recognition of traditional artisans, crafts persons, tribal knowledge holders as educators.
- Promotion of local crafts and handloom traditions.

NEP-2020 thus provides a framework that appreciates the educational value of IKS.

7.Relevance of IKS in Implementation of NEP-2020

Reviving Holistic Education

IKS supports NEP's emphasis on developing intellectual, emotional, ethical, and physical dimensions of learners. Yoga, Ayurveda, and philosophical traditions encourage wellness, resilience, and self-awareness.

Fostering Multidisciplinary Learning

Ancient Indian education blended arts, sciences, philosophy, and technical skills—similar to NEP's vision for multidisciplinary universities and flexible curricula.

Enhancing Cultural Literacy and National Identity

IKS enhances cultural rootedness, instills pride in heritage, and strengthens national identity while maintaining global openness.

Promoting Scientific Temper and Innovation

Contrary to misconceptions, IKS includes rich scientific inquiry. Studying ancient scientific achievements encourages creativity, innovation, and contextual scientific thinking.

Supporting Sustainable Development

Traditional ecological knowledge aligns with modern sustainability goals. NEP's environmental focus benefits from indigenous agricultural and water management practices.

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

Advancing Linguistic Diversity

IKS reinforces the NEP's multilingual approach, enhancing cognitive development and preserving linguistic heritage.

Integrating Community Knowledge

IKS empowers local communities, providing livelihood skills based on crafts, arts, and indigenous technologies.

Making Education Contextually Relevant

Contextualized learning enhances student engagement, connects knowledge to real life, and reduces alienation caused by purely Western curricula.

8. Challenges in Implementing IKS Under NEP-2020

Lack of Trained Teachers

Insufficient teacher training programs in IKS disciplines hinder integration.

Limited Academic Resources

Many IKS texts are untranslated, undocumented, or not peer-reviewed for modern curricula.

Perception Barriers

Some sections of society view IKS as outdated or unscientific due to lack of awareness.

Institutional and Structural Gaps

Not all universities have IKS departments; research funding and infrastructure remain limited.

Risk of Over-Simplification

Superficial or tokenistic inclusion may undermine academic rigor.

Language Challenges

Teaching IKS in original languages requires specialized linguistic skills.

Balancing Tradition and Modernity

The challenge is to integrate IKS without compromising scientific methodology, rationality, or global competitiveness.

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

9. Strategies for Effective Integration of IKS

Teacher Education and Capacity Building

- Launch specialized B.Ed. and M.Ed. programs focusing on IKS.
- Train teachers in classical languages, traditional arts, and sciences.

Curriculum Development

- Develop age-appropriate, evidence-based IKS curricula.
- Ensure inclusion of both classical and regional indigenous knowledge.

Documentation and Digitalization

- Digitize manuscripts, oral traditions, and regional knowledge.
- Create open-access digital platforms for IKS learning.

Research and Collaboration

- Establish IKS research centres in universities.
- Promote interdisciplinary collaborations between modern scientists and traditional knowledge holders.

Community Engagement

- Recognize artisans, healers, farmers, and tribal experts as knowledge partners.
- Encourage experiential learning through field visits.

Promote Critical Thinking

- Encourage critical and comparative study of IKS and global knowledge systems.
- Avoid romanticization or ideological bias.

Institutional and Policy Support

- Provide funding, incentives, and accreditation support for IKS programs.
- Include IKS in national assessment and quality assurance frameworks.

10. Discussion

IKS, when integrated meaningfully, can enrich education in multiple dimensions. However, the success of NEP-2020's vision depends on **balanced, scientific, and inclusive approaches**. The challenge lies not in the relevance of IKS—which is unquestionable—but in the robustness of its implementation.

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

A pluralistic interpretation of IKS is essential. It must include:

- Vedic and classical traditions
- Buddhist, Jain, and tribal knowledge
- folk cultures and regional linguistic traditions
- women's knowledge traditions
- local ecological and sustainable practices

NEP-2020 provides an opportunity to democratize knowledge by bringing diverse voices and traditions into mainstream education.

If implemented systematically, IKS could help create a future-ready education system that is globally competent yet rooted in local culture, scientifically rigorous yet ethically grounded, and technologically advanced yet environmentally conscious.

11. Conclusion

The National Education Policy 2020 marks a watershed moment in India's educational transformation by recognizing the profound value of the Indian Knowledge System. IKS is relevant not only as a cultural inheritance but also as a dynamic, holistic, interdisciplinary, and ethically grounded knowledge base that can address contemporary challenges in education, sustainability, health, governance, and innovation.

Integrating IKS under NEP-2020 can help foster:

- holistic development
- critical and creative thinking
- cultural identity and diversity
- sustainable and community-driven knowledge
- linguistic enrichment
- multidisciplinary learning

However, successful implementation requires thoughtful curriculum design, teacher training, resource development, institutional support, and a commitment to academic rigor and inclusivity.

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

In conclusion, IKS is not merely relevant but essential for realizing the transformative vision of NEP-2020. When embraced with intellectual openness and scholarly integrity, it has the potential to make Indian education both culturally enriched and globally competitive.

References:-

1. National Education Policy 2020, Ministry of Education, Government of India.
2. Balasubramanian, R. (2019). *Indian Knowledge Systems: Past, Present, and Future.*
3. Rao, S. (2021). "Holistic Education and NEP-2020." *Journal of Indian Education*.
4. Sharma, M. (2020). "Relevance of Indigenous Knowledge in Modern Education." *International Journal of Social Sciences*.
5. Kapur, M. (2022). "Multidisciplinarity and NEP-2020: Lessons from Ancient India." *Educational Review Quarterly*.

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध संदर्भ

डॉ. मंशाराम बघेल

सहायक प्राध्यापक,

हिन्दी भगवान बिरसा मुण्डा

शासकीय महाविद्यालय, पाटी जिला बड़वानी (म.प्र.)

mansharambazhel1234@email.com

सारांश (Abstract)– भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की एकमात्र ऐसी जीवंत परंपरा है जो कम–से–कम चार सहस्राब्दियों से निरंतर प्रवाहमान है और जिसमें दर्शन, विज्ञान, चिकित्सा, भाषा–विज्ञान, कला, राज्य–व्यवस्था तथा पर्यावरण– चेतना एक साथ समाहित हैं। यह परंपरा कभी एकांगी या संप्रदाय विशेष तक सीमित नहीं रही बल्कि वेद–उपनिषद् से लेकर आधुनिक युग के श्री अरविंद, रामानुजन और कपिल कपूर तक यह सतत संवाद और समन्वय करती रही। प्रस्तुत शोध–पत्र इस परंपरा के ग्यारह प्रमुख संदर्भ – क्षेत्रों वैदिक वाङ्मय, षड्दर्शन, गणित – खगोल– विज्ञान, आयुर्वेद–.एवं रसशास्त्र, भाषा–विज्ञान, अर्थ राज्य नीति, कला–संगीत–स्थापत्य, पर्यावरण धर्म, तांत्रिक एवं लोक–ज्ञान परंपराएँ तथा आधुनिक पुनर्जागरण का प्रामाणिक और संतुलित विश्लेषण करता है तथा यह स्थापित करता है कि २१वीं सदी के सबसे जटिल प्रश्नों (जलवायु संकट, मानसिक स्वास्थ्य, कृत्रिम बुद्धिमत्ता की नैतिकता, सतत विकास) के समाधान में यह परंपरा आज भी जीवंत और उपयोगी है।

की – शब्द :– भारतीय ज्ञान परंपरा, वैदिक विज्ञान, षड्दर्शन, आयुर्वेद, पाणिनि, शून्य, पर्यावरण धर्म, समन्वयवाद, IKS

१. परिचय

भारत वह सभ्यता है जिसने ज्ञान को परमं धनम् और सर्वं खल्विदं ब्रह्म माना। यह परंपरा चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) के अंतर्गत जीवन के समस्त आयामों को समेटती है। विश्व की अन्य प्राचीन सभ्यताएँ (मेसोपोटामिया, मिस्र, यूनान) कालांतर में लुप्त या परिवर्तित हो गई, किंतु भारतीय ज्ञान परंपरा मौखिक से लिखित और लिखित से डिजिटल युग तक अक्षुण्ण रूप में जीवित है।

भारत को "विश्वगुरु" कहा जाता रहा है, इसका कारण केवल सैन्य या आर्थिक शक्ति नहीं, अपितु ज्ञान की वह अनुपम परंपरा है जो सहस्राब्दियों से अखंड रूप से प्रवाहित होती रही है। यह ज्ञान परंपरा मौखिक (श्रुति) और लिखित (स्मृति) दोनों रूपों में संरक्षित हुई है। यह परंपरा एकांगी न होकर बहुआयामी है; इसमें आध्यात्मिक और भौतिक, दार्शनिक और व्यावहारिक, व्यक्तिगत और सामाजिक, सभी आयाम समाहित हैं । भारतीय ज्ञान परंपरा की सबसे बड़ी विशेषता उसका समन्वयवादी दृष्टिकोण है– विरोधी दिखने वाले विचारों को भी वह एक उच्चतर सत्य में समाहित कर लेती है। एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति (ऋग्वेद १.१६४.४६) इसका मूल मंत्र है।

यह शोध पत्र इसकी विविधता और समन्वय शीलता को प्रमुख ग्यारह संदर्भों में प्रस्तुत करता है।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

२. वैदिक एवं वैदिकोत्तर वाङ्मय

ज्ञान का मूल स्रोत ऋग्वेद (लगभग १५०० – १२०० ई.पू.) विश्व का सबसे प्राचीन संकलित ग्रंथ है। इसके १०,५५२ मंत्रों में खगोल भौतिकी, चिकित्सा, समाज–विज्ञान के बीज हैं। नासदीय सूक्त (ऋग्वेद १०.१२९) ब्रह्मांडोत्पत्ति पर संशयवाद और क्वांटम अनिश्चितता से समानता रखता है। अथर्ववेद में वनस्पति–विज्ञान, मनोचिकित्सा और कीट नियंत्रण के प्रयोग ।

उपनिषदों (बृहदारण्यक, छांदोग्य, ऐतरेय, केन, ईश) ने अद्वैत, विशिष्टाद्वैत और द्वैत के दार्शनिक आधार दिए।

वेदांगों में शिक्षा (ध्वनिविज्ञान) व्याकरण (पाणिनि), ज्योतिष (लघव), निरुक्त (यास्क) और छंद ने ज्ञान को व्यवस्थित किया।

३. षड्दर्शनः भारतीय दर्शन के प्रमुख छः तंत्र

भारतीय दर्शन परंपरा अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी है। यहाँ ज्ञान को केवल बौद्धिक चिंतन न मानकर जीवन–दर्शन, आचरण और आत्म–विकास का मार्ग माना गया। हिंदू दर्शन में कई विचारधाराएँ हैं, परंतु मुख्य रूप से छह दर्शन महत्वपूर्ण हैं जिन्हें 'षड्दर्शन' कहा जाता है। ये दर्शन हैं—

1. सांख्य
2. योग
3. न्याय
4. वैशेषिक
5. पूर्व मीमांसा
6. उत्तर मीमांसा (वेदांत)

इन छडों दर्शनों का उद्देश्य सत्य की प्राप्ति और मोक्ष है, परंतु इन्हें प्राप्त करने के मार्ग अलग–अलग हैं। सभी दर्शनों की नींव वेदों पर आधारित है, इसलिए इन्हें 'आस्तिक दर्शन कहा जाता है।

1. सांख्य दर्शन

प्रवर्तक– कपिल मुनि

सांख्य भारतीय दर्शन का सबसे पुराना और विश्लेषणात्मक दर्शन है। यह द्वैतवादी है और संसार को दो तत्वों से बनता मानता है–

• पुरुष चेतन शुद्ध आत्मा

• प्रकृति : अचेतन, त्रिगुणात्मक (सत्व, रजस, तमस)

सृष्टि तब प्रारंभ होती है जब पुरुष प्रकृति के संपर्क में आता है।

मोक्ष तब मिलता है जब जीव यह समझ लेता है कि पुरुष और प्रकृति भिन्न हैं।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

सांख्य दर्शन ने तर्क, विश्लेषण और तत्वमीमांसा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

2. योग दर्शन

प्रवर्तक – पतंजलि

योग दर्शन सांख्य की ही व्यावहारिक शाखा है।

इसका उद्देश्य चित्तवृत्ति निरोध द्वारा आत्म–साक्षात्कार है।

योग का आधार अष्टांग योग है–

1. यम
2. नियम
3 आसन
4. प्राणायाम
5. प्रत्याहार
6. धारणा
7. ध्यान
8. समाधि

योग मानव की शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति का सर्वश्रेष्ठ मार्ग माना जाता है। यह ध्यान, साधना और अनुशासन पर आधारित है।

3. न्याय दर्शन

प्रवर्तक – गौतम

न्याय दर्शन का आधार तर्क, अनुमान और प्रमाण–विज्ञान है।

यह ज्ञान प्राप्ति के चार प्रमाण स्वीकार करता है–

- प्रत्यक्ष
- अनुमान
- उपमान
- शब्द

न्याय दर्शन संसार के सत्य को तर्कपूर्ण ढंग से समझने पर बल देता है। मिथ्या ज्ञान को दूर कर सत्य ज्ञान की प्राप्ति ही मोक्ष का आधार है।

यह भारतीय तर्कशास्त्र की सबसे महत्वपूर्ण परंपरा है।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

4. वैशेषिक दर्शन

प्रवर्तक– कणाद

यह दार्शनिक तंत्र पदार्थों का विश्लेषण करता है।

वैशेषिक दर्शन परमाणुवाद का समर्थक है।

संसार छड पदार्थों (दव्य) से बना है–

1. द्रव्य
2. गुण
3. कर्म
4. सामान्य
5. विशेष
6. समयाय

कणाद का परमाणुवाद आधुनिक विज्ञान से मिलता–जुलता है।

इस दर्शन में नैतिकता और मोक्ष का विषय भी वैज्ञानिक दृष्टि से समझाया गया है।

5. पूर्व मीमांसा

प्रवर्तक– जैमिनी

पूर्व मीमांसा को कर्ममीमांसा भी कहा जाता है।

इसका मुख्य उद्देश्य है–

वेदोक्त कर्मों और यज्ञों के माध्यम से धर्म, पुण्य और मोक्ष की प्राप्ति ।

मुख्य विशेषताएँ–

- वेदों की अपौरुषेयता
- कर्म प्रधान जीवन
- विधि–विधान, यश, अनुष्ठान
- स्वर्ग और कर्मफल

यह दर्शन मानता है कि सही कर्म करने से मानव जीवन शुद्ध होता है और आत्मा उच्चतर अवस्था में पहुँचती है।

6. उत्तर मीमांसा (वेदांत)

प्रवर्तक– बादरायण (ब्राह्मसूत्र)

वेदांत उपनिषदों की व्याख्या पर आधारित है।

यह ब्रह्म और जीव के संबंध की खोज करता है। वेदांत के तीन मुख्य रूप हैं–

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

1. अद्वैत वेदांत– शंकराचार्य

० ब्रह्म ही सत्य जगत मिथ्या

० आत्मा और परमात्मा एक

2. विशिष्टाद्वैत– रामानुज

० जीव और ब्रह्म अलग भी हैं, और जुड़े भी

3. द्वैत वेदांत मध्वाचार्य

० जीव और ब्रह्म भिन्न हैं

वेदांत भारतीय आध्यात्मिकता का सर्वोच्च दर्शन माना जाता है और मोक्ष को ब्रह्म ज्ञान पर आधारित करता है।

षड्दर्शन का सामूहिक महत्व

• सभी दर्शनों का लक्ष्य सत्य और मोक्ष है।

• सभी वेदों को प्रमाण मानते हैं, इसलिए 'आस्तिक दर्शन' कहलाते हैं।

भारतीय संस्कृति में तर्क, साधना, आचरण और आत्मज्ञान का समन्वय प्रस्तुत करते हैं।

ये दर्शाते हैं कि भारत में चिंतन की अनेक धाराएँ होने के बावजूद अंतिम लक्ष्य एक ही है।

४. गणित, खगोल एवं विज्ञानशून्य दशमलव प्रणाली और स्थान मान पद्धति

(ब्रह्मगुप्त, ६२८ ई.) आर्यभट (४७६ ई.) पृथ्वी का घूर्णन, गोलाकारता = ३.१४१६ भास्कराचार्य द्वितीय (१११४ ई.) – लीलावती, बीजगणित, गुरुत्वाकर्षण का संकेतकेरल गणित परंपरा (माधव १३४० – १४२५) – अनंत श्रेणी, साइन–कोसाइन श्रेणी (न्यूटन – लैनित्ज से २५० वर्ष पूर्व) वराहमिहिर – बृहत्संहिता में भूकंप – विज्ञान, जल–विज्ञान, मौसम पूर्वानुमानलौड – स्तंभ (३७५ ई.). यूटज इस्पात – प्राचीन धातु–विज्ञाएमपी

५. आयुर्वेद और रसशास्त्र

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की उन प्राचीनतम परंपराओं में से हैं जो जीवन को एक समग्र (Holistic) दृष्टि से देखती है। इस परंपरा में आयुर्वेद और रसशास्त्र का विशेष स्थान है। दोनों मिलकर भारतीय चिकित्सा विज्ञान की वैज्ञानिकता, गडराई और प्रकृति – सम्मति दृष्टि को स्पष्ट करते हैं।

1. भारतीय ज्ञान परंपरा में चिकित्सा विज्ञान की धारा

भारतीय ज्ञान परंपरा में जीवन, स्वास्थ्य और प्रकृति को एक–दूसरे का पूरक माना गया है। इसी कारण ज्ञान–विज्ञान की सभी शाखाएँ – दर्शन, योग, अध्यात्म, वनस्पति विज्ञान, भेषज विज्ञान – परस्पर जुड़ी हुई हैं।

आयुर्वेद और रसशास्त्र इस समग्र दृष्टि के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

2. मुख्य सिद्धांत

• पंचमहाभूत सिद्धांत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश)

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

• त्रिदोष सिद्धांत (वात, पित्त, कफ)

• सत्य– रजस्–तमस्

• प्रकृति–सम

2. आयुर्वेद भारतीय ज्ञान परंपरा का चिकित्सा विज्ञान:

आयुर्वेद = आयु (जीवन). वेद (ज्ञान)

यह मानव जीवन को स्वस्थ संतुलित और प्रकृति–सम्मत बनाने की विज्ञान– प्रधान प्रणाली है।

आयुर्वेद की प्रमुख विशेषताएँ

1. समग्रता (Holistic Health) :

शरीर–मन– आत्मा को एकत्रित रूप में देखना।

2. स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणम्

रोगों को रोकना ही मुख्य उद्देश्य ।

3. औषध + दिनचर्या + ऋतुचर्या + आहार का संयोजन ।

4. वनस्पतियों पर आधारित उच्च कोटि की औषधि – प्रणाली ।

5. चरक और सुश्रुत जैसे आचार्यों की अदभुत चिकित्सकीय उपलब्धियाँ ।

3. रसशास्त्र धातु खनिज आधारित चिकित्सा विज्ञान

रसशास्त्र भारतीय चिकित्सा विज्ञान की अत्यंत वैज्ञानिक और विशिष्ट शाखा है, जिसका उद्देश्य धातुओं, खनिजों और विषों को शोधन – मरण द्वारा औषधि–रूप में परिवर्तित करना है।

रसशास्त्र की प्रमुख विशेषताएँ

1. शोधन (Purification) और मरण (Incineration):

धातु /खनिजों को अशुद्धता दूर करके सूक्ष्म भस्म रूप में बदलना, ताकि ये शरीर में उपयोगी बन सकें।

2. कम मात्रा में अधिक प्रभाव (Nano–level medicine):

भस्म अत्यंत सूक्ष्म कणों में बदल जाती है, जिससे कम मात्रा में ही अधिक परिणाम मिलते हैं।

3. रसायन – चिकित्सा (Rejuvenation Therapy):

आयुष्य, बुद्धि, बल, ओज की वृद्धि ।

4. यूनिक वैज्ञानिक प्रक्रियाएँ:

पारद, अभ्रक, स्वर्ण, रजत, लौड आदि की भस्में जो आधुनिक नैनो मेडिसिन से मेल खाती हैं।

समग्र स्वास्थ्य विज्ञानचरक (आंतरिक चिकित्सा), सुश्रुत (शल्य), वाग्भट (संक्षेप) विश्व की पहली व्यवस्थित चिकित्सा प्रणाली।सुश्रुत संहिता में १२०० वर्ष पहले प्लास्टिक सर्जरी, मोतियाबिंद ऑपरेशन, फ्रैक्चर उपचारचरक में ओजस

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

(इम्यूनिटी), आनुवंशिकी, मनोदैहिक रोग महामारी विज्ञानरसशास्त्र (रसरत्नसमुच्चय रसार्णव) पारा–संस्कार, धातु–रूपांतरण यूरोपीय रसायनशास्त्र को प्रभावित

आज अश्वगंधा, गिलोय, तुलसी पर हजारों पेटेंट और क्लिनिकल ट्रायल चल रहे हैं।

६. भाषा विज्ञान और कम्प्यूटेशनल आधार

पाणिनि का अष्टाध्यायी (लगभग ५०० ई.पू.) विश्व का पहला फॉर्मल जनरेटिव ग्रामर है । ३६५६ सूत्रों में पूर्ण रूप से असंदिग्ध (unambiguou) भाषा वर्णनबैकस नॉर फॉर्म (१९५६) और आधुनिक प्रोग्रामिंग भाषाओं का मूल यही है NASA वैज्ञानिक रिक ब्रिग्स (१९८५) ने शोध पत्र में संस्कृत को AI के लिए सर्वाधिक उपयुक्त बताया भर्तृहरि का द्यावयपदीय भाषा और चेतना का दर्शन

७. अर्थशास्त्र, राज्यशास्त्र और नीतिः

कौटिल्य का अर्थशास्त्र (चतुर्थ शताब्दी ई. पू.) विश्व का पहला पूर्ण अर्थ राजनीति ग्रंथसप्तांग राज्य सिद्धांत, कर प्रणाली, मुद्रा – नीति, गुप्तचर–तंत्र, पर्यावरण संरक्षण नियमशुक्रनीति कामन्दक, तिरुक्कुरल, पंचतंत्र नैतिक और व्यावहारिक नीति

आज भी IMF World Bank के कई मॉडल कौटिल्य के मंडल सिद्धांत और राजकोष प्रबंधन से प्रेरित हैं।

८. कला, संगीत, नाट्य और स्थापत्य

भरतमुनि का नाट्यशास्त्र रस–सिद्धांत, ८४०० श्लोक थिएटर का विश्व कोश शार्ङ्गदेव का संगीतरत्नाकर – २२ श्रुतियाँ, राग–रागिनी प्रणालीवास्तु और शिल्पशास्त्र – फ्रैक्टल ज्यामिति, गोल्डन रेशियो (कोणार्क, खजुराडो, तंजावुर बृहदीश्वर) अजंता एलोरा डम्पी ध्वनिक इंजीनियरी और प्रकाश–प्रकीर्णन तकनीक

९. पर्यावरण–धर्म और लोक–इ क– ज्ञान परंपराएँ

पृथ्वी सूक्त (अथर्ववेद १२.१) वृक्ष – पूजा, नदी–आराधना बिश्नोई (१४५१, जांभोजी) –३६३ लोगों की बलि देकर खेजड़ी बचाई तमिलनाडु की एरि–प्रणाली, राजस्थान के जोड़, कर्नाटक के कट्टे जल–संरक्षण की प्राचीन तकनीक अग्निहोत्र और यज्ञ – वायु शुद्धिकरण के वैज्ञानिक प्रयोग (NBRI लखनऊ द्वारा प्रमाणित)

१०. आधुनिक पुनर्जागरण और वर्तमान

भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge Systems IKS) विश्व की सबसे प्राचीन, समृद्ध और बहुआयामी ज्ञान–संरचनाओं में से एक है। आधुनिक काल में जब भारत उपनिवेशवाद, सांस्कृतिक डीनता और पाश्चात्य वर्चस्व की चुनौतियों से जूझ रहा था, तब एक नए चेतना युग की शुरुआत हुई जिसे भारतीय आधुनिक पुनर्जागरण कहा जाता है। यह पुनर्जागरण केवल राजनीतिक या सामाजिक जागरण नहीं था, बल्कि यह भारतीय आत्मा, ज्ञान, दर्शन, संस्कृति और वैज्ञानिक विरासत के पुनरुद्धार का व्यापक आंदोलन था। वर्तमान समय में भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनरुत्थान उसी पुनर्जागरण की निरंतरता है।

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

११. भारतीय आधुनिक पुनर्जागरण स्वरूप और प्रेरक तत्व

(1) उपनिवेशवाद का चुनौतीपूर्ण संदर्भ

19वीं शताब्दी में अंग्रेजी शिक्षा नीति ने भारतीय ज्ञान पर प्रश्नचिह्न लगाए। पाश्चात्य ज्ञान को एकमात्र 'वैज्ञानिक' और भारतीय परंपरा को अवैज्ञानिक बताने की मानसिकता बढ़ी।

इसी दमनात्मक बौद्धिक वातावरण से पुनर्जागरण का उदय हुआ ।

(2) पुनर्जागरण के प्रमुख स्तंभ

भारतीय पुनर्जागरण के निर्माण में कई महान विचारकों का योगदान रहा :

• राजा राममोहन राय– वेदांत, तर्क और सामाजिक सुधार का संगम

• दयानंद सरस्वती– **वेदों की पुनर्प्रतिष्ठा**

• विवेकानंद– वेदांत का वैश्विक प्रसार, आधुनिक विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय

• श्री अरविंद– समग्र योग और राष्ट्रीय संस्कृति

• महात्मा गांधी– सत्य, अहिंसा, स्वावलंबन और ग्राम्य– भारतीय ज्ञान

• रवीन्द्रनाथ टैगोर भारतीय कला–ज्ञान, संगीत, प्रकृतिनिष्ठ शिक्षा

(3) पुनर्जागरण का मुख्य उद्देश्य

• भारत की सांस्कृतिक आत्मा का पुनर्जागरण

• भारतीय ज्ञान परंपरा को वैज्ञानिक और आधुनिक रूप में प्रस्तुत करना

• चरित्र, नैतिकता, स्वावलंबन और आत्मबोध का विकास

• शिक्षा को भारतीय मूल्यों के आधार पर पुनर्परिभाषित करना

2. भारतीय ज्ञान परंपरा की पुनर्प्रतिष्ठा पुनर्जागरण में योगदान

(1) भाषा और साहित्य पुनरुद्धार

संस्कृत, हिंदी, बंगला, तमिल आदि भाषाओं में नए साहित्य का विकास हुआ। भारतीय काव्य, छंद, व्याकरण और शास्त्रों पर पुनर्खोज शुरू हुई।

(2) भारतीय विज्ञान और गणित की पुनर्खोज

वैदिक गणित, ज्योतिष, खगोल, धातु–विज्ञान और चिकित्सा (आयुर्वेद) पर नए शोध सामने आए।

(3) अध्यात्म एवं मनोविज्ञान में नवीन व्याख्याएँ

विवेकानंद ने योग को वैज्ञानिक आधार पर स्थापित किया ।

श्री अरविंद ने चेतना विज्ञान को नए प्रकाश में देखा।

(4) शिक्षा – शास्त्र में भारतीय दृष्टि

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

गुरुकुल परंपरा, अनुभवात्मक शिक्षा, कला–आधारित सीखने का प्रवेश ।

महात्मा गांधी और टैगोर ने शिक्षा को भारतीयता से जोड़ा।

3. वर्तमान काल भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनरुत्थान

21वीं सदी से यह पुनर्जागरण एक नए स्वरूप में प्रकट हुआ है। इसके प्रमुख स्तंभ–

(1) राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020)

• IKS को पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाया गया

• योग, आयुर्वेद, खगोल, भारतीय गणित, पर्यावरण–ज्ञान, भाषाशास्त्र आदि को विशेष स्थान

• मातृभाषा आधारित शिक्षा पर जोर

• नैतिक शिक्षा, कला, संगीत, ध्यान और भारतीय दर्शन का समावेश

(2) IKS सेल (AICTE) और IITs में IKS केंद्र

IIT खड़गपुर, गांधीनगर, मण्डी में IKS आधारित पाठ्यक्रम, शोध परियोजनाएँ व प्रमाणन कार्यक्रम चल रहे वैदिक वास्तु, जल–प्रणालियाँ, पंचांग, आयुर्वेद जीनोमिक्स आदि पर अग्रणी शोध ।

(3) डिजिटल भारत और IKS का प्रसार

• संस्कृत NLP

• भारतीय ग्रंथों का डिजिटलीकरण

• ऑनलाइन शोध–पत्र, MOOCs और IKS आधारित कोर्स

(4) वैश्विक स्तर पर योग, आयुर्वेद और भारतीय संगीत का प्रसार

संयुक्त राष्ट्र द्वारा 21 जून को "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया जाना इस पुनर्जागरण की वैश्विक स्वीकृति है।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा कभी संप्रदाय या भूगोल तक सीमित नहीं रही। यह एक सद् विप्रा बहुधा वदन्ति और "वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से संचालित है। आज जब विश्व जलवायु संकट, मानसिक स्वास्थ्य और नैतिकता के सबसे बड़े संकट से गुजर रहा है, तब यह परंपरा केवल भारत की नहीं, अपितु समूची मानवता की साझी धरोहर है। इसे संग्रहालयों में नहीं, बल्कि प्रयोगशालाओं, विश्वविद्यालयों और नीति–कक्षों में जीवंत करना होगा।

भारतीय ज्ञान परंपरा कोई मृत संग्रहालय की वस्तु नहीं अपितु जीवंत नदी है जो आज भी मानवता को दिशा दे सकती है। यह विज्ञान और आध्यात्म, भौतिक और परा– भौतिक व्यक्तिगत और सामाजिक के बीच सेतु है। २१वीं सदी के संकट मानसिक स्वास्थ्य, पर्यावरण विनाश, नैतिक पतन के समाधान इस परंपरा में पहले से मौजूद हैं। आवश्यकता केवल उन्हें पुनः पढ़ने, पुनर्व्याख्या करने और वैश्विक संदर्भ में प्रस्तुत करने की है । यतोऽभ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः' –

E-ISSN No: 2456-6713, Print ISSN No: 3048-6459, Impact Factor: 5.924
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

जो अभ्युदय (भौतिक प्रगति) और निःश्रेयस (आध्यात्मिक मुक्ति) दोनों प्रदान करे, वही सच्चा धर्म और सच्चा ज्ञान है। भारतीय ज्ञान परंपरा इसी सिद्धांत पर आधारित है।

संदर्भ ग्रंथ

1. Rigveda Samhita (4 खंड).
2. Max Miller & Sayan अष्टाध्यायी – पाणिनि (वासुदेव शर्मा पाणिनि संस्करण)
3. आर्यभटीयम् ब्रह्मस्फुटसिद्धांत, लीलावती
4. चरक संहिता, सुश्रुत संहिता (प्रियव्रत शर्मा)
5. अर्थशास्त्र कौटिल्य (आर. शमाशास्त्री)
6. नाट्यशास्त्र – भरतमुनि (आधा रंगाचार्य अनुवाद)
7. Indian Knowledge Systems (2 vols.) - Kapil Kapoor & Avadhesh Kumar Singh The Tao of Physics - Fritjof Capra.Sanskrit as a Language for Computational Linguistics Rick Briggs (NASA. 1985)
8. NEP 2020 & IKS Handbook - Ministry of Education, Govt- of India

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास
नई दिल्ली
राष्ट्रीय कार्यशाला

४ दिसम्बर, २०२५ विक्रम संवत २०८२, मार्गशीर्ष, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परम्परा का चिन्तन
कार्यशाला बड़वानी

राज एक्सप्रेस

भौतिक और आध्यात्मिक समानांतर विकास से ही भारत विश्व गुरु बनेगा : डॉ. कोठारी

शिक्षा नीति एवं भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्रित राष्ट्रीय कार्यशाला संपन्न

भौतिक और आध्यात्मिक समानांतर विकास से ही भारत बनेगा विश्व गुरु

भौतिक और आध्यात्मिक समानांतर विकास से ही विश्व गुरु बन सकेगा भारत : डॉ. कोठारी

दैनिक भास्कर बड़वानी भास्कर 05-12-2025

आर्थिक विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण नैतिक मूल्य, सामाजिक समरसता जरूरी

पत्रिका

शिक्षा देश के विकास की नींव

राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्रित राष्ट्रीय कार्यशाला संपन्न

भौतिक और आध्यात्मिक समानांतर विकास से ही भारत विश्व गुरु बनेगा : डॉ. कोठारी

विशेषज्ञों और शिक्षाविदों ने रखे विचार

शिक्षा गुणवत्ता सुधार पर कलेक्टर का जोर

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास भारतीय शिक्षा के संरक्षण संवर्धन हेतु समर्पित है। २ जुलाई, २००४ में शिक्षा बचाओ आंदोलन प्रारंभ हुआ था जो भारतीय शिक्षा के पाठ्यक्रमों में व्याप्त विकृतियों, विसंगतियों और विद्रूपताओ के विरुद्ध आंदोलन था। इसके परिणाम स्वरुप पहली बार शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यक्रम देश व्यापी विमर्श का केंद्र बिंदु बना। शिक्षा एक सतत संस्कारित करने वाली प्रक्रिया है और इसमें आधारभूत बदलाव करना केवल आंदोलन से संभव नहीं है। इसीको दृष्टिगत रखते हुए २४ मई, २००७ को नियमित स्वरूप में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास का गठन किया गया। न्यास कालक्ष्य देश की शिक्षा को एकन या विकल्प प्रदान करते हुए, भारत की शिक्षा व्यवस्था को भारतीय संस्कृति, प्रकृति एवं प्रगति के अनुरूप बनाना है। आरंभ से ही न्यास चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास तथा मातृभाषा में शिक्षा को लेकर सतत क्रियाशील एवं प्रतिबद्ध रहा। वर्तमान में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास १० विषयों, आयामों, कार्य विभागों का महत्वपूर्ण समसामयिक अभियान के साथ शिक्षण में भारतीयता की पुनर्स्थापना हेतु प्रयासरत है।

आयोजक

डॉ. वीणासत्य, प्राचार्य, प्रधानमंत्री उत्कृष्ट महाविद्यालय बडवानी
डॉ. कविता भदौरिया प्राचार्य, शा. कन्या महाविद्यालय, बडवानी
डॉ. प्रमोद पंडित प्राचार्य, शा. आदर्श महाविद्यालय, बडवानी
श्री आयुष पाटीदार संचालक, योगेश्वर महाविद्यालय पिपलाज
श्री अवधेश जी दवे संचालक, मधुबन महाविद्यालय वडवानी
समस्त संचालक अशासकीय विद्यालय जिला बडवानी